ISSN : 2582-1342

भोजपुरी साहित्य सरिता

भोजपुरी साहित्य सरिता
सहित्यांगन

अप्रैल 2026 / वर्ष 11 अंक 1

M.: 9999379393
9999614657
0120-4295518
CNS
Network Services
CompuNet Solution
COMPUTER MAINTENANCE
AMC
DOORSTEP SUPPORT
DESKTOP / LAPTOP
COMPUTER PERIPHERALS
PRINTER
TONER RIFLING
GF-38, COMPUTER MARKET (CENTRAL MARKET)
NEAR OLD BUS STAND GHAZIABAD - 201001

S.R Group
Shri Ram
Associates
बुकिंग मात्र
11000 में
पक्की रजि० दाखिल खारिज के साथ
K.P Dwivedi (बनारस वाले)
+91-9871614007, 9871668559
FREE HOLD PLOTS
FREEHOLD PLOTS
4.9
लाख से शुरू
2 BHK VILLA
16.99
लाख से शुरू
VILLAS
FARM HOUSE
बैंक लोन सुविधा
Location: NH-24, NH-91, EASTERN PERIPHERAL, NOIDA EXTN.
Head Office : E-1, Panchsheel Colony,
Near Shiv Mandir & Dena Bank, Opp. Tata Yard
G.T Road, Lal Kuan, Nh-91, G.B.Nagar (U.P)

CompuNet Solution
CNS
Network Services
Service
AMC
Email: support@compunetsolution.in
web: www.compunetsolution.in

भोजपुरी साहित्य सरिता

संरक्षक

रामप्रकाश मिश्रा (उपाध्यक्ष, महाराष्ट्र प्रदेश भाजपा/उत्तर भारतीय मोर्चा), अकोला
विनोद यादव, गाजियाबाद

प्रकाशक आ संपादक

जे. पी. द्विवेदी
(गाजियाबाद)

कार्यकारी संपादक

डॉ. सुमन सिंह
(वाराणसी)

साहित्य सम्पादक

केशव मोहन पाण्डेय (दिल्ली)

सहायक सम्पादक

डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी)
सुनील सिन्हा (गाजियाबाद)
डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)
सरोज त्यागी (गाजियाबाद)
प्रियंका पाण्डेय (लखनऊ)

सलाहकार सम्पादक

मोहन द्विवेदी (गाजियाबाद)
सौरभ पाण्डेय,नैनी, प्रयागराज (उ0प्र0)
दिनेश पाण्डेय, पटना
डॉ जयंत शुक्ला, इंदौर (म0प्र0)

तकनीकी एडिटिंग-कम्पोजिंग

सोनू प्रजापति (गाजियाबाद)

छायाचित्र (कवर पेज)सहयोग

केशव मोहन पाण्डेय –**नई दिल्ली**

प्रतिनिधि

आलोक कुमार तिवारी (कुशीनगर)
डॉ. हरेश्वर राय (सतना)
अशोक कुमार तिवारी (बलिया)
राणा अवधूत कुमार (उत्तर बिहार)

प्रकाशन : सर्व भाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली

: आजीवन सदस्य गण :

बुद्धेश पाण्डेय (गाजियाबाद), जलज कुमार अनुपम (बेतिया), अंकुश्री (राँची), सुजीत तिवारी (गाजियाबाद), कृष्ण कुमार (आरा), डॉ. ऋचा सिंह (वाराणसी), सरिता सिंह (जौनपुर), कनक किशोर (राँची),
डॉ. हरेश्वर राय (सतना),सरोज त्यागी (गाजियाबाद), गीता चौबे गूँज (राँची),डॉ लाला आशुतोष कुमार शरण , पटना, डॉ. रजनी रंजन (झारखंड)

♦ कूल्हि पद अवैतनिक बाऽ ♦♦ स्वामित्व, प्रकाशक जे पी द्विवेदी के ओरी से ♦

HOUSE NO. – 15 A , MANSAROVAR SHAHPUR BAMHETA , LALKUAN ,GHAZIABAD (U.P.) - 201002
PH: 9999614657, Email : editor@bhojpurisahityasarita.com, bhojpurissarita@gmail.com
Website: http://www.bhojpurisahityasarita.com

नोट : पत्रिका में छपल कवनो सामग्री खातिर संपादक–मंडल उत्तरदायी नइखे। सगरो विवाद के निपटारा गाजियाबाद के सक्षम अदालतन अउरी फोरमन में करल जाई।

अनुक्रम

संपादकीय

चइता के साध मरि गइलें हो रामा- जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /5

धरोहर

ए बबुआ आज रहि जा हमरे गाँव- रामजियावन दास 'बावला'/6

आलेख/शोध लेख/निबंध

नव संवत्सर 2083 आ वासंतिक नवरातर
महापरब होवेला खास- पं. अपूर्व नारायण तिवारी 'बनारसी बाबू'/14-16
भोजपुरी मान्यता : केकरा पर करीं सिंगार
पिया मोर आन्हर- शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'/17-18
भाषा प्रवीन आ समय के नब्ज प नजर
राखे वाला रचनाकार : जितेंद्र कुमार- कनक किशोर / 25-26
1857 के क्रांति के 80 साल के जवान योद्धा-
मनोज भावुक/37-38
भोजपुरी: संवेदना, संघर्ष अउर समता के भाषा- डॉ संतोष पटेल/44-45

कहानी/लघुकथा / रम्या रचना

अधूरा पुल अउर अनमोल सनेस- अभियंता सौरभ कुमार /9-10
एगो रहलन कवि जी – डॉ रजनी रंजन /11-12
फितूर-राम यश अविकल/19-24
खोंइचा- सविता गुप्ता/26
जुठ परयोग-राम प्रसाद साह /27
पूजा घर – मनोकामना सिंह/27
गंगतीर के पीर – उमेश कुमार राय/42-43
जीवन साथी-राम प्रसाद साह/43

कविता/गीत/गजल

विरह के पुल- अभियंता सौरभ कुमार /10
दू गो कविता – जयशंकर प्रसाद द्विवेदी/13
तीन लोक क मालिक- धीरेंद्र पांचाल /28
ठीक नइखे – मदन मोहन पाण्डेय /28
चइता-श्याम कुँवर भारती /29
मरद-उदय शंकर प्रसाद /29
सिलेन्डर होय गइलै खाली- लाल बहादुर चौरसिया 'लाल'/30
राष्ट्रवाद बबुआ धीरे-धीरे आइल –उमेश कुमार पाठक 'रवि'/30
नेह के पाती –महेंद्र तिवारी /31

कविता / गीत / गजल

भर कोठी धान- रंजन प्रकाश/31
दू गो कविता-लाल मोहम्मद 'लाल'/32
दू गो कविता- गणेश नाथ तिवारी 'विनायक'/36
दू गो गीत –डॉ राम नारायण तिवारी
उर्फ 'भइया भदवरिया'/39-40
गजल-अजय साहनी /40
रहे बनल भोजपुरी- दीपक तिवारी /41
टके सेर भाजी टके सेर खाझा-उमेश कुमार राय/41
खुमारी-दिनेश पाण्डेय/45

संस्मरण

एगो रहे मोहल्ला- बिम्मी कुँवर सिंह/7-8
होली..... अब हो ली –मनीष चौरसिया/34-35

एकाँकी

तिसर आँख के इंसाफ-विद्या शंकर विद्यार्थी /33

बेगर लाग लपेट के

तेल के खेल-जयशंकर प्रसाद द्विवेदी /46

रचना आमंत्रित
भोजपुरी साहित्य सरिता
भोजपुरी साहित्य सरिता सहित्यांगन

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

चइता के साध मरि गइलें हो रामा

हिन्दू कलेंडर का हिसाब से एह महिना के चैत महिना कहल जाला आ ई हिन्दू नव वर्ष के पहिल महीना ह। अपना भोजपुरिया संस्कृति में होली का बाद आवे वाला एह महीना में चैती/चइता गावे के चलन रहल बा। 'चैत महीना के मधुमास कहल जाला। त मधुमास में होखे वाला सगरे श्रिंगार, वियोग, विरह, मधुरता आ कोमलता एह चइता गीतन के परान ह। लोकगीतन के अउर कवनो विधा में अतना विविधता कमें भेंटाले'। ई बाति अब किताब भा पत्रिका में छपे वाली बाति बन के रह गइल बा। हमरा कबों-कबों इहो लागेला कि माटी के साहित्यकारो लोग अब ई बतिया भुला चुकल बा भा भुलवावे के क्रम में बा। सहर त सहरे बा, अब गउवों सहरे लेखा हो गइल बा। उहों अब एह गीतन के लेके चेतना के अभाव लउके लागल बा। भोजपुरी साहित्य सरिता के एह अंक में हमरा कवनो रचनाकारन के चैती/चइता गीत भा एह पर कवनो आलेख ना भेंटल। मन ह, कसक त उठबे करी। फेर एक बेर ई बाति इयादो करावल जरूरी लागल ह।

एह विधा में विरले कवनो भोजपुरिया रचनाकार होखिहें जे ढेर थोर ना लिखले होखे, बाक़िर ओहके लेके ललक वाली बाति नइखे रह गइल। फेर अइसना में भोर परल कवनो बड़ बाति नइखे। बाक़िर साँच त ई बा कि 'आजु चइता के फ़लक ढेर लमहर हो चुकल बा। राम, कृष्ण, प्रेम, बिरह, उत्सव, हुलास, खेती, किसानी से आगु बढ़त चइता आम मनई के पीर से लेके राजनीति के तीर तक चला रहल बा।त कहीं मतदान करे खातिर लोगन के जगा रहल बा। एह घरी त ढेर अलग अलग प्रयोगो हो रहल बा। अइसने प्रयोग नीचे देखल जा सकेला-

"कुरसी के महूरत न भेंटइलें हो रामा,
करिखा पोतइलें।
तब नाही बुझनी माई मोर बतिया
कुरसी पठवनी दोसरा के सेतिहा
मोर भाग आगि जरी गइलें हो रामा,
करिखा पोतइलें।"

- (जयशंकर प्रसाद द्विवेदी)

सभेले सुखद बाति ई बाकि रउरा सभे के नेह-छोह आ सहजोग का चलते भोजपुरी साहित्य सरिता पत्रिका इग्यारहवें बरिस में पहुँच गइल। ई अंक इग्यारहवें बरिस के पहिल अंक बने जा रहल बा। आगहूँ इहे नेह-छोह आ सरोकार सभे के बनल रहे, ई कामना मन में जोगवले भोजपुरी साहित्य सरिता सम्पादन टीम भोजपुरी साहित्य जगत आ समाज के हिन्दू नव वर्ष के शुभकामना भेज रहल बा। चलत-चलत एगो चइता के रस में डूबीं सभे-

बिरह के नाद सुनावे हो रामा
चइत चितचोरवा।

कोइली के बोलिया करत ठिठोलिया
सून लागे अँगना आ सून महलिया
ननदी क मुसुकी रिगावे हो रामा,
चइत चितचोरवा।

सुधिया के खोरिया तातल दुपहरिया
हियरा जरावेले टह टह अँजोरिया
ई बाति मनवा न भावे हो रामा,
चइत चितचोरवा।

पपिहा क पिऊ पिऊ लगेला सँसतिया
जिनगी जियान होत लागे न जुगतिया
बयरिया झुरकि दुलरावे हो रामा,
चइत चितचोरवा।

- (जयशंकर प्रसाद द्विवेदी)

रउरा सभे के आपन--

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी
संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

ए बबुआ आज रहि हमरे गाँव

कउने नरेसवा क देसवा उजरि गइलै, केकरे दुवरिया न छाँव।
ए बबुआ आज रहि हमरे गाँव।

सेवा में चूकब न साधन जुटाइबै
आयसु जवन होई जहवाँ क जइबै
रचिको न करिहा अंदेसवा कलेसवा क देखा देखाइ देइ ठाँव।

केकर करेजवा बजर के सँवारल
कवाने अहेरिया क अइला तूँ मारल
जउने नगरिया क हउवा अँजोरिया हमरा से कहि देता नाँव।

जियरा दरकि जाला सुनि के अनीती
चौदह बरिस कइसे बनवाँ में बीती
हमहन के अर्जी पर मर्जी बताय दा मत सोचा दाहिन बाँव।

अमिरित सरिस बोली जियरा जुड़ावा
मड़ई गँवारन क पावन बनावा
सब बावला बाटै सेवा में तोहरे रुक जा थकल होई पाँव।
ए बबुआ आज रहि हमरे गाँव।

■■

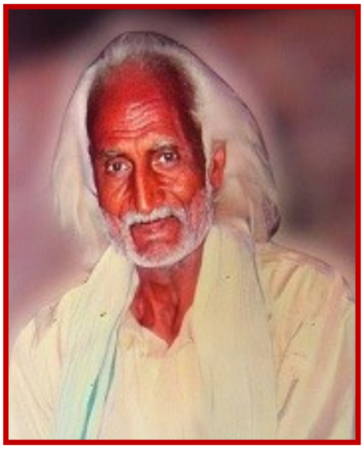

रामजियावान दास 'बावला'

जन्म—1 जून 1922
मृत्यु—1 मई 2012

प्रकाशित पुस्तक -

- गीतलोक
- गीत मंजरी

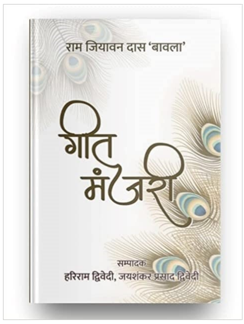

❍ भीषमपुर , चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

एगो रहे मोहल्ला

बिम्मी कुंवर सिंह

अस्सी के दसक के इ बात ह। बिजलीपुर नाम के एगो मोहल्ला रहें...
जाड़ा होखे भा गरमी, बूनी पानी के दिन होखे भा जेठ के ताप, बिहाने पाँच–साढ़े पाँच बजते ना बजते मोहल्ला जागि उठत रहे।

केहू दूध लेवे निकल जाएं, त केहू अखबार के इंतज़ार में दुआर पर टहरत रहे, केहू आपन स्कूटर-साइकिल धोवत रहे त केहू झाड़ू लगा के आँगन-गलियन के बहारत रहे।
पूरा मोहल्ला जइसे चलत-फिरत बाइसकोप रहे। चहल-पहल से भरल।

एगो जाड़ा के बिहान, करीब नौ बजे के टाइम रहे, हाथ में झाड़ू लिहले डेज़ी के मम्मी के तीत, कड़क आवाज गली में गूंज उठल!!

“आहि रे भगवान! इ कइसन पड़ोसी मिल गइल बा हमरा! रोज भिनसहरे इनकर कुकुर हमरा दुआर पर लैट्रीन क जाला। नरक हो गइल बा हमार जिनगी !”
बोलते-बोलते ऊ आवाज अउरी तेज क देत रहली, ताकि जाए-आवे वाला हर आदमी सुन ले।

“देखीं सभे! हई देखी त, का रोजे हम ही इनकर कुकुर के गंदगी साफ करब?”
आ नजर तिरछा करके ऊ सामने वाला बालकनी के तरफ जरूर एक बेर ताक लेत रहली, जहवाँ कुकुर के मालिक, डाक्टर साहेब के घर रहे।

डेज़ी के मम्मी ओ टाइम मोहल्ला के सबसे सुन्दर मेहरारू मानल जात रहली। केहू उनकर तुलना हेमा मालिनी से करत रहे, त केहू रति अग्निहोत्री से। भोर आ सांझि के सिलिबलेस नाइटी पेन्हत रहली, आ कतहुं बहरी जास भा केहू के घरे पूजा-पाठ, बिआह-सादी में त साड़ी के ऐतना टाइट बान्हत रहली कि पूरा फिगर हाईलाइट होत रहें आ बाल के उठा के टापनाट जूड़ा बान्हत रहली, ई सब उनकर पहचान रहे।

बूढ़-जवान सब उनकरा से बतियावे खातिर लुरछिआइल रहत रहले।
बाकिर ओह मोहल्ला में एगो आदमी रहे जे उनकरा प ध्यान ना देत रहले , उ टामी के मालिक, डाक्टर साहेब।
एही से ऊ मन ही मन कुढ़त रहली।
एक दिन दुपहरिया में डेज़ी के घर मेहमान आवे वाला रहे। साफ -सफाई क के ऊ रसोई में खाना बनावे में जुटल रहली, कि तबे टामी जी फेरु आ के उनकरा बरामदा में “निपट” गइलें। बदबू उठते ही हड़कंप मच गइल।
नाक पर साड़ी के पल्लू ध के ऊ चिचिआए लगली।

“ए डक्टराइन! आपन कुकुर के रोकीं! ना त एक दिन टांग तुड़वा देब!
आ सुनी! या त खुदे आईं ना त आपन लइका लोग के भेजीं, आके ई लैट्रीन साफ कर जाए लोग!”

संजोग से ओ दिन डाक्टर साहेब घर प रहले। आवाज सुनते ही बालकनी प आके गरजे लगलें,
“केकरा के बोलावत बानी रवा लैट्रीन साफ करे खातिर?
दिमाग ठीक बा नू कि ना?”

बस, इहे सुनते डेज़ी के मम्मी के खीस सातवां आसमान पर चहुप गइल...
“दिमाग त राउर खराब बा! कुकुर पलले बानी, बाकिर देखभाल पड़ोसी के जिम्मा! ह नू!
जब-तब राउर लाड़ला हमार घर पवितर क जाला!”

डाक्टर साहेबो कहां चुप रहले,
“के देखल ह कि राउर घर पवितर, टामी ही कइले बा?
एह मोहल्ला में केतना दो आवारा कुकुर घूमत बाड़े सन, केहूओ क सकेला!
फालतू में झगरा करें के आदत पर गइल बा !”

डेज़ी के मम्मी गाभी कसत बोलली,

“आवारा कुकुर त तबो शरीफ बाड़े स, राउर टामी त उनकर बाप ह! कवनो दिन पकड़ में आ गइले त चारो टांग तूर देब!”
एतना कहके ऊ खीस से दांत पीसते भीतर चल गइली ।

तनिके देर बाद डेज़ी के पापा खुरपी माटी आ अखबार से ऊ सब गंदगी साफ-सूफ क देलन।

डेज़ी के मम्मी जतना आगि उगिलत रहली, उनकर पापा ओतने गऊ आदमी।

मोहल्ला के जिनगी भी बड़ा अजीब होला। बिहान झगड़ा, सांझ होते-होते फेरु हँसी-ठिठोली। पंद्रह-बीस घर के ऊ मोहल्ला सुख-दुख में एकजुट रहे।

दुपहरिया के तीन-चार बजे मोहन चिनियाबादाम वाला के आवाज़ सुन के सब केहू बहरी निकल आवत रहले ,
“नमक के दाम बा, मूंगफली इनाम बा... आईं सभे, आपन-आपन इनाम कबूल करी जा!”

मोल-मोलाई दस रुपया से शुरू हो के पाँच रुपया तक में पूरा ठेला बिका जात रहे।

हर साल पहिला जनवरी के दिन गाजर के हलवा, गुलाब जामुन, पुआ, तिलवा, मेथी के लड्डू, सभकरा घर में बनत रहें आ एक दूसरा के घर में अदला-बदली होत रहे।

जेतना उत्साह से लोग देत रहले, ओसे जादे बेसब्री से इंतजार रहत रहे कि दोसरा घर से का आई।

कृष्ण जन्माष्टमी प टुनटुन चाची के घर में बिहाने से लइका-लइकी लोग जुट जात रहले, फूल के माला, आम -अशोक के पत्ता के तोरन से सजावट।

मेहरारू लोग मिल-बांट के फल फलहरी काटत रहली आ केहूं आटा-धनिया-चीनी के भूज के पंजीरी बनावत रहें परसादी बदे, आ रात बारह बजे कृष्ण जन्म के बादे सभे परसादी ले के अपना घरे जाएं । आपन पराया के ओह जुग में कवनो भेद-भाव ना रहे।

मोहल्ला ह त किसिम-किसिम के बातों होखी।
त ओह मोहल्ला में एगो बात गते-गते फइल गइल कि, डेज़ी के मम्मी “टोनहीन” बाड़ी।

जेकरा के धियान से देख ले ली या त ओकर मति मरा जाइ ना त उ बेमार पर जाइ। एक मुंह से दूसरा, दूसरा से तीसरा। मुंहें-मुंह बात के रूप बदलत चल गइल। घर के लोग अपना बाल-बच्चा के बरिज दिहले कि डेजी के मम्मी के सोंझा बन-ठन के नइखे जाएं के।
केहू कहे जादू-टोना जानेली, केहू कहे मरद प हाथ उठा देली, केहू कहे कि उनकर सुन्दरता ही आफत बा।

एगो बीतत पूस के दुपहरिया रहें, सब केहू अपना छत पर घाम सेंकत रहे। डाक्टर के मझिली बेटी बालकनी में आपन भतीजा संगे खेलत रहली। सोझा अपना छत पर ठाढ़ डेज़ी के मम्मी लइका के एकटक देखत रहली।
डर के मारे ऊ बच्चा उठा के बोललस,
“चल बबुआ भीतर, डायन ताक रहल बिया।”
बस, इहे सुनला के देरी रहे कि,
डेज़ी के मम्मी जइसे फाइटर जहाज बन गइल रहली—
“हम डायन? तू डायन रे! कुकुर संगे रह-रह के तोहनी के कुकुर बन गइल बाड़ूसन!”
फेर त छत से छत तक आवाज, किरायेदारिन, डक्टराइन, तू-तू, मैं-मैं। आ दू-तीन घंटा तक मोहल्ला मनसायन भइल रहल।

ओ जमाना में ना सास-बहू वाला सीरियल रहे, ना बिग बॉस जइसन कार्यक्रम। असली मनोरंजन त मोहल्ला के चुगलखोरी आ बतकुचन में ही रहे।
धीरे-धीरे समय बदलत गइल। लोग अपना बच्चा के पढ़ाई खातिर शहर छोड़ के महानगर चल गइले।
आज ऊ मोहल्ला ना रहल। ना ऊ रौनक बचल। बस चारदीवारी में सिमटल एगो नाम बन के रह गइल बा।

❑❑

❍ धुबरी, असम

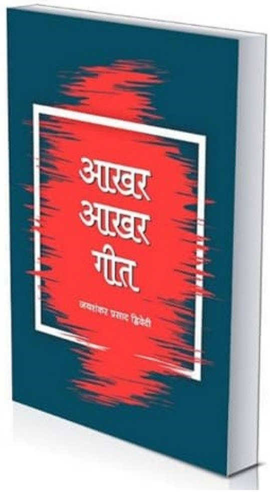

अधूरा पुल अउर अनमोल सनेस

अभियंता सौरभ कुमार

अस्सी घाट के ऊ शाम:

सौरभ जी एगो पुल के प्रोजेक्ट के सर्वे खातिर बनारस आइल रहले। दिन भर धूप में गिट्टी, बालू अउर नक्शा के बीच दिमाग खपावलें के बाद, जब ऊ सांझ के अस्सी घाट पर पहुँचस, त अइसन लागे जइसे केहू उनकर सारा थकान हर लेले होखे। ऊ मणिकर्णिका अउर दशाश्वमेध के शोर से दूर, अस्सी के शांत सीढ़ियन पर बइठ के गंगा के आरती देखस। लहरन के उठल-गिरल देख के उनकरा अपना इंजीनियरिंग के हिसाब-किताब फीका लागे लागत रहे।

एक दिन, जब सूरज गंगा के गोद में धीरे-धीरे समात रहे, तबे कवनो हवेली के ऊँच मुंडेर से शहनाई के एगो बहुते मर्मस्पर्शी धुन फूटल। सौरभ के ध्यान नक्शा से हट के ओह आवाज के ओरी चल गइल। देखलें त ऊपर एगो सांवली-सलोनी लड़की, आँखि मूंद के शहनाई बजावत रहे। ओकर उड़ास चेहरा अउर ओह धुन में अइसन दर्द रहे कि सौरभ के कदम उहवें जम गइल। पता चलल कि ऊ आस्था हई, जिनके बाबा बनारस के कवनो नामी शहनाई वादक रहले।

रोज ऊ धुन सौरभ के खींचे लागल। एक दिन सौरभ हिम्मत जुटा के हवेली के देहरी पर पहुँच गइले। आस्था के नजर उनकरा पर गइल। सौरभ कहलें, "हम इंजीनियर बानी, लोहा अउर कंक्रीट के जोड़ बनावेनी, बाकी रउआ ई सुरन के अइसन जोड़ बनइले बानी कि हमार नक्शा ही भुला गइल।" आस्था धीरे से मुस्कुरा भइल कहली, "इंजीनियर साहेब, सुरन के जोड़ त ऊपर वाला बनावेला, हमनी त बस ओकरा के हवा में घोल देवेनी।" ओकरा बाद रोज के मुलाक़ात, चाय के चुस्की अउर गंगा के किनारे लंबा बातचीत के सिलसिला शुरू भइल।

सौरभ के प्रोजेक्ट में कुछ तकनीकी दिक्कत आइल। ऊ परेशान रहले, त आस्था उनकरा के घाट के एगो पुरान मंदिर में ले गइली अउर कहली, "ई मंदिर सौ साल से खड़ा बा, एकरा के कवनो कंप्यूटर ना बनइले रहे, बस विश्वास बनइले रहे। रउआ भी अपने काम पर विश्वास रखीं।" सौरभ के काम बन गइल, बाकी ज्यों-ज्यों पुल पूरा होखत रहे, त्यों-त्यों सौरभ के मन भारी होखत रहे। ऊ जानत रहले कि पुल खतम होते ही उनकरा वापस जाय के पड़ी। अंतिम दिन, अस्सी घाट पर बहुत सन्नाटा रहे। सौरभ आस्था के एगो छोटहन सनेस देवे के चाहत रहले, बाकी शब्द ना मिलल। ऊ अपना पसंदीदा 'फाउंटेन पेन' (जेकरा से ऊ नक्शा बनावत रहले) आस्था के हाथ में थमा दिहले। आस्था अपनी डायरी से एगो पन्ना फाड़ के उनकरा के दिहली, जेपे उनकर आपन रचल एगो भोजपुरी गजल लिखल रहे। ऊ कहली, "सौरभ जी, पुल त बन गइल, अब रउआ अपनी दुनिया में जाईं, बाकी ई गजल कबहूँ गुनगुना लेब त हमार धुन रउआ के सुनाई दे दी।"

दू साल बीत गइल। सौरभ दिल्ली में रहले, बाकी उनकर हर नक्शा में गंगा के लहरें अउर शहनाई के तान नजर आवत रहे। ऊ फेर बनारस गइले, उही हवेली पर पहुँचले, बाकी उहाँ अब कवनो अउर रहत रहे। पता चलल कि आस्था के परिवार कवनो दोसरे शहर चल गइल बा। सौरभ पागलन नियर हर घाट पर आस्था के खोजले, हर शहनाई वादक से पूछलें, बाकी केहू के कुछ पता ना रहे।

थक-हार के सौरभ ओही मंदिर के चबूतरा पर बइठ गइले जहाँ आस्था उनकरा के ले गइली रहली। उहाँ के पुजारी जी उनकरा के देख के पहचान गइले। ऊ एगो पुराना कपड़ा में लपेटल समान सौरभ के दिहले। सौरभ खोललें त भीतर 'गोदान' के ऊ किताब रहे जवन ऊ कबहूँ आस्था के पढे खातिर देले रहले। किताब के भीतर एगो चिट्ठी रहे, जेकरा पर बालू अउर गंगाजल के दाग रहे।

चिट्ठी में लिखल रहे: "सौरभ जी, रउआ त इंजीनियर रहनी, का रउआ ना जाननी कि नदी के दू गो किनारा कबहूँ एक ना हो सकेला? पुल त बस ऊपर-ऊपर रहेला, असली गहराई त पानी के नीचे होला। हम जा रहल बानी, बाकी रउआ बनावल ऊ पुल हमरा अउर रउआ के याद के जोड़े खातिर काफी बा। हमार शहनाई अब मूक हो गइल बा, काहे कि ओकर सुनने वाला अब कहुँ दूर बा।"

सौरभ आजुओ कबहूँ-कबहूँ बनारस जाले। ऊ पुल आजुओ ओही तरे खड़ा बा, गाड़ी आवे-जाले, लोग हँसे-बोलेला। बाकी सौरभ के नजर आजुओ ओही हवेली के खिड़की पर टिक जाला, जहाँ से कबहूँ कवनो शहनाई के धुन उनकरा के दुनिया भुला देले रहे। ऊ समझ गइले कि प्रेम कवनो इंजीनियरिंग प्रोजेक्ट ना ह जवने के पूरा कइल जा सके, ई त ओही गंगा जइसन बा जवन बस बहत रहेला, कबहूँ थमेला ना।

बरसन बीतला के बाद जब सौरभ फेर से बनारस के ओही तंग गलियन में घुसले, त अइसन लागल जइसे हर ईंट-पथर उनकरा से पूछत होखे— "कहाँ रहनी एतना दिन?" हवेली के

ऊ खिड़की जहाँ आस्था बइठ के शहनाई बजावत रहली, अब उहाँ बस मकड़ी के जाला अउर सन्नाटा रहे। सौरभ उहाँ खड़ा हो के अपनी आँखि मूँदनी, त अइसन लागल जइसे हवा में आजुओ ओही शहनाई के 'मारवा' राग गूँजत होखे।

सौरभ जब ओही मंदिर के पुजारी जी के पास गइले, त पुजारी जी उनकरा के देख के एगो गहिरा आह भरलें। ऊ कहलें, "बबुआ, रउआ त चल गइनी, बाकी ऊ लइकी रोज सांझ के आरती के बाद इहवें घाट पर आ के बइठत रहे। ऊ गंगा के लहरन से बात करत रहे कि का फेर कबहूँ ऊ इंजीनियर साहेब ई पुल देखे अइहें?" पुजारी जी आगे कहलें, "जब ओकर परिवार जाय लागल, त ऊ बहुत रोवत रहे। ऊ अपना शहनाई के ऊ 'रीड' जेकरा से फूँक मारल जाला, ओकरा के गंगा में प्रवाहित कइ दिहलस अउर कहलस कि जब सुर ही पराया हो गइल, त बाजा के का काम?"

सौरभ के करेजा फाट गइल। ऊ घाट के ओही सीढ़ी पर बइठ गइले जहाँ आस्था के साथे चाय पियत रहले। अचानक उनकर नजर गंगा के पानी में फँसल एगो छोटी सी बोतल पर गइल, जवन पत्थर के बिचवे फँसल रहे। सौरभ ओकरा के निकाललें, त देखलें कि ओकरा भीतर एगो कागज के टुकड़ा बा। कागज खोलते ही सौरभ के पाँव काँपे लागल। ऊ आस्था के लिखल अंतिम सनेस रहे। ओकरा पर लिखल रहे:

"सौरभ जी,

हम जानत बानी कि रउआ एक दिन जरूर अइब। रउआ पुल बनावेनी, त रउआ के पता होई कि बुनियाद त जमीन के नीचे होला, केहू के लउकेला ना। हमनी के प्रेम भी ओही बुनियाद नियर बा। दुनिया के त बस ऊपर के पुल लउकल, बाकी हमनी के तड़प के गहराई केहू ना जानल। हम जा रहल बानी, बाकी हमार शहनाई के अंतिम तान एह गंगा के लहरन में हमेशा खातिर समा गइल बा। जब रउआ के हमार याद आई, त बस कान लगा के गंगा के पानी के कल-कल सुन लीहब, हमार आवाज ओही में बा।"

सौरभ ओही घरी अपना बैग से ऊ 'फाउंटेन पेन' निकाललें जवन आस्था उनकरा के फिरा देले रहली। ऊ ओही कागज पर नीचे लिखलें

"आस्था, पुल त खड़ा बा, लोग आवे-जाले, बाकी ओकर असली बोझ त आज हमार दिल उठावत बा।"

सौरभ ऊ कागज फेर से बोतल में भर के गंगा के बीच धार में प्रवाहित कइ दिहलें। ऊ देखलें कि जइसे-जइसे बोतल दूर जात रहे, तबे अचानक हवा में शहनाई के एगो बहुत महीन धुन सुनाई दिहलस। ऊ भ्रम रहे या हकीकत, केहू ना जानल, बाकी सौरभ के चेहरा पर एगो अजब सा सुकून आ गइल।

आजुओ सौरभ दिल्ली में बड़े-बड़े पुल बनावेले, करोड़ों के प्रोजेक्ट पास करेले। लोग उनकरा के एगो सख्त इंजीनियर मानेला, बाकी केहू ना जाने कि उनकर असली इंजीनियरिंग त बनारस के ओही घाट पर खतम हो गइल रहे। ऊ आजुओ अपनी डायरी में लिखले बाड़ें—

"इंजीनियरिंग त बस लोहा-कंक्रीट के खेल बा, असली कारीगरी त ऊ होला जो रूह के रूह से जोड़ दे, चाहे बीच में सात समंदर के दूरी काहे ना होखे।"

❑❑

विरह के पुल

नक्शा बनावत-बनावत, जिनगी के नक्शा हेरा गइल,
कंक्रीट के ओह शहर में, एगो बनारसी सनेस फेरा गइल।
पुल त बन गइल मजबूत, गंगा के एह धार पर,
बाकी रूह के रूह से मिलन, बस इन्तजार में रह गइल।

लोहा अउर पत्थर जोड़ के, हम त दुनिया जीतनी,
बाकी तोहरा सुरन के जादू में, हम अपन सुधि हरनी।
अस्सी के सीढ़ी पे बइठ के, ऊ चाय के पियाली,
आजुओ महकेली मन में, जइसे बगिया होवे खाली।
तूँ शहनाई के तान रहलू, हम कवनो कठोर मशीन,
तोहरा बिना ई इंजीनियर, भइल बा आजु बे-चीन।

बुनियाद त गड़ल रहे गहिरा, केहू के लउकल ना,
नेह के ऊ गजब सानिध्य, कबहूँ चउकल ना।
चिट्ठी बोतल में बह गइल, संगे गंगा के लहर,
हम इहवें ठिठक गइनी, अउर तूँ नाप लिहलू शहर।
पुल पे गाड़ी दौड़ल बहुत , लोग हँसत-गावत गइल,
बाकी हमार मलाल त, ओह 'फाउंटेन पेन' में समा गइल।

आजुओ जब क्रेन उठेले, त मन शहनाई खोजेला,
सीमेंट के हर बोरी में, हम बनारस के धूल खोजेला।
सौरभ त बस नाम के बा, असली सुवास त आस्था रहे,
अधूरा रहल जवन कहानी, ओही में असली दास्तान रहे।
पुल त मुकम्मल बा 'साहब', बस किनारा अधूरा बा,
ई प्रेम के अजब इंजीनियरिंग, जहवाँ सहारा अधूरा बा।

❑❑

❍ सिवान, बिहार

एगो रहलन कवि जी

डॉ रजनी रंजन

एगो गाँव रहल जेकर नाम रहे -अमवा घाट। शांत-सुकून से भरल, खेत-खरिहान, नदी-नाला, आ चिरई-चुरगुन के बोल से रजगज।ओही गाँव में रहलन– लोग त “कवि जी” उनका के कहत रहे बाकिर उनकर असली नाम रामेश्वर प्रसाद मिश्र रहल। उनकर कवितई अइसन रहे कि लोग उनकर असली नाम बिसार दिहले।

कवि जी कइसे कवि बनलन, ई कहानी बड़ा मजेदार बा। कवि जी रोज बिहाने बिहाने नदी किनारे टहले जास। ओहि किनारे एगो पुरान पीपर के नीचे बइठ जात रहलन । उनके पास ना कागज रहत रहे, ना कलम— बाकिर दिमाग में कविता उमड़ के आइए जात रहे। ओह घरी कवि जी खूब मगन होके कविता वाचन करस।बाकिर सुनवइया केहु ना रहे।कबो कबो लोग आवत जात उनका के बोलत सुने त कहे-पागल हउव का?अकेलहीं बुदबुदा ताड़।ऊ हँस के कहस- नवका कविता फुटल बा आईं बइठीं तो सुना देब। बाकिर भोरे भोर काम पर भागे वाला मनई के कविता सुने के कहाँ फुरसत।

एक दिन गाँव के स्कूल में "कविता प्रतियोगिता" रखल गइल। मास्टर साहेब कवि जी के नेवता पेठइलन—
“कवि जी! आके एह में आपन कविता सुनाईं।”
कवि जी त आ गइलन ।एक आदमी कहलन - आ इनका लगे ना काँपी बा ना डायरी ,का सुनइहें! कवि जी के कान तक ई बात पहुंच गइल । ऊ सकुचात बोललें—
“हमरा से कविता त कागज पर ना लिखाला बलुक दिमाग में बस आपे उतर जाला।”

इसकुल के लड़िका-लइकी सब त बड़ा उत्साहित रहलन । मंच त सजल रहल बस जइसहीं गाँव के लोग जुटान भइल त कवि जी मंच पर चढ़लन।
सबके मन में उत्सुकता रहे - कवि जी का सुनइहें?
कवि जी आँख मूँदलन, माथ पर हाथ फेरलन, आ गला खँखारलन।फिर अचानक गइलन—

“आकाश में उड़े एक चिरई,
साँझ भइल त लौटल मड़ई,
जेकरे दिल में प्रेम न बसल,
ओकरे खेत ना उगे फसल।”

सब लोग ताली पीट देलक, खूब ताली पिटाइल ।मास्टर साहेब पूछलें—
“कवि जी! ई कविता कहाँ से सूझेला ?”
कवि जी मुस्कुरा के बोललन—
“भइया, कविता हम ना बनावेनी… उ त आपन रास्ता खोज के हमरा दिमाग में खुदहीं आ जाले।”कवि जी गदगद हो गइले। आखिर आज उनकरा कविता के शाबासी मिलिए गइल।अबकी कवि जी के नाम गाँव से बहरी भी गइल।
एक दिन शहर से एगो बड़का लेखक गाँव के कार्यक्रम में कवि जी के कवितई के तारीफ सुन के अइलन। उ कवि जी के खोजत -खोजत पीपर गाछ के नीचे पहुँच गइलें। देखलें– कवि जी चुपचाप नदी देख के हँसत जात बाड़न।

ई देखके लेखक पूछलें—
“का कवि जी, कविता खाली हँसले से बन जाला का?”
कवि जी जवाब देलन—
“नदी जइसे आपन धार बहावत रहेला; ओसहीं हमारा मन कविता बहावत रहेला। हम त बस महसूस कर रहल बानी ,
ओकरे आनंद से मुख मुस्करा रहल बानी। ।”
जबाब सुन के लेखक प्रभावित हो के कहलें— राउर कविता छपी तबे नु सभका तक पहुंची आ राउर नाम होई।”
कवि जी हँसत बोललन—
“हमार कविता कागज पर कैदी बन के ना रह पाई। ई त-
हवा में उड़ेले,
नदी में बहेले,
गाँव में रहेले,
मनई के कहेले,
आ गाँवे के बोली-बानी में मिल जाले।”

लेखक खूब प्रभावित भइले बाकिर कवि जी कविता कागद पर उतरवावे खातिर तैयार ना भइले। हार पछता के लेखक लौट गइले।

धीरे-धीरे कवि जी के नाम दूर-दूर तक फइल गइल। अब लोग उनका के कहे लागल—“ मुखी कवि जी,जिनकर कविता कागज पर ना,दिल में छपेला।”

एक दिन फेर लेखक मुखी कवि जी से मिले खातिर गाँव अइलन। ऊ बड़ी मिन्नत कइलन कि कवि जी अपना साथे कुछ दिन उनका के राखस आ अपना नियन कविता लिखे के सिखावस काहे कि उ छंद में लिखे ना जानत रहलन बाकिर छंद उनका खूबे पसंद आवे। मुखी कवि मान मनौव्वल के बाद उनका संगे रखे के तैयार हो गइले। धीरे धीरे दुनु जन आपन कविता के बखान एक दुसरा से करे लगले।तनिके समय में दोस्ती नजदीकी में बदल गइल रहे।एक दिन लेखक कहले कि

हमर मेहरारू पहिले कविता छंद में सुनावत रहली ऊ ढेरे लिखले बाड़ी।जब खुश रहेली त गावत कय बार सुनले बानी। बड़ा नीक लागेला।बाकिर बाद में कहे लगली कि अब हमार मन इ कवितई से उचट गइल बा एहसे अब ना गावेली ना लिखेली। एगो कविता उहे लिखले बाड़ी बाकिर ओकरा के अधूरा छोड़ दिहले बाड़ी । हमरा ऊ बहुते पसंद बा। कय बार ओकरा के हम पुरावे के कोशिश कइनी बाकिर अंतरा पहिलका नियन जमल ना। हम त गद्य लिखे के ज्यादा पसंद करीले।पद पर हमार पकड़ कमजोर बा।एही से जब रउआ लगे आइल बानी त सोचतानी रउआ एकरा के जरूर पूरा देब।रउआ के सुनाईं का! मुखी कहलन- सुनाईं! देखीं तनी।पूरे लायक होई त पूरा देब।लेखक जइसे कविता शुरू कइले मुखी के मुँह खुलले रह गइल। कविता खतम भइला पर लेखक कहले अगिला बंद बनाईं त।

मुखी के त काठ मार गइल। धीरे से कहलें- रउरा यकीन बा,ई उहे लिखले बाड़ी। कबो उनका के लिखत देखले बानी।

तनी सकुचात-मुस्कात कहलन- लिखत त देखले नइखीं कबो।बाकिर गावत पढत सुनले बानी।मुखी कहलन- रूकीं! फेर पाकिट से एगो फटहीं आ मुचराइल छोटहन डायरी निकाल के एगो पेज खोल के लेखक के आगे कर देहलन।लीहीं देखीं त इहे बंद रहल ह नु। लेखक भौंचक्का! रउरा लगे कइसे? कवि जी कहलन- ईहो हमरे लिखल ह। ऊ गइली त साथे ले गइली। ओही घरी से प्रेमगीत हम कबो लिखबे ना कइनी। पहिले हम बड़ी मिज़ाज वाला रहनी। स्कूल में उनका से भेंट भइल त कविता हमरा हृदय में जनमल ।हम खूब लिखीं आ जब उ हमरा आसपास होखस त उनके बहाने से हम आपन कविता सुनाईं।ऊ सुन के खूब हमर तारीफ करस।हम एकरा के धीरे धीरे आपन जिनिगी बुझे लगनी। कबो-कबो ऊ हमर गीत के नया राग बना के हमरा के सुनावत रहली। बाकिर उनकर आपन दुनिया रहे जवना में ऊ मगन रहत रहली।एक दिन हम उनका के आपन डायरी में लिखल सब गीत दे दिहनी ई कहके कि तुम बहुत अच्छा गाती हो।

फेर त दोस्ती बढ़े लागल। एक दिन एही नदी किनारे पिकनिक पर सब दोस्त इकट्ठा भइनी त उ हमार डायरी हमके वापस कर देहली।कहली कि जे हमरा ठीक लागल ह उ हम अपना डायरी में उतार लेले बानी। आगे के पढ़ाई ससुराल से होई एह से तहार डायरी तहरा के वापस कर देतबानी।

हमरा त काठ मार गइल। अब जवन रोग अकेलहीं पैदा कइले रहीं ओकर दवाई भी खुदे खोजे के पडल। प्रेमगीत तब से आज ले ना लिखाइल।बाकिर इ नदी के किनार आ इ पीपर गाछ हमर जिनगी बन गइल। कविता के रुप बदल गइल।अब प्रकृति हमार विषय बा। बाकिर ओहिमे राग प्रेम से भर जाला। लंबा साँस लेके मुखी जी कहले - उनका नइखे पता आ कहब मत। कहते कहते मुखी जी लुढक गइले आ उनकर जीवन समाप्त हो गइल।

लेखक बुझ गइले कि वियोग से उपजल गीत के राग काहे एतना मधुर होला। जे कुछ अचानक भइल उ तऽ गाँव में आग जइसन फइल गइल। गाँव भर के लोग मिलके उनकर अंतिम संस्कार कइलन।सब खतम भइला पर लेखक अपना घर के तरफ रूख कइलन। लेखक के मन अपराध बोध से भर गइल रहे।समय बीतल पर अब लेखक के मन राग से भर गइल रहे।ऊ जहाँ जास ओह गीत के सुनावस बाकिर मुखी कवि के नाम से सुनावस।कहस कि अमवा घाट के पीपर अबहियो उनकर कहानी कहेला—

उनका सरल जीवन, उनका सहज हँसी, आ उनका कविता के अजब दुनिया।

कवि जी के सोच असाधारण , — कवि जी बस एही से खास बन गइलें।

अब लोग कहे—

"एगो रहलन— मुखी कवि जी! जे
कागज पर भले कुछ ना लिखलें,
पर लोगन के मन में बहुत कुछ छोड़ गइलें।"

आजुवो गाँव में जब पीपर के नीचे हवा चलेला त लोग कहेला—

"इहे जगह पर एगो रहलन कवि जी… जे चुपचाप दुनिया समझत रहलन ।" पीपर,पतई ,नदी,गाँव आ धरती सबमें कवि जी हमेशा रहिहें।

❑❑

❍ **घाटशिला,झारखंड**

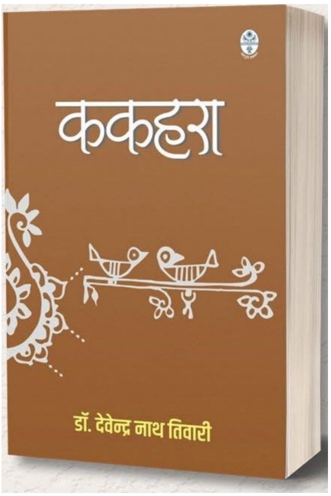

दू गो कविता

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

इहवाँ हमनी के सरकार

लिखल, पढ़ल, सोचल, बोलल
मानल जाई तकरार। इहवाँ हमनी के सरकार॥

हमरे से हौ नून तेल आ हमरे से कानून
चाहे रहा तू केरल बबुआ चाहे देहरादून

अगड़ा, पिछड़ा, दलित के खेला
सब हमरे ब्योपार। इहवाँ हमनी के सरकार॥

कबों खातिर एस सी एस टी,कबों के बा यू जी सी
बचा-खुचा आरक्षण से, घलुआ बाटे खबर नबीसी

बिना जांच-पड़ताल के बबुआ
सुखले खइबा मार। इहवाँ हमनी के सरकार॥

झगड़ो केहू कतौ भले, खतरा तहनी के सिरे
किल्लत के उठी ज्वार,रगरा बा रोज फजीरे

झूठ साँच के फेरा बाबू
बस कुरसी के दरकार। इहवाँ हमनी के सरकार॥

चौड़े में धमका के बाबू ,जय हो जय हो नारा
सनेसा पर रंग रोगन, हम बानी देस दुलारा

सोसल भा अनसोसल मीडिया
चेहरा बाटे चटकदार।इहवाँ हमनी के सरकार॥

पक्की के कच्ची में बदलत बेंचत सब सरकारी
गढ़त कहानी रोज नई बस सेठ के तरफदारी

कतना फाइल खोज निकलबा
हिले ना डेग हमार।इहवाँ हमनी के सरकार॥

❑❑

जय बोला सरकार हईं हम

रउरा सोच के सीमा से, बहुते बहुत पार हईं हम,
जय बोला सरकार हईं हम॥

लिखल-पढ़ल सभ बंद कराएम,
खुलवाइब दारू के ठेका।
कसहूँ कुछ पढ़ि लिहले हउवा
ठेला लगा पकौड़ा बेचा।

बोले चाहे केहू कुछो,असली तारनहार हईं हम,
जय बोला सरकार हईं हम॥

बर-बिकास के नाँवे बबुआ
सपना के सम्पत देखाएम।
अफरा-तफरी रोजगार में
नसा के चसका लगवाएम।

देखियो के समझ न पइबा, सभका के आधार हईं हम,
जय बोला सरकार हईं हम॥

डूबे भलहीं देस के नइया
भा होखे ब्योपार में घाटा।
हमरा हिस्से छनल मलाई
जनता के मुँहे-मुँह चाटा।

करजा के करजा से पाटत, करजा के दरकार हईं हम,
जय बोला सरकार हईं हम॥

रोज नई कुछ बात बना के
भाई से भाई लड़वाएम।
आरक्षण के ओढ़ि चदरिया
कुरसी के मेवा हम खाएम।

बरब पगहा धरम जाति के, इहाँ के पालनहार हईं हम,
जय बोला सरकार हईं हम॥

❑❑

❍ बरहुआँ, चकिया, चन्दौली (उ.प्र.)

नवसंवत्सर २०८३ आ बासंतिक नवरातर महापरब होवेला खास

पं.अपूर्व नारायण तिवारी 'बनारसी बाबू'

॥ ॐ हर हर हिरण्यगर्भाय ॥
॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
॥ॐ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे ॥

चइत सुकूल प्रतिपदा के, मंगल होई सुरुआत,
विक्रम संवत् २०८३, असीम ले आई सौगात ॥

चइत सुकूल प्रतिपदा तिथि के होला हमहनी के नवसंवत्सर, मायने आपन नयका बरस के रूप में इ दिन मनावल जाला। इ फकत कैलेंडर बदले के दिन ना हौ, बल्लुक प्रकृति, संस्कृति आ आध्यात्म के मिलन के पतित पावन दिन हौ।पौराणिक मान्यता के अनुसार, ब्रह्मा जी एही दिन महादेव के आज्ञा से सृष्टि के रचना कइले रहलन।

बासंतिक नवरातर : सक्ति के साधना

एही सुभ दिन से बासंतिक नवरात्रि के सुरुआत भी होवेला। नौ दिन तक आद्यसक्ति दुरगा माई के नौ गो सरूप- माई सैलपुत्री से लेके माई सिद्धिदात्री तक के आराधना घर घर में बिधि बिधान से कइल जाला।

इ समय आत्मा के सुद्धि, नारी सक्ति के सम्मान आ बुराई पे भलाई के जीत के प्रतीक मानल जाला।

"अरे ! चइत के चटक घाम में, माई के अगाध होला भक्ति।
आजु संवत २०८३ के पहिलका दिन, हर घर में माता रानी के
होला कलसा पूजन स्थापित सक्ति ॥

आम के पल्लव, माँ के ओढ़नी, आ जवार के हरियाली,
इ बतावेला कि इ बरस सुख, समृद्धि आ रही खुसहाली ॥

संवत् २०८३ के खासियत -

१. नवांकुर : प्रकृति नयका रूप लेत हौ, नया पातन आ फूलन से धरती सज गयल हौ।सगरो बसंत बहार हौ। धरती पे निखार हौ।
२. आध्यात्मिक ऊर्जा : नवरातर में संयम, उपवास आ जप से आत्मा के सुद्धिकरण होवेला।नव ऊर्जा सभके मिलेला।
३. नई सुरुआत : एही दिन से हर नया काम में नया उत्साह आवेला आ नया लक्ष्य निर्धारित होवेला।

"सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके।
शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥"

नवसंवत्सर २०८३ आ बासंतिक नवरातर के पावन अवसर पे धरती आपन नूतन सिंगार स्वयं करेला।अइसन अद्भुत कारज अन्य केहू दुसर धर्म के नयका बरस में नाही होवेला।इहे सनातन धरम के महात्म्य हौ ॥

नवसंवत्सर २०८३ :

चेतना के नयका बिहान अउरी माई के ममतामई छाँह हौ नवसंवत्सर।

"चैत्रे मासि जगद्ब्रह्मा ससर्ज प्रथमेऽहनि।
शुक्लपक्षे समग्रे तु तदा सूर्योदये सति ॥"

(अर्थात : ब्रह्मा जी चइत मास के सुकूल पक्ष के प्रतिपदा के सूर्योदय के समय पूरहर जगत के रचना कइले रहलन।)

नव संवत्सर के पहिला दिन कवनों साधारण तिथि ना हौ, इ त पूरा ब्रह्मांड के जनमदिन हौ। विक्रमी संवत २०८३ के फजीरे निकलल ई पहिलका सुरुज, हमहनी के पुरखा लोगन के गौरवशाली परंपरा अउरी खगोल विज्ञान के अपूर्व संगम हौ। जब पच्छिम के दुनिया अंधियारा में रहल, तब महाराज विक्रमादित्य इ काल-गणना देहले रहलन, जवन आजुओ हमनी के माटी के सुगन्ध आ नक्षत्रन के चाल से जुड़ल हौ।संगे सर्वथा , प्रासंगिक आ उपादेय भी हौ।

प्रकृति के नव सिंगार -

देखीं त, चहुंओर कइसन उल्लास फइलल हौ ! फागुन के फगुआ गइला के बाद, चइत के इ चटक घाम देह में सिहरन पैदा करत हौ। नीम के गाछ पे नया पल्लव आ गयल बाड़न, जइसे माई के परसाद बंटे खातिर बउरा गइल बाड़न। कोइली के कूक, बुलबुल के बोली अब पहिले से बेसी मीठ लागत हौ। इ आपन नयका बरस कवनों बंद कमरा के पार्टी ना हौ,काली रतिया के उबासी ना हौ, इ त खेत-खरिहान के सोनाहट, अमवा के मँजर अउरी गेहूँ के इठलात सुनहरी बालियन के उत्सव हौ।महुआ,पलास,सेमल, अड़हुल के फूलन के अलौकिक सिंगार हौ।प्रकृति खुदे आपन पुरान कंचुकी उतार के नयका "बासंतिक" चोला पहिन लेहले हौ। जंगल में आगि नीयर फूलन के रंग मधुमास बिखेर देहले हौ। इ एगो सनातन वार्षिक अनुष्ठान हौ।सभै जगह नव अंकुर पुष्पित आ पल्लवित होअत हौ।

सक्ति के साधना होला नवरातर -

एही नयका संवत के साथे-साथ आदिसक्ति भगवती माई के

'बासंतिक नवरातर के अनुष्ठान भी आरंभ हो जाला।सभै केहू इ नवसंवत्सर पे उपास राखेला।
"या देवी सर्वभूतेषु शक्ति-रूपेण संस्थिता,
नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमस्तस्यै नमो नमः।"
माई के नौ गो रूप—माई सैलपुत्री के अडिगता से लेके माई सिद्धिदात्री के पूर्णता ले—इ बतावेला कि जीवन में संघर्ष कइसे कइल जाला अउरी फेर ओहपे जीत कइसे पावल जाला।
घट स्थापना (कलश स्थापना) के मतलब होवेला, आपन भीतर ज्ञान(ग्यान) के जल भरल। जवन जौ (जवारा) हमहनी के बोइल जाला, ऊ इ सनेस देवेला कि धरती माई अन्नपूर्णा हईं, ओनकर सेवा ही आपन परम धरम हौ।
साच त इ हौ कि प्रकृति आराधना आ आध्यात्मिक ऊर्जा लेवे के महापरब हौ नवसंवत्सर आ बासंतिक नवरातर॥
कासी के इ माटी अउरी इहाँ के बोली भासा "कासिका", जवन बाबा बिसनाथ (सिव) के डमरू से एहिंजा सृष्टि के आरंभ में निकलल रहे, अलौकिक लागेला आ आजु गदगद बिया। गंगा के तीरे-तीरे संख अउरी घंटा घड़ियाल के आवाज ई गवाही देहत हो कि संवत् २०८३ हमहनी के संस्कृति के अउरी मजबूत करी। "अरे करेजऊ ! नयका साल हौ, नीम-मिसरी खावे के दिन हौ, ताकि बरस भर कड़वाहट दूर रहे अउरी मिठास सगरों बनल रहे।" इहे त हमनी के पुरबिया संस्कार हौ, जे सेहत अउरी परब दुनो के संगे साथे साधे चलेला।
सार -
नयका संवत् २०८३ हमहनी के इ सीख देत हौ कि जड़ से जुड़ल रहबS तब्बे फलबS-फूलबS।
इ दिन खाली तारीख बदले के ना हौ, बल्लुक सोच बदले के भी अवसर हौ। माई दुर्गा, गौरा माई हमहनी के सद्बुद्धि देवें कि हमहनी के आपन माटी, आपन सनातनी बोली अउरी आपन मर्यादा के रक्षा कर सकीं।
"आयुर्वर्षसहस्रं तु आरोग्यं सुदृढं
बलम्।
लक्ष्मीः सौभाग्यमैश्वर्यं ददातु तव वत्सरः॥"
(अर्थ : इ नया बरस सभके उमर बढ़ावे, नीक स्वास्थ्य अउरी बल देवे। लक्ष्मी, सौभाग्य अउरी ऐश्वर्य से सभके घर भरल रहे।)
जै जै शुभ नवसंवत्सर !
जै जय माई विशालाक्षी !
जै जै माई अन्नपूर्णा !
जै जै माई विंध्यवासिनी !

कासी के खास परंपरा नीम-मिसरी के सेवन -

कासी (बनारस) में नवसंवत्सर खाली कैलेंडर के एगो पन्ना ना हौ, बल्लुक आपन हड्डी-हड्डी, रोम-रोम में बसल एगो संस्कार हौ। नवसंवत्सर आ बासंतिक नवरातर में कासिका संस्कृति के एगो बहुत खास रंग नीम-मिसरी के महातम भी हौ।
शतायुर्वज्रदेहाय सर्वसंपत्कराय च।
सर्वारिष्टविनाशाय निम्बकं भक्षणं शुभम्॥
(अर्थ : सौ बरस के उमर, बज्र नियर मजबूत देह, धन संपति पावे अउरी सगरों दुख-दरिद्र के नास खातिर नीम मिसरी के सेवन परम ताकतवर आ मंगलकारी होवेला।)

बनारस के गली-गली में अलगे उल्लास होला। इहाँ 'नवसंवत्सर' के मतलब होवेला—सभके मुँह 'नीम-मिसरी' से तीत-मीठ कइल। शास्त्रन में लिखल हौ कि चइत के सुरुज जइसे-जइसे तपेला, देह में पित्त अउरी कफ के बिकार बढ़ेला। हमहनी के पुरखा लोग कइसन दिव्य वैज्ञानिक रहलन ! ऊ लोग नियम बना देहलन कि नव संवत्सर के दिन नीम के कोमल पत्ती, फूल, मिसरी, अजवाइन अउरी करायल के मिला के चबावल जाई। इ खाली परसाद ना हौ, इ पूरहर बरस भर खातिर 'इम्युनिटी बूस्टर' (रोग प्रतिरोधक क्षमता) हौ।

ठेठ कासिका भासा के मिजाज-

"अरे गुरु ! आजु त नीम के डारि टूटल हौ। माई-बहिन लोग सिलवट पर ओकरा के पीस के गोली बनावत बाड़ी। 'ल लपक ल,हपक ल,गटक ल'—जइसे इ गोली पेट में जाई, समझ लS कि चेचक (मईया), माता माई,खसरा अउरी पेट के सगरो बेमारी के छुट्टी हो जाई।
बनारस के खांटी लोग कहेलन—
'जे खईले नीम, उ ना रही कबहूं दीन,
ओकरा के का कर लेई केहू हीन ?'

पंचांग श्रवण अउरी संवत्सर फल :

कासी के सामने घाट,अस्सी से लेके राजघाट, आदि केशव घाट ले, आजु के दिन मड़ई-दुकान पे पंडित जी लोग 'नया पंचांग' खोल के बइठल बाड़न। इ कासी के खास परंपरा हौ—'नयका संवत्सर फल' सुनल।
नया साल के राजा के हौ ? मंत्री के हौ ? पानी कइसन बरसी ? फसल कइसन होई ? इ सगरों जानकारी पंचांग के माध्यम से जन-जन ले पहुँचला। लोग नयका पंचांग के गंध, अक्षत अउरी फूल से पूजा करेलन, काहे कि समय (काल) के गणना ही भगवान के सरूप हौ। कासी के पंचांग के सम्पूर्ण जगतार में सभसे बेसी मान्यता हौ। काहे से कासी से ही कबहू ज्योतिष आ खगोल विधा आरंभ भयल रहे।
इ संवत् के भविष्य फल -
नयका संवत्सर २०८३ के नाँव 'रौद्र' हौ। एह साल के राजा गुरु (बृहस्पति) बाड़न आ मंत्री मंगल बाड़न। गुरु के राजा भइला से देस-दुनिया में हौले-हौले ज्ञान, धरम आ सुख-समृद्धि बढ़ी, बाकिर मंगल

के मंत्री भइला से कवनो-कवनो जगह झंझट-झगड़ा भी बढ़ी आ महँगाई भी देखाई दे सकेला।

13 महीना के होई इ बरस : एह बरस के एगो खास बात इ हौ कि इ 13 महीना के साल होई। ज्येष्ठ (जेठ) के महीना दू बेर आई,जेकरा के खरमास 'अधिक मास' या 'मलमास' कहल जाला। इ 17 मई से 15 जून 2026 ले रही। धरम-करम आ पूजा-पाठ खातिर इ समय बहुत उत्तम मानल जाला।

खेती-पाती आ मौसम : इ संवत के राजा गुरु बाड़न, त इ नीक बरखा आ बढ़िया खेती के संकेत हौ। गुरु 'सस्याधिपति' (फसल के स्वामी) भी बाड़न, जेकरा से अन्न के भंडार भरल रही। बाकिर 'रौद्र' संवत होवे के नाते बीच-बीच में मौसम में तेज बदलाव, भीसन गर्मी आ प्राकृतिक हलचल,भूकंप भी हो सकेला।बिदेसन में जुद्ध के दौर बनल रही। डोनाल्ड ट्रंप के युएसए के होवे वाला मध्यावधि चुनाव में करारी हार होई आ ओनकर प्रभुत्व कम होवे के पूरहर संभावना हौ।रुस आ चीन के जग में दबदबा बढ़ी,बकिया भारत सभै देसन में सभसे बेसी प्रभाव बनईले रही। भारत में अप्रैल माह के चुनाव में भाजपा के जीत कई राज्यन में संभावित हौ। ममता बनर्जी, पी.विजयन आ एम.के. स्टालिन के प्रभुत्व कम होवे के पूर संभावना हौ। राहुल गांधी,लालु यादव बदे समय प्रतिकूल रही।नीतिश कुमार देस के उप प्रधान मंत्री बन सकेलन।

देस आ समाज : ज्योतिष के हिसाब से भारत के साख दुनिया भर में बढ़ी। सरकार कड़ा फैसला ले सकी आ तकनीक आ रक्षा के छेत्र में देस आगे बढ़ी।सनातनी हिंदू लोगन में आध्यात्मिक चेतना जगी आ धरम के प्रति आस्था बढ़ी।

रासि फल : इ बरस मेष, मिथुन, सिंह, कन्या, तुला आ वृश्चिक रासी वाला लोगन खातिर बहुत सुभ आ फलदाई रहे वाला हौ।अन्य रासि के लोग तन्नी सावधानी बरतें।

नवरातर के खास बात - 19 मार्च सुरू भयल नवरातर 27 मार्च 2026 ले चली, जेकरे आखिरी दिन राम नवमी परब मनावल जाई।दुरगा अष्टमी आ राम नवमी एक संगे होवे से एक तिथि के हानि हौ।जेहसे देवी माई के कोप कई राज्यन में आपन प्रभाव दिखाई।माई के बिदाई हाथी पे होवल देस बदे अत्यंत मंगलकारी आ सुभीता होई।स्टाक बाजार में दिपावली तक आपन उच्चतम स्तर पे जा चहुंपे के पूर्ण संभावना लखात हौ।तब तक बदे धीरज आ संयम धरे के ज़रूरत हौ।। सोना-चांदी में चमक बरकरार रही। पेट्रोल, डीजल, ईंधन गैस के दाम में उतार-चढ़ाव बनल रही। जनमानस के अब कछु मितव्ययिता बरते के होई।

नवका संवत् में कासी नगर के खास सजावट अउरी लीहल संकल्प : नवका संवत् में कासी के हर दुआर पे 'बंदनवार' लागल हौ,आम के टल्लो आ नीम के गाछ भी बांधल गयल हौ। गंगा किनारे बेद-पाठ के सस्वर गूँज बतावेला कि नवका संवत् २०८३ हमहनी सभे के सनातन स्वाभिमान के एगो नया अध्याय के आरंभ हौ। नवरातर भर कासी, विंध्याचल से लेके बाबा बिसनाथ धाम ले भक्तन के ताँता लगल हौ। लोग संकल्प लेवत हउअन —"आपन भासा (कासिका), आपन पहनावा (बनारसी गमछा, लंगोटी आ धोती) अउरी आपन धरम संस्कृति के मरजादा के हमहनी के बचा के अक्षुण्ण रखब।"

उपसंहार :

इ नीम के तीतपन जीवन के सच्चाई हौ अउरी मिसरी के डली के मिठास माई के असीस हो। इ दुनो के मेल ही जीवन के संतुलन हौ। नवसंवत्सर २०८३ हमहनी के देह के निरोग राखी अउरी मन के पवित्र बनाई।

१.मंगलं भगवान विष्णुः, मंगलं गरुडध्वजः।
मंगलं पुण्डरीकाक्षः, मंगलाय तनो हरिः ।।

२.न विश्वेश्वर समो लिंगम्, न काशी सदृशी पुरी।
न मणिकर्णिका समं तीर्थं, नास्ति ब्रह्माण्ड गोलके ।।

३.न गायत्रीसमो मन्त्रो, न काशी सदृशी पुरी।
न विश्वेश्वर समं लिङ्गं, सत्यं सत्यं पुनः पुनः ।।

आखिर में हम इहे कहब कि

रजऊ ! आदि देव महादेव के आदि सक्ति आराधना
परब बसंत नवरातर हौ महान,
आपन नवका संवत्सर होवे से प्रकृति भी स्वयं निखरत
संवरत करेला ऊँ के के गुणगान ।।

❑❑

❍ वाराणसी (उ0 प्र0)

⇨ **(लेखक ख्यात साहित्यकार,पत्रकार, कवि संगे विश्व भोजपुरी संघ के अंतर्राष्ट्रीय महासचिव, सनातनी समाज के अध्यक्ष हउअन आ बुद्धिजीवी परिषद कासी के महासचिव)**

भोजपुरी के मान्यता:

केकरा पर करीं सिंगार कि पिया मोर आन्हर ?

शशि रंजन मिश्र 'सत्यकाम'

भाषा खाली बतकही के जरिया ना होला, बलुक ई कवनो समाज के आत्मा, संस्कृति, इतिहास आ सामूहिक चेतना के ढोअल करे वाली शक्ति ह। भारत जइसन बहुभाषी देश में हर भाषा आपन एगो अलग संसार समेटले बा। भोजपुरियो ओही में से एगो समृद्ध लोकभाषा ह, जवन उत्तर प्रदेश, बिहार, झारखंड से निकल के मॉरीशस, सूरीनाम, फिजी, त्रिनिदाद जइसन देशन ले फैल गइल बा। लगभग 20–25 करोड़ लोग भोजपुरी समझेला या बोलेला। बावजूद एह सब के, आज ई भाषा आपन घरे में आपन आस्तित्व के संकट से जूझत बिया। सबसे बड़ सवाल ई बा कि जब खुद भोजपुरिया समाज हिंदी आ अंग्रेजी के मातृभाषा माने लागल बा, त भोजपुरी के उत्थान कइसे होई?

भोजपुरी के जड़ बहुत गहिर बा। ई भाषा अपभ्रंश आ लोकभाषा के परंपरा से निकसल बिया। भोजपुरी के जनम 'मागधी अपभ्रंश' के पच्छिमी रूप से भइल कहाला। विद्वान लोग मानेला कि संस्कृत से पालि, पालि से प्राकृत, प्राकृत से अपभ्रंश आ ओकरा बाद आजु के भोजपुरी विकसित भइल बिया । ई सीधा सातवीं-आठवीं सदी के 'सिद्ध साहित्य' के भाषा से मेल खाले। गुरु गोरखनाथ आपन उपदेश में सरल भाषा के इस्तेमाल कइले, जवन आम लोग खातिर आसान रहे।

मध्यकाल में कबीर जइसन संत लोग अपना वाणी में लोकभाषा के प्रयोग कइले, जवन सीधा जनमानस तक पहुँचल। कबीर दास के उलटबाँसियन आ पद में भोजपुरी के पुरान रूप (पूर्वी बोली) साफ झलकेला। ओहिजे आधुनिक समय में भिखारी ठाकुर भोजपुरी नाटक के माध्यम से समाज के बुराई के सामने ले अइले। एही तरे राहुल सांकृत्यायन भोजपुरी के वैश्विक पहचान देवे में महत्वपूर्ण योगदान दिहलन।

ई सब बतावेला कि भोजपुरी खाली बोलचाल के भाषा ना, बल्कि एगो समृद्ध साहित्यिक आ सांस्कृतिक परंपरा वाली भाषा ह। भोजपुरी खाली बोले के माध्यम ना ह, ई संस्कारन के भाषा ह। सोहर, कोहबर, समदाउन आ जँतसार नियर लोकगीत ई साबित करेला कि ई भाषा सदियन से आम जनमानस के सुख-दुख के साथी रहल बिया।

आज भोजपुरी के सबसे बड़ा संकट बा- एकर आपन पहचान के। एक ओर गहिर परंपरा बा त दोसरा ओर बाजार के दबाव। एक ओर संत-परंपरा के विरासत बा त दोसरा ओर फूहड़ गीतन के भरमार। एक ओर विद्वानन के चिंतन बा त दोसरा ओर सोशल मीडिया के सतही लोकप्रियता। एह द्वंद्व में भोजपुरी फँस गइल बा।

आज भोजपुरी के नाम पर कइगो मंच आ मचान खुलल बा। भोजपुरी के मान्यता खातिर आंदोलन रही रही के जोर पकडेला आ फेर अपने नरमा जाला। भोजपुरी के मान्यता के सवाल संसदो में कई बेर पहुँच चुकल बा। अलग-अलग समय पर कई सांसद लोग संसद में भोजपुरी के आठवीं अनुसूची में शामिल करे के माँग उठवले बाड़े। ई मुद्दा भारतीय संसद में बार-बार गूँज चुकल बा, बाकिर अबले तक ठोस निर्णय नइखे भइल। हर बार आशा जगेला, फेर ठंडा पड़ जाला। एहसे आम जनता में निराशा बढ़त जात बा।

समय-समय पर अलग-अलग ठेहा के भोजपुरी के सेवा के नाम पर शक्ति प्रदर्शन वाला आयोजन होत रहेला। सबके आपन टोल बा सबके आपन गोल बा। केहू केहू के लंगड़ी ना बझावे। बस अतने संतोख होला कि मॉरीशस, फिजी, सूरीनाम, नेपाल आ खाड़ी देशन तक भोजपुरी बोलनिहार लोग बसल बा, आ यह तरह के मंच आ सामेलन ओहू लोग के एक जगह अपर जोड़ेला। एह सब सम्मलेन के अलोता मठाधीश लोग देश-विदेश में भोजपुरी के पहचान बनावे से जादे आपन पहिचान बढ़ावे के प्रयास करेला। एहसे भाषा के वैश्विक पहचान केतना मजबूत हो रहल बा जनता देख रहल बिया। सवाल सोझ आ साफ बा कि का ई सम्मेलन जमीन पर भाषा के असली समस्या-जइसे अश्लीलता, शिक्षा में अभाव, साहित्यिक कमजोरी- के हल कर पावत बा? अगर ना, त हेतना देखावा बेकारे के बा!

फेर त सवाल वाजिब उठी कि - का मान्यता मिल जाए से सब कुछ ठीक हो जाई? मान्यता जरूरी बा, बाकिर ऊ अंतिम समाधान ना ह। ऊ खाली रास्ता खोले के काम करी। असली काम त समाज के भीतर होखे के चाहीं। अगर हमनी के खुद भोजपुरी बोले में शर्म महसूस करब, अगर हमनी के अपने लइका -लइकी से हिंदी या अंग्रेजीए में बात करब, अगर हमनी के अश्लीलता के बढ़ावा देत रही, त मान्यता मिललो के बाद भाषा

के हालत ना सुधरी। माने मान्यता मिललो के बाद हाल उहे-
केकरा पर करीं शृंगार कि पिया मोर आन्हर!

अगर हम इतिहास देखीं, त साफ बुझाला कि भाषा के असली ताकत ओकर समाज में बसल बा। गुरु गोरखनाथ, कबीर, राहुल सांकृत्यायन- ई लोग बिना कवनो सरकारी मान्यता के भाषा के ऊँचाई पर ले गइल। आज जब हमनी के मान्यता खातिर संघर्ष करत बानी, त हमनी के उनकर देखावल रहियो इयाद रखे के चाहीं जवना लोक से जुड़ाव रहे, सादगी आ सच्चाई रहे। अब समय आ गइल बा कि हमनी के आत्ममंथन करीं जा। सबसे पहिले हमनी के अपना घर से शुरुआत करे के पड़ी। लइका-लइकी के भोजपुरी सिखाईं, अच्छा गीत-संगीत सुनाईं, लोक-संस्कृति से जोड़ल जाव। सोशल मीडिया पर गलत चीज के विरोध करीं आ सही चीज के बढ़ावा दीं। जब समाज खुद जागी, तब बदलाव अपने-आप आई।

दूसर जरूरी बात बा-एकजुटता के। भोजपुरी के नाम पर काम करे वाला सब लोग के एक मंच पर आवे के चाहीं। व्यक्तिगत स्वार्थ छोड़ के सामूहिक उद्देश्य के प्राथमिकता देवे के पड़ी। जब आवाज एक होई, तबे असरदार होई।

तीसर बात-संस्कृति के पुनर्जागरण करल जरुरी बा। लोकगीत, लोकनाट्य, कविता, कहानी-एह सब के फेर से जिंदा करे के जरूरत बा। गाँव-शहर में कार्यक्रम होखे, साहित्यिक गोष्ठी होखे, डिजिटल प्लेटफॉर्म के सही उपयोग होखे—एहसे भोजपुरी के असली रूप सामने आई। आज के साहित्य एगो अइसन चौराहा पर खड़ा बा जहाँ शब्दन के भीड़ त बहुत बा, बाकिर ओकर सही-सही प्रयोग के तरिका के अकाल साफ-साफ देखाई देता। जेकरा के कबो 'साहित्यिक सृजन' कहल जात रहल, उ अब 'कंटेंट क्रिएशन' में बदल गइल बा। अभिव्यक्ति के साधन जतना बढ़ल बा, ओतने साहित्य के आत्मा सिमटत नजर आवत बा। ई समय निस्संदेह साहित्य खातिर एगो गम्भीर "संक्रमण काल" बा, जहाँ गुणवत्ता से जादे संख्या आ लोकप्रियता के दबाव बढ़त जा रहल बा।

ई बात साँच बा कि आज के समय, खासकर भोजपुरी साहित्य खातिर, एगो चुनौतीपूर्ण दौर बा। गद्य के उपेक्षा, सतही अभिव्यक्ति आ लोकप्रियता के अन्हाराइल दउड़ से साहित्य के गुणवत्ता प्रभावित हो रहल बा। बाकिर हर संक्रमण काल में नया जीवन के संभावना छुपल रहेला। इतिहास गवाह बा कि ऊहे साहित्य टिकेला, जेकरा में युग के सच्चाई, समाज के पीड़ा आ मानवीय संवेदना के गहराई होखे। एहसे जरूरी बा कि भोजपुरी लेखक फेरु गंभीर अध्ययन आ चिंतन की ओर लवटें, गद्य लेखन के मजबूत बनावें, आ साहित्य के दिखावा ना, बल्कि बदलाव के माध्यम बनावें। साथे साथ, पाठको लोग के चाहीं कि ऊ सतही मनोरंजन से आगे बढ़ के गहन साहित्य के महत्व देवे। काहे से कि, साहित्य खाली शब्द ना, समाज के निर्माण ह—आ अगर ई चेतना जिंदा रहल, त भोजपुरी साहित्य हर दौर में आगे बढ़त रही।

चउथी बात- मातृभाषा खातिर सम्मान के भावना जागे। जब तक हमनी के खुद अपनी भाषा के सम्मान ना करब, तब तक दुनिया से सम्मान के उम्मीद बेमानी बा। भाषा के मान्यता दिल में पैदा होखे के चाहीं, तबे कागज पर लिखल मान्यता के कीमत होई।

आज हमनी के सामने चुनौती के साथे अवसरों बा। अगर हमनी के सही दिशा में कदम उठाईं, त भोजपुरी फिर से अपना गौरव के ऊँचाई पर पहुँच सकेला। बाकिर अगर हमनी के अबहियों ना जागनी, त धीरे-धीरे भाषा के असली पहचान खो जाई। अंत में फेर उहे बात-"केकरा पर करीं शृंगार कि पिया मोर आन्हर।" अब समय आ गइल बा कि 'पिया' के आँख खोले के। मतलब-समाज के जागरूक बने के। जब समाज जागी, तबे शृंगार के असली अर्थ समझ में आई। तब भोजपुरी के मान्यतो सार्थक होई।

❑❑

❍ द्वारका, नई दिल्ली

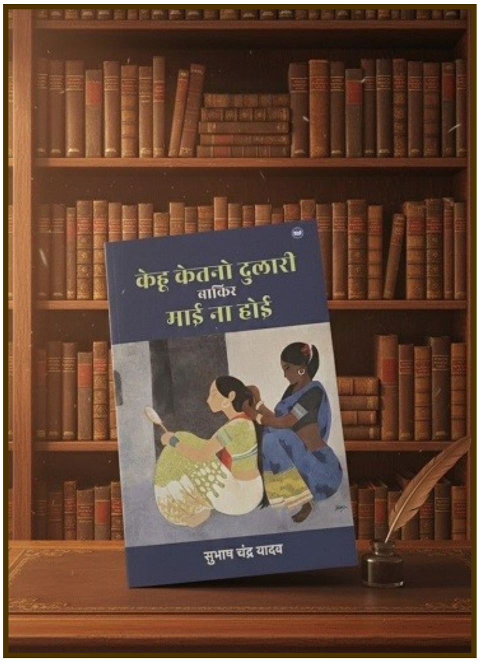

फितूर

राम यश अविकल

" चोर चमार गांव में फितूर मचा के रखले रहन सं साला…! बरियात से लवटते बटोराहे भेंटा गइलें सं। लाठी डंडा लेले सभे टूट परल ओहनिन पर। अकेले बंदूक लेले हमहीं। तीन गो के गोली मरनी सरवन के। बाकी लोग लाठी डंडा से मारत मारत भहरा देंले। खदेर खदेर के मरले लोग। केतना के कपार फूटल। केतना के हाथ टूटल। खूब बढ़िया से थूरा गइले सं। अब नेवर हो जइहे सं। एगो अउरी चीज देखलऽ लोग कि ना… मारे में कूरिमियों आ अहिरों एक दू गो रहन सं। उहो साला बहत गंगा में हाथ धो लेंले सं।" हरिया शान बघारत आपन बाप से बतावत रहे।

ओकर बाप राकेश राय कहलें," आरे… हम त दुआरे प से बइठ के सब देखते रही। सांच पूछ सं त आज हमार मन के बड़ी शांति मिलल। एहनी के चाल चलन देख के खून खउलत रहे। काम करे के पहिलही मजूरी चाहीं सरवन के। ढेर अइठन बढ़ गइल रहे एहनी के। पूरा भूमिहार समाज के माथा ऊंचा क देलऽ सं। जवन जवन नोकरिहा बा चमरा, ऊ त अउरी आग में मूतले बाड़ें सं। देखल सं , … सरवन के, बरियात जाय खातिर कतना बढ़िया बढ़िया सूट बूट झरले रहन सं। इहे ना जवन बनिहारी कर ता उहो झरले रहन सं। नीच जात होके हइसन पेन्हीहे सं, त हमनी के का पेन्हब जा ? हमनी के सोझा सूट-बूट पेन्ह के चलीहन सं ? हउ हरामी के औलाद चमार होके हमनी के सोझा रथ पर बइठी ? हमनी के देखा देखी करीहें सं ? जोडा घोड़ी वाली नया चमचमात रथ कतना महंगा कइले रहे। ओतना महंगा त हमनियों के ना करी जा। ई हमनी के नीचे नू देखावत बाड़े सं ? एहनी के अतना औकात ? ससुरन के आरक्षण से नोकरी का लाग गइल …? अपना के जज कलटर से ऊपर बूझत बाड़े सं। ई ससुरन के झुग्गी झोपड़ी में रहे के, त महल बना के हमनी के बरोबरी कर ताडे सं। आंख के सोझा बाइक आ कार प चढ़ के पेंह- पेंह हारन बजावत चलीहन सं त कइसे बरदास होई ? ब्रांडेड जूता मोजा पेन्हिहे सं त कतना दिन लोग आंख मूदी आ सही ? पहिले हमनी के देखते जूता चप्पल खोल के हाथ में ले लेत रहन सं। लेहाज करत रहन सं। आ डेरातो रहन सं। जब से सरकार गांवे गांव इस्कूल खोल देलस, पढ़ लिख के सनक गइले सं। पुरनका रीत रेवाज ई सब तुरत जात बाड़े सं। ओहू में सरकार नोकरी देके अउरी सनका देलस एहनी के। अउरी जतियन अभी ठीक बाड़े सं। आजो लेहाज करत बाड़े सं। देख के खटिया प से बइठल बा त खाड हो जात बाड़े सं। ओहनी में अकड़ नइखे। चमरे ढेर टेढ़ बाड़े सं। दू चार गो लाश गिरावल जरूरी रहे। एहनी के टेढई , एही तरी बीच - बीच में छोड़ावे के परी। कुछो होखे बेटा … बाकिर मन खुश कर देल सं। आज खूब चैन से नींन आई। जा… स… कवनो के डेराय के नइखे । जवन होई तवन देखल जाई। का करीहे सं ससुरा ?

ममिला सलतर पलतर पर गइल त थाना आईल। चमरटोली जा के सबके बेयान लेलस पुलिस। केस दर्ज भईल। मीडिया आवे से ममिला बड़ हो गइल रहे। हल्दीपुर सुर्ख़ी में आ गइल। पुलिस दबावे छिपावे ना पवलस। ओह लाशन के पोस्टमार्टम करा के लाश परिजन के सउपल गइल। डेढ़ दर्जन लोग के नाम परल केस में।

ई घटना के भइला महीना लागल रहे। रत्नाकर रिटायर होके आपन गांव हल्दीपुर अइले। विदेशी नस्ल के कुता पलले। संगे उहो आईल। गांव में दू - तल्ला पक्का के मकान। शहरों के पांश इलाका में मकान। बाकिर गांव में रहे के मन बनल। डी० एस०पी० रहन पुलिस विभाग में। दूइ गो बेटा सरकारी नौकरी में बड़ पद पर।

रिटायर आके अभी ठीक से घर में समानों ना सरिअइले रहन। तब ले मोहल्ला के एगो लइकी के अपहरण हो गइल। अभी मडर वाला केस सेराइलो ना रहे। चमार बेरादरी के लइकी इंटर के छात्रा रहे नन्हकी। पढ़ाई में बड़ा होशियार। माई बाबूजी के इकलौता। मजदूरी बनिहारी कके पढ़ावस। ऊ आपन माई बाबूजी से कहे," पढ़ लिख के हमहूं रत्नाकर चाचा लेखा पुलिस विभाग में अफसर बनब। तोहरा लोग के बनिहारी ना करे देब। देह धज्जा से बरियार आ लामो रहे। बड़ी जीवट किसिम के लइकी रहे नन्हकी। डेरात ना रहे केहू से। कब्बड्डी के बढ़िया खेलाडी। चमरटोली के लोग के जाय आवे के राह भूमिहार मोहल्ला से रहे। नन्हकी पढे जाय आवे त भूमिहार टोला के कुछ नवछटिया लइका उब चाभ बोल सं। इहो डेरात ना रहे , कडा जबाब देत रहे। एगो लइका बिरन राय नन्हकी के पटावे के फेर में रहे। बाकिर कवनो जना के लव ना लागे देवे। एक दिन बिरन राय नन्हकी के हाथ ध लेलस। बिगड़ल औलाद रहले रहे। हाथ छोड़ा के नन्हकी ओकरा के एक तबडाक कस के मरलस त बिरन राय के कान झनझना गइल। ऊ सपनो में ना

चिखाईब। बोल के चल गइल। छोट जात के ढेर लइकी भूमिहार आ अहिरान के लइकन से तंग आके इस्कूल गइल छोड़ देले रही सं। ओहनी के बाबूजी माई से शिकाइतो कइला प कवनो फरक ना। उल्टे डांट सुने के परे कि तोहनी के बेटा बेटी के पढला बिना कवन बिगड़ता बा ? सभन के पढ़ा लिखा देब सं त बनिहरिया कवन करी ?

ओह दिन जिला स्तरीय कबड्डी के मैच रहे। हिलसा शहर के कांलेज के मैदान में। नन्हकी के गांव से कोस भर से कमे दूर रहे। नन्हकी के टीम ओह मैच में भाग लेले रहे। नन्हकी खेलल। खेल ख़त्म होत होत मुंहलुकान हो गइल। हिलसा जाय आवे के टेम्पू के साधन। आखिरी टेम्पू खाड रहे। उहां पहुंचल त उहो भर गइल रहे। तनिको जगहा ना। ओही टेम्पू में बिरन राय आ ओकर दू गो संघतिया। नन्हकी बरियार फेरा में। ओकर गांव के बगले के गांव चैनपुर के एगो सहेली। दूनों डेगरगर चल देली सं। नन्हकी लगे छोटकी मोबाइल रहे। घरे फोन से बता देलस कि टेम्पू ना मिलल पैदल आव तानी जा। संगे चैनपुर वाली सहेली रानी बिया। बतिआवत जात रही सं। आधा दूर जाके रानी अपना गांव वाला राह में घूम गइल। नन्हकी आपन गांव के राह। राह सुनसान। थोरही दूर आगे बढ़ल त आदमी के भनक सुनाईल। बिरन राय आपन दूनों संगतियां के साथे टेम्पू से उतर के बीच राह में नन्हकी के फेर बइठल रहे। आवाज से नन्हकी बिरन राय के चिन्ह गइल। उहें थथम गइल। घरे फोन लगइलस। घंटी बाजल बाकिर फोन ना उठल। खतरा भांप के नन्हकी खेत में उतर के लमी ले लेलस। उहो चिन्ह गइल रहन सं नन्हकी के। अन्हार हो गइल रहे। खेत के आर में ठेस लागल गइल नन्हकी के। गिर परल। उहो तीनो पीठिया ठोक दउरलें सं। ओकरा गिर के उठत उठत में तीनो जुम गइले सं। घ लेलें सं नन्हकी के। गमछी से ओकर मुंह बान्ह के उठा लेंले सं।

देरी भइल त ओकर मतारी फोन करे खातिर फोन खोललस त तीन गो मिसकांल रहे नन्हकी के। फोन कइलस त घंटी बाजे, फोन ना उठे। नन्हकी गिरल त मोबाइल ओकर हाथ से छूट के फेंका गइल रहे। ओकर माई घबरा के रोवे लागल। अनहोनी के शंका बढ़े लागल। खोजाहट शुरू भइल। चैनपुर घूमे वाला राह पर तक खोजल लोग। फेर चैनपुर वाली सहेली के घरे जाके पूछल लोग। ऊ बतवलस कि हम त अपना गांव के मोड़ तक संगे ठीक ठाक से अइनी जा। हम अपना गांव के राह ध लेनी। ऊ आपन गांव के। सगरे खोजले लोग थाह पता ना चलल नन्हकी के। ओकर माई बाबूजी के रोअत बिलखत हालत खराब। कुछ लोग गुमशुदगी के रिपोर्ट लिखावे खातिर ओकर माई बाबूजी के लिया के थाना गइले। थानाध्यक्ष मानिक राय रिपोर्ट ना लिखलस। उल्टे गारी देवे लागल। आ कहलस," तोहनी के अपते नू कइले बाड़ सं। नीच जात होके तोहनी के लइकी पढ़ावला बिना कवन अकाज बा रे...? इहां बड़े बड़े जमींदार के बेटी के कहो बेटा बढ़िया से पढ़त नइखन सं। तोहनी के चल देले बाड़ सं लइकी पढ़ावे ? कवना इयार जोरे भागल के जान त ? छूटा मुहानी रही त भागी ना ? रिपोर्ट का लिखे के बा रे ? ओकर गरमी ठंढा जाई त अपने घरे आ जाई। जा सं इहां से। दोबारा मत अइह सं। ना त तोहनिये के केस कके बंद क देब हाजत में। मने मन थानाध्यक्ष के गरिआवत लवट गइले लोग।

रत्नाकर पूछलें," रिपोर्ट लिखा गइल नू ?

संगे रघु गइल रहन त बतवले," ना भईया ... रिपोर्ट ना लिखलस दरोगवा हमनिये के गारी देके भगा देलस। "

ई काहे... ?

कह ता कि नीच जात होके बेटी पढ़ईब सं त भागी ना ?

" अइसे कह ता... ? ई त बेजांय बात बा। एही से नू ओहनी के अपत बढ़ल बा। हाले मडर भइल आ फेर अपहरण। थाना में रिपोर्ट ना होई त कहां होई ? ठीक बा आज रात जादे हो गइल। काल्ह हम चलब साथे। "

गांव से दूर एगो नवविगहवा हाता में आम अमरूद के बडहन बगइचा। अतना घन कि दिने में रात लेखा लागेला। ओही में एगो छोट कोठरी। नन्हकी के ओही कोठरी में बान्ह के रखले रहन सं। रात सन्नाटा भइल। तीनो ओकरा से बलात्कार करे के उतजोग में लाग गइले सं। ओकर हाथ पीछे मेहे घूमा के बान्हल रहे। ओकरा के चिताने पारे में दिक्कत होत रहे। ओकर हाथ खोल देले सं। एगो ओकर हाथ कस के जंतले रहे। एगो हाता के दुआरी पर पहरेदारी में रहे। बिरन राय आपन पैंट खोल के, नन्हकी के पैंट नीचे सरकावत रहे। तसही नन्हकी बिरन राय के कस के लात मरलस। ऊ फेंका के देवाल से टकरा गईल। ओकरा माथा में जोर से चोट लागल। ऊ ओहिजे बेहोश हो गइल। जवन हाथ जंतले रहे तनी ढीला भइल। ओकर हाथ पर कस के दांत कटलस। ओकर हाथ के मांस सोहदा गइल। नन्हकी के हाथ छोड़ के जोर से चिल्लाईल... बाप रे बाप जान गइल। हाता के दुआरी पर जवन खाड रहे तवन डरे भाग चलल।

नन्हकी चटकवाहे उहां से नव दू एगारह हो गइल। भागत भागत अपना घरे कवाडी पर धड़ाक से मरलस। ओकर मतारी अभी रोअते रहे। कवाडी खोललस त बेटी के देख भर अकवारी धके रोवे

लागल। पूरा मोहल्ला जाग गइल आ सभे जुट गइल ।

विहान भइला रनात्कर नन्हकी आ ओकर बाबूजी के लेके थाना पहुंचले। एगो सिपाही इनिका मातहत में काम कइले रहे। देखलस त सलामी ठोकलस आ थानाध्यक्ष से इनिकर परिचय बतवलस। थानाध्यक्ष से रत्नाकर खुदे आपन परिचय देले। आ पूछले," काल्ह तू जाति सूचक गारी देके एह लोग के भगा देल, अइसन काहे? थाना में रिपोर्ट ना लिखाई,केस ना होई त कहां होई ? इहे ऊ लइकी ह। राते में ओहनी के चंगुल से छूट के भाग आइल। एकर इकबालिया बयान लिख । कवन कवन रहन सं सब बताई। "सब घटना विस्तार से बतवलस। आ कइसे छूट के भागल आ एगो के हाथ में दांत कटले रहे बता देलस।

केस भइल जल्दीए तीनो धरा गइले । एगो हाथ में पट्टी बन्हले रहे। दांत कटला के सबूत ओकर हाथ बतावत रहे।

केस होखे से भूमिहार समाज के लोग के बड़ा नागवार गुजरल। चरचा होखे लागल," चमरन अब थाना जाय लगले सं। केस करे लगलें सं। ई गांव खातिर नीक नइखे। गांव के मान मरजाद पर सोझे प्रहार बा। आरे... लइका रहन सं गलती करीए देंले सं त सोझे केस कर द ? कवनो बात विचार ना ? ई निम्मन नइखे होत। गांव में मुखिया सरपंच काहे खातिर बाड़े ? नीच जात होके केस करीहें सं त एहनी के मन बढ़ जाई। रोक ना लागी त माथा पर चढ़े लगीहें सं। ससुरा रत्नाकरा आईल बा रिटायर होके, उहे केस करवले बा। अतना दिन से कुछो भइल रहे ? जब से ई आइल बा साला ! सब चमरन के चढ़ा देले बा। ई साला गांव के भाईचारा खतम कर दी, केस मुकदमा करा के। एकरा से एक दिन बढ़िया से बतियावे परी। "

" रत्नाकरा के गोली मार दी का...? जइसन कह लोग।" हरिया कहलस।

ओकर बाप कहलें," अतना जल्दी ना रे... । अभी हाले में तीन गो के मरल सं। आ केतना के लाठी डंडा से मारत मारत गाह देल सं। ढेर हंगामा हो जाई। साल छव महीना अहथिर रह सं। "

रत्नाकर मोहल्ला में घूम घूम के बात करस। जायजा लेस। लोग में कतना बेचैनी बा। जुलुम अतना होत रहे कि जिनिगी एकक दिन जीअल भारी लागे। लोग बतवलें कि तीन दिन काम कइला पर दू दिन के मजूरी मिलत रहे। एक दिन बेगारी में चल जाय। पूरा मजूरी मांगला पर गारी मिले। केहू के मान सम्मान इचिको ना । गुलाम लेखा व्यवहार। भीतरे भीतर छटपटाहट रहे एह जुलुम से उबरे के। माथ झुका के रहब त ठीक। सिर उठवला प सब गति हो जाय। दलित के केहू के बेटी बहिन से छेड़छाड़ आम बात रहे। मन में आक्रोश धधकत रहे। बाकिर विरोध करे के साहस ना। केहू आगे बढ़ के बोले वाला ना। बिलाई के गरदन में घंटी के बान्ही? ई हाल रहे। रत्नाकर समझवलें," तोहरा लोग के आपसी मतभेद के कारण ई दुर्गति होत बा। एगो पिटात बा त दोसर देखत बा। एही चलते ओहनी के मन बढ़ल बा। जहिया सब लोग एकवट जईब , आ सभे मिल के कवनो अन्याय, जुलुम के खिलाफ आवाज उठाईब त जुलुम करे वाला कतनो बरियार होई सहम जाई। पचास घर के ई मोहल्ला बा। ई कवनो कम नइखे । एगो घर से एकक गो आदमी इकट्ठा हो जाई त ढेर बा। "

रकटू टहलें," ई बात ठीक कहत बाड़ भईया । इहे कारणे बा। अब तू आ गइल, जवन कहब तवन करब जा। का हो ठीक बा नू...?

सभे सहमति जतवलस।

सांझ के बइठक भइल । सभे एकवट के रहे के किरिया खइलें । विस्तार से जानकारी लेवे खातिर रत्नाकर पूछलें," ऊ जवन मारपीट भइल आ मडर भइल,काहे भइल ? करे वाला कवन कवन रहन सं ? के के देखले रहे।

रकटू कहलें, " ए भईया ... का कही जा ? अमरेश भईया के बेटा के बरियात परिछाय खातिर निकलल। दुलहा खातिर शहर से खूब बढ़िया आ महंगा रथ कइले रहन , जोड़ा घोड़ी वाला । घोड़ी बग बग उजर रही सं। रथ ओसही सजल रहे। बैंड बाजा बढ़िया कइले रहन। जानते बाड़, अमरेश भइया नोकरिहा। उनुकर बेटा जवना के वियाह रहे। ओकरो हाले में नोकरी लागल हां । खूब खरचा कके बरात सजले रहन। आगे आगे बैंड बाजा। पीछे दुलहा बइठल रथ। रथ पर बइठल त बुझाए कि राजकुमार बइठल बा। देखते बाड़ कतना गोर गार सुभेखगर बा। चलल परिछाय। राकेश राय के दुआर के सोझा रथ पहुंचल। उनुकर दुआर पर जानते बाड़ चार पांच आदमी बइठले रहे ला। रथ पर दुलहा के बइठल देख बमक गइले राकेश राय। ओहिजे रथ रोका गइल । बाजा बंद। सब बरतिहा सज संवर के निकलल रहे। हंगामा क देलस। गरियावे लगले सं, " ई नीच जात होके हमनी के सोझा रथ पर बइठी ? ई त पुरनिया के बनावल परम्परा के ध्वस्त करत जात बाड़े सं। आज त हद क देले सं। हमनी के देखा देखी आ बरोबरी करिहे सं ? ई त हमनी के नीच देखावे लगले सं। एहनी के मन ढेर बढ़ गइल । इलाज कइल जरूरी बा। रथ पर से उतार देले सं दुलहा के। कहले , " पैदल जो परिछावे खातिर। । गांव के सिवान के बहरी जाके तब रथ पर बइठिहे। चाहे जवन मन करे करिहे।

"बरियात के बात रहे। सब आदमी दांत पीस के रह गइले । कसहूं परिछावन कके बरात निकलल। बाकिर सबके मन तीत हो गइल। हुलस केहू में ना। पता चलल कि ओही रात भूमिहार समाज के बइठक भइल। ओह मे चमरन के सबक सीखावे के निर्णय भइल। बिहान भइला बरात लवट के गांव में घूसे के पहिलही लाठी डंडा लेके टूट परले सं। राकेश राय के बेटा हरिया बंदूक से गोली चलावे लागल। भगदड़ मच गइल। तीन आदमी के गोली लाग गइल। दवरे पर दम तुर देले। ढेर लोग के हाथ टूटल,कपार फूटल। ढेर लोग घवाहिल हो गइले। सबके चिन्हत बानी जा। "

"ओहनी के सजाय दिआवे के मन बा...? तोहरा लोग के कोर्ट में गोवाही देवे के परी।"

कुछ लोग के मन में डर बनल रहे। कारण कि मोहल्ला के आधा से जादा लोग के रोजी रोटी बनिहारी आ मजदूरी पर चलत रहे। भूमिहारे के खेत में काम कइला प पेट चले।

रत्नाकर पूछलें," मडर करे वाला धरइलन सं कि ना ?"

" ना भईया ...कहां एको दिन पुलिस आइल गांव में ? सब छूटा घूमत बाड़े सं।" रकटू बतवले।

" एकर मतलब कि थानाध्यक्ष के रोपया उझिल देले होइहे सं। एही चलते पुलिस कुछो नइखे करत ।ना करी कुछो। एह केस के आगे ले जाय के परी।"

रत्नाकर डी०एस०पी० से मिलले, आ कहले," सर! दुइ महीना हो गइल ई घटना के भइला। एको अपराधी आज ले धरइले सं ना। गरीब आदमी के न्याय ना मिले के चाही ,? "

डी०एस०पी० आश्वासन देले। जरूर न्याय मिली। जल्दी कारवाई होई।

दस दिन से जादे समय बीत गइल। कुछुओ ना भइल। ममिला जस के तस।

रत्नाकर एक दिन एस०पी० से मिले के मन बनवले। पता चलल कि नया एस०पी० आइल बाड़े। बड़ी तरख बाड़े। रत्नाकर गइले एस०पी० साहेब के कार्यालय में। नाम पता आ काम लिख के परची में भेजलें। थोरही देरी में बुलाहट भइल। कार्यालय में घूसते टेबल पर रखल नाम पट्टी पर उनुकर नाम बलवंत सिंह मीणा लिखल रहे। नाम पढ़ते काम होखे के उम्मीद में आत्मविश्वास से भर गइले रत्नाकर। सलामी ठोकले त ऊ समझ गइले कि ई पुलिस के आदमी हं, पूछ देले कि नोकरी बा कि रिटायर हो गइल ? रत्नाकर सब बतवले आ आपन परिचय देले आ ऊ घटना के विस्तार से बतवलें कि कतना जुलुम, अत्याचार हो रहल बा। अपराधी आजो छूटा घूमत बा। थाना कुछुओ करत नइखे।

एस० पी० साहेब चिहइले , " अतना बड़ घटना हो गइल आ अभी ले अपराधी छूटा घूमत बा ? हत्या कके छूटा घूमी ? ई कइसे हो सकेला ? त्वरित कार्रवाई होई।"

ओही रात में छापामारी भइल । सब अपराधी धरा गइले सं। छापामारी भइला आ अपराधी के धरइला से मनुवादी समाज सदमा में। कबो ना सोचले रहे लोग कि घर मे पुलिस घूसी।

रत्नाकर हिलसा कचहरी में जाके वकील से बात कइले। केई गो वकील से बतिअइले केस लड़े खातिर। कवनो वकील ई केस लड़े के तैयार ना। कहे लगले कि इहे दलित फलित के केस लडब जा। कतना पइसा मिली ? जवन मिली उहो कीचिर कीचिर कके। अतना दिन बाउर आ गइल बा। उहो अपने जात के खिलाफ लड़ें के बा। भूखे मर जाइब जा , दलित के केस ना लडब जा।

रत्नाकर बड़ा चिहइले। ई पढ़ल लिखल बुद्धिजीवी वर्ग कहाय के अतना घंटिहा सोच। इहे कहल गइल बा कि ऊंची दुकान, फीकि पकवान। का जाने लोग कइसे कह ता कि देश एकइसवी सदी में बा ? हमनी खातिर त उन्नीसवीं सदी बा। जब एह लोग के ई हाल बा त गांव में अनपढ़, कुपढ से कवन उम्मीद राखल जाव। संविधान निर्माता आज जीअत रहते त का करीत लोग। अंदाज लगावल जा सकत बा।

थोरे परेशान भइले। हार ना मनलें। पता करत करत पांच नम्बर टेबुल पर पहुंचले। ई टेबल अधिवक्ता राजन के रहे। केहू बतवले रहे कि ई दलित हवें। पूरे कचहरी में बढ़िया अधिवक्ता में इनिको गिनती बा। रत्नाकर आपन परिचय देले। गांव घर बतवले। ई वकील साहब के गांव हल्दीपुर से नियरे रहे। रत्नाकर के जवारिये रहन। रत्नाकर पूछलें," हल्दीपुर कांड के बारे में जानकारी त जरूर होई ? पेपर वोपर में ई घटना छपल रहे। "

हं... जानकारी त बा। रउवा ओह गांव के बानी, विस्तार से बताई कइसे कइसे ई कांड भइल ? ओह इलाका के जुलुम अत्याचार से अवगत रहन जा। ऊ कहलें," हमरा बीस साल से वकालत करत हो गइल। आज तक दलित ममिला के केस कबो कचहरी तक ना पहुंचल। चाहे मडर के कांड होखे चाहे बलात्कार के भा अपहरण के। दलित जान के कवनो बड़ से बड़ घटना पंचायते में जबरन सुलह समझौता एकतरफा करा दिआला। ई पहिला केस बा जवन कचहरी तक पहुंचल। इहो राउर जुझारूपन आ

निडरता के चलते। "

राजन कहलें," फीस के चिन्ता नइखे करे के। गरीब आदमी कहां से फीस दी। आपन समाज के पहिला केस आइल बा। हम जोरदार ढंग से लडब। जी जान लगा देब। खाली कागज पतर के खरचा एक बेर दे दीं। बाकी हम सम्हार लेब। खरचा जमा कके रत्नाकर अहथिर हो गइले।केस के बारे मे जानकारी समय-समय पर लेत रहन।

रत्नाकर रोज सांझ सवेरे आपन कुता लेके टहलस। ई उनुकर आदत में सुमार रहे। राह में राकेश राय के घर दुआर। उहे पंचायत के मुखिया । इनिका दुआर के सोझा से रत्नाकर आवस जास। दुआर के हाता ढेर ऊंच ना रहे । कुर्सी भा चौकी पर बइठला पर राह में जाय आवे वाला सभे लउके । ढेर लोग राहे में से पायलागी मुखिया,जी गोड लागतानी मुखिया जी कहे। गांव भर के इहे मेन राह। कवनो दोसर ना। रत्नाकर के पहिनावा आ कुता के देख राकेश राय जर भूंज जास। आपना मने में कहस," हमनी के सइयो एकड़ के जोतदार। ओहू में पंचायत के मुखिया । ई हमरा सोझा से जात आव ता। ना पायलगी ना राम सलाम कर ता हमरा के। खेत बधार से जवन मजदूरा हरवाही चरवाही, बनिहारी कके आव ता। ओहनी के प्रणाम कर ता। हमरा के एकदमे ना। ई हरामी के औलाद हमरा के कुछ बूझते नइखे । एह ससुरा के सुअर पाले के त कुता पलले बा। उहो देसी ना विदेशी नसल के। अइसन कुता हमनी जइसन जमींदार के दुआर पर नू शोभी। कबो कबो राकेश राय जानबूझ के रत्नाकर के सोझा आ जास कि पायलगी करी। बाकिर कुछुओ ना। ऊ कगरिया के चल जास। राकेश राय ओरे तकबे ना करस। बड़ी बेइज्जती महसूस करस। ई एक दिन के नइखे । रोज के बात बा। एकर घमंड नेवर करही के परी।

राकेश राय के धन दौलत अफरात रहे। एके बेटा उहो रत्नाकर के प्रयास से मडर केस में जेल में। ई खींस त रहले रहे। मुखिया होखे के घमंडो । एक दिन ठकठेन बेसाहे खातिर रत्नाकर के दुआर पर आके धमकावे लगलें , " तोर कुता के भूके से रात के नींन हराम हो गइल । कुता के सम्हार के रख। ना त ठीक ना होई। ना त हम ओकर आवाज बंद क देब। " रत्नाकर आ राकेश राय कबो सहपाठी रहे लोग। ओहू घरी दूनो जना में झगड़ा होखे।

" ए मुखिया हमार घर से तोहार घर अतना दूर बा कि बाघो गरजी त उहां तक आवाज ना जाई। ई त कुते हं। जहां तक नींन के बात बा त हमार कुता के भूके से ना तोहरा बेटा के जेल जाय से नींन नइखे आवता। "

"तब का हम झूठ बोलत बानी ? हम कह दे तानी , कुता हटा दे, चाहे बेच दीं ना त अइसे ढेर दिन ना चली। हम चेता दे तानी। जहां तक बेटा के जेल जाय के ताना मारे ताडे । मरदे नू जेल जाला। ऊ कतना दिन रही जेल में। फेर आई कवनो के गोली मारी। हम त कतना बेर जेल गइल बानी। का फरक पड़ता ? आजो मुखिया बानी। छूट के आई त अबकी बेरा ऊहे मुखिया बनी । कवन हराई ? कवन खाड होई हमरा खिलाफ ? "

राकेश राय के बोली सुन के मोहल्ला के ढेर लोग जुट गइलें। पहिले डरे केहू निकलत ना रहे। ना सोझा केहू अकड़ के खाड होत रहे। सबलोग एकवट गइल रहे। रत्नाकर त अपने पुलिस विभाग के आदमी। डर का होला ऊ जानते ना रहन। अगर उरेब बोलते त उरेब सुन के जइतें ।

" जहां तक तोहरा खिलाफ खाड होखे के बा त तोहार चुनौती हमरा मंजूर बा। अबकी बेरा हम खाड होइब चुनाव में। राकेश राय कुछ ना बोललें।

राकेश राय के अतना चलाना रहे कि दूर से देखिये के लोग बइठल बा त खाड हो जात रहे। दलित समाज के लोग उनुका सोझा तन के खाड ना होत रहे। आज पहिला बेरा एगो दलित उनुका सोझा खाड होके जबाब देलस। समय के नजाकत राकेश राय समझत रहन। इहो ऊ समझत रहन एकरे चलते घर में पुलिस घूसल आ बेटा जेल गइल। जबाब सुन के तिरमिरा गइलें । ई देख के मोहल्ला के लोग के हौसला बढ़ल।

मडर आ अपहरण में जेल में जाय से सदमा में रहे मनुवादी लोग । सपनों में ना सोचले रहे इहो दिन देखे के मिली। ई जातिवादी धनपशुअन खातिर इज्जत के सवाल बन गईल रहे। ओहनी के जमानत करावे खातिर हिलसा कचहरी के आधा दर्जन नामी वकील भिडावल गइल रहे।

पीड़ित पक्ष के वकील अकेले राजन । लड़ाई धुआंधार रहे। जब मनुवादी लोग के पता चलल कि चमरन के केस ओहनी के जाते भाई लडता। उनुका टेबल पर जाके कहलें सं," का वकील साहब... ई चमरन के केस काहे लडत बानी ?"

" काहे जी चमार के केस ना लडे के चाही ? ई लोग खातिर कोर्ट कचहरी, नियम कानून नइखे ? ई लोग आदमी ना ह लोग? उहो मडर केस बा, का चाह तानी जा मडर होत रहो, बलात्कार होत रहो, अपहरण हो जाय ? ई लोग न्याय खातिर केसो ना करे ? कतना दिन लोग जुलुम सही ?"

" ए वकील साहब... ई केस कके हमनी के गांव के भाईचारा खराब क देलन सं। गांव में पंच सरपंच पंचायत काहे खातिर बा? "

" ई कइसन भाईचारा हं जी... ,? ओहनी के मडर होखो, बेटी बहिन के इज्जतो लुटाय। रोज गारी गलोज सुने परे,आ पीटइबो

करे। आ केसो ना कर सं ? जे मडर कर ता, बलात्कार कर ता, बात बात पर मारपीट कर ता ,ओहनी के जानवरो के बरोबर मोल नइखे ऊ भाईचारा बनावत बा ? तोहरा लोग के लइकन के गंदा हरकत, छेड़खानी से तंग आ के केतना लइकी इस्कूल गइल छोड़ देली सं। ई सब भाईचारा में आवे ला ? मडर करे वाला अपहरण करे वाला, छेड़छाड़ करे वाला भाईचारा बनइले बा कि बिगड़ले बा ?" भाईचारा के मतलब आपसी खानपान, संगे उठन - बइठन , बात - विचार, मान- सम्मान होला। ना कि भेदभाव, छुआछूत, ऊंच नीच। सुख दुख में भागीदार बने । अइसन बा गांव में ?

" ए वकील साहब...! ई कइसे होई कि जवन पुरखे पुरनिया के बनावल परम्परा चलत आवता ऊ छोड़ दी जा ? ई त कबो ना होई। "

" तब का मन बा ? दमन उत्पीड़न मडर बलात्कार करे के एकाधिकार बनल रहो ? ऊ सब लोग सहत रहो। चूं तक ना करे केहू ? ऊ आदमी ना ह लोग ? अब भुला जाय के परी ऊ पुरनका परम्परा। जमाना बदल रहल बा। देश में संविधान लागू बा। देश संविधान से चली। मनुस्मृति से ना। "

" ई संविधान का होला... ? ई हमनी के ना जानी जा, ना मानी जा। जवन पहिले से परम्परा चलल आवता ऊहे चली। "

" तब कचहरी अइला के का जरूरत बा ? ई कचहरी संविधान के देन ह। ई संविधाने नू कचहरी देखा देलस, जेल देखा देलस। "

" ए वकील साहब ओहनी के केस लड़ के हमनी के माथा पर मूतवाईं मता। ऊ हमनी के कुछो बुझिहे सं ? के मालिक ह, के गउंवा ह ? भले हमनी ओरे से पइसा लेलीं आ केस छोड़ दीं ।जतना मांगब ओतना उझिल देब जा। "

" हम खाय भर कमा ली ला। तोहरा लोग के रोपया के लालच नइखे हमरा। हम बिकाय वाला ना हईं। हमरा के कीनल मोसकिल ना, नामुमकिन बा। हमरा ई नइखे बुझात कि केस काहे छोड़ दी ? तोहरा लोग के ओर से आधा दर्जन नामी गिरामी वकील खाड होइहें। एने से हम अकेले, तबो काहे डर बनल बा ? कोर्ट फैसला करी। दूध के दूध, पानी के पानी हो जाई। एह में कवन बड़ बात बा? "

" ए वकील साहब... ! ढेर कथा सुने खातिर नइखी आइल जा हमनी के। बस्स केस से हट जाईं। ई रउवा खातिर निम्मन रही। ना त ढेर बिगड़ जाई राउर। ई चेता के जा तानी जा। फेर हमनी के दोष ना। "

" केस ले लेनी त ना छोडब। तोहरा लोग के जवन बुझाई तवन कर लिह लोग।"

"इहां से लवट के ऊ सब हल्दीपुर चमरटोली में जाके धमकवले सं, " जवन गवाही देवे जाई ओकरा के दिने दुपहरिया काट देब जा। पहिले चेता के जा तानी जा। "

सांझ के रत्नाकर कतही से अइले त ई सब जानकारी मिलल। विहान भइला कचहरी जाके राजन से भेंट कके गवाहन के धमकावे वाला घटना के विस्तार से जानकारी देलें। गवाहन के सुरक्षा के मांग राजन कइले जज साहेब से। उनुकर मांग मान लिआईल। सुरक्षा देवे खातिर प्रशासन के आदेश भइल। राजन जल्दीए गवाही करा देले। ओने के वकील जमानत खातिर आवेदन कइले रहे लोग। हिलसा कचहरी के सब नामी गिरामी वकील लागल रहन। ऊ लोग निहचिंत रहे कि बड़े बड़े वकील के सोझा एगो चमार टिक पाई ? हवा में सुखल पतई उधिया ला, ओसही इहो उधिया जाई।

जमानत खातिर जहिया बहस रहे, ओह दिन ढेर लोग फूल माला लेके गांव से आइल रहे लोग। ओह छवो वकील के बहस के बाद, राजन के बहस शुरू भइल आपन ज्ञान आ तजुर्बा के भरपूर उपयोग कइले। आपन तर्क के बौछार से सब लोग के चकित कर देले। राजन के तर्क सुन के जज साहब के मंद मंद मुस्कान देख के ओह पार्टी के वकील के चेहरा पर हवाई उड़े लागल। सबके जमानत खारिज हो गइल।

ओह लोग के अब देह में तितकी लेस देलस। कोर्ट से निकलते राजन संगे ऊ लोग धक्का मुक्की करे लगले। मारपीट के नौबत आ गइल। राजन के आदमी संगे रहे सं सावंग ना लागल।

❑❑

पकड़ी , आरा ,भोजपुर , बिहार

भाषा प्रवीन आ समय के नब्ज प नजर राखे वाला रचनाकार: जितेन्द्र कुमार

कनक किशोर

बहुमुखी प्रतिभा के धनी श्री जितेन्द्र कुमार जी का नाम भोजपुरी साहित्य में परिचय के मुहताज नइखे। बड़ रचनाकार के संक्षेप में परिचय देल एगो कठिन काम ह। जितेन्द्र कुमार साहब के कृतित्व आ व्यक्तित्व दूनों विशाल बा। तबहूं जदी गद्य के रूप में जितेन्द्र कुमार जी के संक्षेप में परिचय देवे के होई त अतने कहब कि जितेन्द्र कुमार समय के साथ कदमताल करत चले वाला रचनाकार के नाम ह। जेकर आँख टिकल रहेला समय के नब्ज पर। कविता होखे भा कहानी इहाँ के एगो विशेष शैली बा, विशेष पहचान बा। माटी आ गाँव, प्रतिरोध के बयान, प्रकृति अउर पर्यावरण, बाजारवाद के मांदर के थाप, धर्म के नाम पर झूठा जाप, जनवाद के हुंकार,जीवन के लय के बिगड़त सुर - ताल सबकुछ मौजूद मिलेला कुमार के साहित्य में। इहाँ के कल्पना के दुनिया में विचरण करे वाला रचनाकार ना हईं। ठोस धरातल पकड़ चले वाला हईं। कुमार के साहित्यिक अभिव्यक्तियो अइसन संवेदनशील मुक्त विचार युक्त होला जे जीवन के राह में बिखरल अनेक रंगन से पाठक के मुलाकात करावेला। इहाँ के रचनन समय के सत्य के उकेरत, सामाजिक ताना-बाना से बुनल सामयिक समस्यन से मुखातिब होके जन के सपनन के बयान करेलीं सं आ ओकरा के साकार होखत देखल चाहेली सं।

सर्वेश्वर दयाल सक्सेना के 'चाँदनी की पांच परतें ' की तरह लोक आजुवो अभिशप्त बा ओह परतन के बीच जीए के। बाकिर लोक मन में प्रश्न बा काहे सहीं? कब ले सहीं ? कवि जितेन्द्र कुमार ओह सत्य के खूब उकेरले बाड़न आपन कवितन में। कुमार समष्टि चित्त के लेके कविता रचलें। साहित्य समष्टि चित्त के ही प्रतिफल ह। कुमार अपना साहित्य में मनुष्यता के बात करेलन। चाहे कवनो विचारधारा के लेखक होखे मनुष्यता के पक्ष में खड़े रचना कालजयी होली सं। कुमार जनजीवन में उतर के समस्यन के नजदीक से देखि के आपन अनुभूति के स्वर देले बाड़े अपना साहित्य में। कुमार के कवितन बोलेली सं अपराध निर्भय बा।न्याय सुतल बा।मीडिया बिकाइल बा। सामाजिक ज्वलन्त सवालन के कविता के रूप देले बाड़े कवि जितेन्द्र जी। आ उठइले बाड़े जनतंत्र के सवाल, नारी के साथ पक्षपात, सामंतन के क्रुर व्यवहार, झूठा क्रांतिध्वजी पर, उजड़त जंगल - पहाड़, सूखत नदियन, विलुप्त होखत गांव पर सवाल अपना साहित्य में।

सत्ता अउर प्रभावशाली तबका जब आम जन के पीछे ढकेल वंचित रखल चाहत बा ओकर अधिकारन से तब जितेन्द्र जी समझावल चाहत बाड़े अभिव्यक्ति के माध्यम से कि आम जनता में समाज के बदल देवे के शक्ति निहित बा। कुमार साहब ई समझावल चाहत बाड़ें कि जब एगो आम जन सामाजिक व्यवस्था बदलल चाहेला, सत्ता में हिस्सेदारी चाहेला, नया समाज बनावे के संकल्प करेला, आपन जमीन आ आपन आसमान चाहेला तब ओकर उठत आवाज के सत्ता अउर सामंत कुचल देल चाहेला। कुमार के साहित्य में आंचलिक खुशबू आ माटी के बोली के मिठास सबसे बड़ विशेषता बा। जितेन्द्र जी साहित्य धर्म के निर्वहन कइले बाड़े ई बाति उहाँ के साहित्य खुद बोलेला।जे पीड़ित बा ओकरा पक्ष में खड़ा होखल साहित्यिक धर्म ह। साहित्यकार के ओकर पक्ष लेल, लिखल दायित्व ह।सांच कहल जाए त जवन रचनाकार पीड़ित के पक्ष ना लेला ऊ वास्तव में स्वतंत्रता के पक्ष में काम ना करेला।हम पूरा विश्वास से कह सकींला कि इतिहास, समाज, समय आ राजनीति पर गहिर नजर रखे वाला जितेन्द कुमार जी के साहित्य स्वतंत्रता के पक्ष में मजबूती से खाड़ होखे वाली साहित्य ह। आजु के समय सांच बोलल कठिन हो गइल बा जितेन्द्र जी अइसनो में अपना साहित्य में समय के सांच के अभिव्यक्ति एगो बहुत बड़ बाति बा।

जितेन्द्र कुमार आलोचना में भाषा के खाली साहित्यिक माध्यम ना मानीं बलुक ओकरा में सामाजिक चेतना आ संस्कृति के संवाहन क्षमता देखीं ना। उहाँ के आलोचना में भोजपुरी भाषा के परंपरा, ओकर संरचना आ ओकर सामाजिक उपयोग के गहन विवेचना मिलेला। ऊ विवेचना ना खाली भाषा के समझ बढ़ावेला, बलुक ओकरा के एगो जीवंत सांस्कृतिक धरोहर बनावेला। कुमार साहब कवनो रचना के नकारात्मक भा सकारात्मक विवेचना करींला त सप्रमाण करींला उहो अकाट्य तथ्यन के साथे। मुँह देखल आलोचना ना करीं। खुद कहींना हम झाल बजावे वाला आलोचक ना हईं। भोजपुरी उपन्यास पर इहाँ का आलोचनात्मक काम अबतक के मील के पत्थर बा।

जितेन्द्र कुमार के योगदान भोजपुरिया साहित्य में ना खाली भाषा आ शैली के समृद्धि कइलस, बलुक ओकरा में सामाजिक चेतना के एगो नया आयाम जोड़लस। उनका साहित्य आ आलोचना में भाषा, संवेदना आ समाज के गहन समन्वय देखल जा सकेला। कवि , कहानीकार, वरिष्ठ आलोचक आदरणीय जितेन्द्र

कुमार जी के अब ले प्रकाशित कृतियन के सार देखला पर हिंदी में कविता -संग्रह: ६(छव)/कहानी संग्रह:दू/डायरी:एक/ आलोचना:चार/
संपादित पुस्तक: तीन /आ भोजपुरी में कहानी संग्रह:एक/ भोजपुरी में आलोचना 1। वर्तमान में इहां के भोजपुरी सम्मेलन पत्रिका के संपादनो करत बानीं। कुमार साहब के परिचय सार देत कहब कि ' जितेन्द्र कुमार जी एगो भाषा प्रवीन आ सिरजनशील रचनाकार के नाम ह जे एगो बरियार अध्येता के साथे हिन्दी - भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर के रूप में साहित्यांगन में उपस्थिति दर्ज कइले बाड़ें। भोजपुरी के लोक - संस्कार से संस्कारित आ सिंचित अपना मातृभाषा के प्रति इहाँ में अथोर प्रेम दिखाई पड़ेला। एगो बेजोड़ अध्येता कुमार साहब के रचनन में अनेक भाषा के जानकारी के प्रभाव दिखाई पड़ेला। सहजता आ सादगी के जीवंत व्यक्तित्व कुमार साहब से साहित्य आ जीवन में हमरे ना बहुत लोग के कुछ जाने आ सीखे के मिलल बा। भोजपुरी आ हिन्दी साहित्य में समान रूप से सृजन रत बानीं। सिरजनशीलता के साथ एगो कुशल संगठन कर्ता हईं। वर्तमान में जन संस्कृति मंच, बिहार के अध्यक्ष, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन के कोषाध्यक्ष, सम्मेलन पत्रिका के संपादक के काम इहां के मजबूत कंधा पर बा। साहित्य के समर्पित, विचारधारा के पोषक, संयमित जीवन जीए वाला व्यक्तित्व के नाम ह जितेन्द्र कुमार। काव्य रूप में जितेन्द्र कुमार जी के परिचय देत कहब -

कवि, कथाकार, आलोचक, भोजपुरी माटी के लाल
श्री जितेन्द्र कुमार कइले, साहित्य जगत में कमाल
जसम से जुड़ल रहल जिनिगी,भोजपुरी इहाँ के जान
सांचे हईं मानवता पुजारी,पास रहल ना जग के जाल।

सरकारी सेवा में रहलें, गजब के बा अनुभव भंडार
सोन किनारे गाँव में बचपन, माटी से रहल सरोकार
हिन्दी-भोजपुरी में रचनीं, विधा अनेकन एक समान
गाँव, किसान, माटी से जुड़ल, इहाँ के हईं रचनाकार।

संपादक, सम्मेलन पत्रिका, अभाभोसास के कर्णधार
दिनचर्या नियम से बन्हल,छोट- मोट खुशहाल परिवार
सेवानिवृत्त संयमित जिनिगी,समर्पित साहित्य के नाम
सीखनीं इहें के देखि के, रूचल हमरो साहित्य संसार।

❑❑

❍ राँची, (झारखंड)

सविता गुप्ता

खोंइचा

राधिका देवी ,बेटी के बिदाई के तैयारी में लागऽल रही...जइसे जइसे बिदाई के बेरा होत जात वइसे वइसे उनकर अँखियाँ से लोर के धार झरे लागऽल कतऽनो रोके के कोशिश करऽस बाक़ी लोर तऽ अइसन बहे जइसे कौनो नदी के बाँध टूट गइल होखे।अचरा से लोर पोछऽत जास आ जीरा ,हरदी,दूबी चाँदी के सिक्का थरिया में सजा के बेटी के कमरा से निकले के राह जोहे लगऽली।

“समय हो गइल बूचिया का करऽ तड़ू?” रमेश बो किवाड़ खटखटा के पुकरली...।
“आवातऽनी भौजी...”सिया बोलऽली।

दस मिनट में सजल बजल सिया बेटी हंसऽत हंसऽत आपन परस संभारऽत बाहर निकल के माई से ...कहली ... मम्मी !तू हमार बक्सा के चाभी दे दऽ पर्स में रख लीं...आ रोए का जरूरत बा! जइसे तीन साल से नोकरी में बाहर जात रहीं... वसहीं समझऽ।

चलऽ दऽ का कहाला...आ एगो रेडीमेड सुन्नर गोटा पट्टी से साजल खोइचा रखें वाला बेगली माई के आगा बढ़ा देली। माई खोंइचा भरत रहली क़हत जात रहली जीरा जइसन घर गमकत रही,चाउर जइसन कबो अन्न के कमी ना होई,हरदी के गाँठ से बुचिया के अमर सुहाग रही आ दूबी से घर हरल भरल रही ...बेटी सुन के बोलऽली हमनी के रीति रेवाज के पाछे केतना सुन्नर बिचार छुपल बा इ हमरा पते ना रहे ...माई चले के बेरा कहली

“बेटी,ठीक से रहिए...मुँह बंद रखिए...बढ़ छोट के इज्जत करिहे...”राधिका देवी ,बेटी के खोईचा में संस्कार बाँध के करेजा से लगा के बिदा कइली ।

❑❑

❍ राँची झारखंड

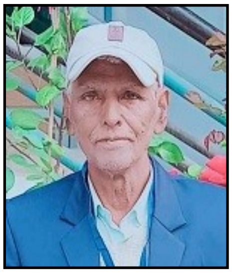

रामप्रसाद साह

जुठ परयोग

सडे रहे वाली, घुलल मिलल कुसुमी आ मृदुला गाँवके जुवती लोग लिपिस्टिक के सुन्दर विज्ञापन से परभावित होके पढ़े लगलीसन् " कुछ चीज के प्रकृति लाल बनवले बा ओही में से हमनी के उत्पादन बाटे।" प्राय लिपिस्टिक लाले होला। लाल ओठ आ गुलामी गाल के चाहना जवन भी जनी के होला । सुन्दरी लोग (मोडेल) के हथियार बनाके उत्पादक कंपनी सब विश्व के जनी समुदाय के आपन बाजार क्षेत्र कायम करेला। माने लिपिस्टिक परयोग के विषय में प्रतिक्रिया करेवाला नगन्य होला ।

कुसुमी लिपिस्टिक के परयोग हरदम करेली ।उनकर कान्हा के बेग में लिपिस्टिक हरदम उपस्थित रहेला । जरूरत के बखत घँसेला । मृदुला से सब बात मिलत जुलत भेलोपर लिपिस्टिक के विषय में धारणा फरक हो जाला । लिपिस्टिक के फैसन बुझेवाली मृदुला का जुठ लिपिस्टिक बार बार परयोग कइल घीन लागेला , मन ना मानेला माने कुसुमी का ओइसन ना लागेला ।

मृदुला कहेलिन-- स्वास्थ्य खातिर वैज्ञानिक अनुसंधान सब दूर तक पहुँच के भी जुठा लिपिस्टिक ओठ से सटावे के क्रम जारी बा ।ना धोय के, ना पखारे के रोज रोज जुठा परयोग।

❑❑

❍ कलैया, नेपाल

मनोकामना सिंह

पूजा घर

मनोहर दूनों हाथ जोड़ के भगवान से कहलें " प्रभु हमरा के एगो बड़हन मकान दिहीं ताकि हम रउरा खातिर अलग से पूजा घर बना के राउर पूजा कर सकीं। "
" हम तहार ई काम नइखीं कर सकत " भगवान कहलें ।
" काहे प्रभु " मनोहर अचकचा के पूछलें ।
" अभी तूं त हमरा के हरदम अपना आँखि के सोझा राखे लऽ । भोरे,सांझ के हमार पूजा करेलऽ । हमरा आगा माथ नवावे ल ।हम जे तहरा बड़हन मकान दे देबि त तूं खाली भोर आ सांझ के हमार पूजा करबऽ। हमरा आगा हर समय माथ ना नवइबऽ। आउर समय हमरा के अपना आँखि से दूर रखबऽ " भगवान जबाब दिहलें।
" लागता कि भगवानों कलजुगी हो गइल बाडें
हरदम साथ रहला के लोभी हो गइल बाडें।"
मनोहर मने मन सोचलें।

❑❑

❍ जमशेदपुर, झारखंड

धीरेन्द्र पांचाल

तीन लोक क मालिक

बइठल हउआ तू शमशान
जइसन तोर अनुयायी बाबा ओइसन तू भगवान ॥

राम से डर लागेला ,
हउवे मर्यादा क बात
बाकि तोहसे बतियावे में
मजा आवेला नाथ
तोहके देख के लगेला बाउ बइठल हवे दलान ।
जइसन तोर अनुयायी बाबा ओइसन तू भगवान ॥

बड़े बड़े लखपतिन क होला
सुगर बीपी जाँच
जेकरे एक्को धुर ना हउवे
सुते मानस बाँच
घूम घूम रसगुल्ला चाभे तिलक हो या भतवान ।
जइसन तोर अनुयायी बाबा ओइसन तू भगवान ॥

कइसन तू भगवान की खाली
सिलफर पे खुश होला
पान सोपारी ध्वजा नारियल
ना चाही का बोला
हम निर्धन के खातिर सबसे सस्ता तू भगवान ।
जइसन तोर अनुयायी बाबा ओइसन तू भगवान ॥

❑❑

❍ भीषमपुर, चकिया,चंदौली

ठीक नइखे

मदनमोहन पाण्डेय

बहुत पोल्हवनीहँ,मानल ह नाहीं,
मेरवनी बुझाता,छानल हऽ नाहीं।
झनकि के,झिंझोरि के
झटकि के जे चलि गइल,
ओके अगोरल ठीक नइखे।।

बिगड़इल चउवा हऽ,तुरा के भागल बा,
पगहा धइलहूं पर,झिपा के भागल बा।
अंखड़ि के,पंहड़ि के
हंकड़ि के चलि जाई,
छुटहा छोड़ल ठीक नइखे।।

तितहवा लौकी हऽ,नीमि पर चढ़लिबा,
अंगरेजी खादि पा के एतना बढ़लि बा।
जरी से छांटि के,
टुक्की-टुक्की काटि के,
घूरा में फेंकि दीं,
तेले में बोरल ठीक नइखे।।

पुरनकी भीति हऽ,गिरल बा भरभरा के,
नवकी उचुम्ह तिया, कइसन अगरा के।
घुघुवां माना,उपजे धाना,
का करी पूलिश
का करी थाना,
जऽरि कोड़ल ठीक नइखे।।

❑❑

❍ कुशीनगर,उ.प्र.

भोजपुरी साहित्य सरिता

श्याम कुंवर भारती

चइता

((शिवनरायणी धुन) _ सरकल हो ।)

सरकल सरकल सरकल हो मोरा माथे से अंचरिया ।
पिया बिना रामा होई कइसे गेहूं के कटनिया।
केकरा खिआइब रामा आम के चटनियां।
झरल झरल झरल हो खेतवा गेहूं के कियरिया ।
सरकल हो मोरा माथे से ....।

घमवा से जरे गोड़वा मुंहवा झउंसाला
पिया निर्मोहिया तोहके कुछउ ना बुझाला।
टूटल टूटल टूटल हो गेंहुआ ढोवे में कमरिया।
सरकल हो मोरा माथे से ....।

हाली घरे आवा पिया कटनी करवावा।
दुखवा तू बुझा हमरो हमके ना रोवावा।
सुखल सुखल सुखल हो होंठ चइत दुपहरिया।
सरकल हो मोरा माथे से.........।

गेहूं ना कटाई पिया नाही रोटी मिल पाई।
घर परिवार देशवा सब भूखे रही जाई।
बहकल बहकल बहकल हो चइत मास पुरवइया।
सरकल हो मोरा माथे से अंचरिया ।

❑❑

❍ बोकारो, झारखंड

उदय शंकर प्रसाद

मरद

ना घर मे गरज बा, ना बाहर मे गरज बा
मरद हई बस, मरद, भइल हि हरज बा
कबो मेहरी के गहना, कबो चउका के लहना
कबो लइकन के कहना, कबो सबके खेलवना
हई सबके उधारी, केहू कुछ ला पुकारी
हम सबके करज हई, हा हम गरज हई

कबो केहू के गारी, कबो घर के तरकारी
कबो मतलब के इयारी, ना कह के बीमारी
हई आशा के गगरी, ई मतलब के नगरी
"ना" ला हरज हई, हा हम गरज हई

कबो बन के चिंगारी फूटी हारी-हारी
कबो हक मे कटी अउर बटी बारी-बारी
हई सगरन के सगरी ना देले पे झगड़ी
हर दवा के मरऽज हई हा हम गरज हई

कबो बन के भिखारी भटकी मारी- मारी
कबो थक के जे हारी ना घर ना दुआरी
हऽ जिंदगी जुआरी खेले पारा-पारी
हा सबके फरज हई हा हम गरज हई

कबो हमही हई गारी कबो खुद के हि मारी
कबो केहू धुतकरी ना समझे लाचारी
कटी बारी बारी अउर टूटी तारी तारी
हम "ना" ला हरज हई हा बस गरज हई

❑❑

❍ बगहा,प. चम्पारण , बिहार

लालबहादुर चौरसिया "लाल"

सिलेंडर होयि गइलैं खाली...

कइसे चली घरवा कै गाड़ी,
सिलेंडर होयि गइलैं खाली।।

चुल्हिया भी नइखे बा नइखे लगवनाँ,
हिकमत से खइका बनायीं हम कउना,
सुसुकीला बन्द कै केवाड़ी,
सिलेंडर होयि गइलैं खाली।।

डीजल बदे टंकी पऽ भइलैं बवाल हो,
बाईक वाले बाबू कै पिचुकल बा गाल हो,
घूमें लें बनि के मवाली,
सिलेंडर होयि गइलैं खाली।।

जेकर जुगाड़ ओके कवनो ना खतरा,
खाली लाल चउपट हमार भइल जतरा,
कब बाजी सुखवा कै ताली,
सिलेंडर होयि गइलैं खाली।।

कहिया ले युद्ध मुँहलवना कुल करिहें,
कहिया ले हमहन के आफत में डरिहें,
मोदी जी ऐक्शन ला हाली,
सिलेंडर होयि गइलैं खाली।।

❑❑

❍ गोपालगंज,आजमगढ़,
PH—9452088890

उमेश कुमार पाठक 'रवि'

राष्ट्रवाद बबुआ,धीरे-धीरे आइल

राष्ट्रवाद बबुआ, धीरे-धीरे आइल।
बड़का ठग चाल चले, हिंदू अझुराइल।।

आरक्षण आइल,आ जोगता छँटाइल,
वोट लेबे खातिर, बा हिंदू बँटाइल,
प्रमोशन आरक्षण दे, प्रतिभा हताइल।
राष्ट्रवाद बबुआ, धीरे-धीरे आइल।।

एक्ट एससी-एसटी, कतने बधइले,
यूजीसी-रेगुलेशन, जनरल हतइले।
मुगलकाल से भी अधिक,सत्ता मदाइल।
राष्ट्रवाद बबुआ, धीरे-धीरे आइल।।

पेंशन खतम कके, सब कर्मचारी के,
पारा-मिलिट्री, सीमा पहरादारी के,
नेतन के कइ-कइ गो, पेंशन लिआइल।
राष्ट्रवाद बबुआ , धीरे-धीरे आइल।।

माइनस चालीस प अब डॉक्टर चुनाइल,
पा नब्बे परसेंट, जनरल फेंकाइल,
नफरत के बियवा बा,सगरी बोआइल।
राष्ट्रवाद बबुआ , धीरे-धीरे आइल।।

हिंदू एक करेके , ऊपर ले चरचा,
सभकरा में समरसता, भरे के परचा,
तहिया देश बँटल,आज हिंदू बँटाइल।
राष्ट्रवाद बबुआ, धीरे-धीरे आइल।

❑❑

❍ वनशक्ति नगर, बक्सर (बिहार)

महेन्द्र तिवारी

नेह के पाती

तू कहबू त खिड़की से आइल करब,
तोहरे ही रंग में हम रँगाइल करब।
चंदा के अँजोरिया में आ जइह रोज,
बुझवलिया से तोहके रिझाइल करब।

नेह में तोहरा रोज नहाइल करब,
मन के कोना-कोना समाइल रहब।
दुनिया के सब रीत-रेवाज भुला के,
बस तोहरे ही धुन में हेराइल करब।

बाग में बन चमेली तू खिलल रहिह,
गमकत खुशबू बन के मिलत रहिह।
वन में भँवरा बन गुनगुनाइल करब,
पंख पसरिके तोहपे मँडराइल करब।

जबले ढरबु ना त हम पियब कइसे,
तू चल जइबु त हम जियब कइसे।
अकेले जिनगी हम ढोअब कइसे
फाटल करेजवा के सियब कइसे।

प्रेम के दुश्मन से बढ़के केहू पापी ना होला,
बाकिर एकरा से केहू कबहिं बाकि ना होला।
आईना लेखा देखब त साफ झलक जाई,
कवन अइसन चाँद बा जेकरा में दागी ना होला।

❑❑

❍ राष्ट्रीय अभिलेखागार,
जनपथ, नई दिल्ली-110001

रंजन प्रकाश
संस्थापक/संचालक : भोजपुरी डिजिटल लाइब्रेरी

भर कोठी धान

का बढ़िया से लेटल रहनीं
तीन चार फुट नीचे
आ
आपन अँखिया मींचले
धरती में गोड़ाइल
ना उजाला के डर रहे
ना अन्हरिया के /ना अपनन के
ना तीर खंजर के /मिल जात रहे
खाए भर के
भीड़ में बंटात राशन
रोशनी के त !
जरूरते का रहे ?
माटी से छन के /पानियो भेंटा जात रहे
हवा के सरसराहट से ही
झुर झुरी /पैदा हो जात रहे
केतना बढ़िया से/कटत रहे जिनगी
जरतुहार !
तहरा से देखल ना गइल
चुप चाप उँहवे/पड़ल रहले देतऽ
त तहार का /बिगड़ जाइत करमजरू ?
कहले रहनीं,
उखाड़ मत /अब भोग
हमार छुधा /अब
जाग गइल बा /बड़ी गरुर रहे नू
तहरा अपना पर
त
ले आव /तोहरो के खाइब
तोहरा पूतओ के खाइब
आ भर कोठी धान
भूसा क के जाइब

❑❑

❍ 203, विश्व शाकुन्तल अपार्टमेंट, रोड नं. 02, मंदिर मार्ग,
पश्चिमी शिवपुरी,पटना 800023

लाल मोहम्मद लाल

दू गो कविता

मच्छर

कहाँ -कहाँ से आइल मच्छर
लागता खिसियाईल मच्छर

खून पी के हमर देखीं
कइसन बा बउराइल मच्छर

कबहिं गाल लीलारे बइठल
तहबन बीच समाइल मच्छर

सिरहाने पैताने भन्न-भन्न
कानवा तर भन्नाइल मच्छर

अटकन चटकन देनी चटाखा
तबहुँ ना भाग पराइल मच्छर

डी०डी०टी० ब्लीचिंग छिटवैनी
तबहुँ ना डेराइल मच्छर

मैक्सो मॉर्टिन ख़ूब जलइनी
तबहुँ ना घबड़ाइल मच्छर

हे दइबा अब " लाल " हीं जाने
कउना देश से आइल मच्छर ||

❑❑

गीत

मोहे छाड़ि पिया परदेस गए
इहाँ प्रीत के रीत निभावल भारी

जस सावन भादो घिरे बदरा
तस आँखिन लोर गिरावत ढारि

मोहे राह चलत सब छेड़त हौ
जस बाल जवान भरत सिसकारी

मुख जोस् देखत बने बुढ़वन के
ठहके तन चाम झुलावत सारी

पिय आये घर संग सखियन के
करी सब सिंगार भई कुल नारी

करी सोलहो सिंगार बतीस अभरन
सखी कुमकुम बिंदिया घूमे लट झारी

❑❑

❍ चंपारण,बिहार

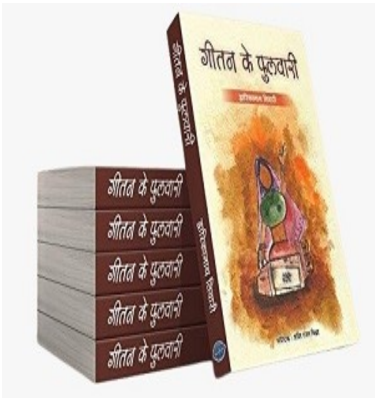

तिसर आंख के इंसाफ

विद्या शंकर विद्यार्थी

स्थान ----- सोमेसर के बइठका समय --- दिन
(निर्देश - सोमेसर हाथ जोर के बिनती करत बाड़न)
सोमेसर ------ जय भोलेनाथ, रउरा सबकर नइया पार लगाईंला, हमरो झंझरी नइया पार लगाइब मालिक।
परमेसर ------ (बगल में ठाड़ बाड़न) बड़ी आस्था के बिनती कइलऽ सोमेसर भाई।
सोमेसर ------ काहे ना आस्था के बिनती करीं, हम। आदमी के आपन बस के बात कहां बा परमेसर भाई,, हमरा भरोसा त अब एही कृपालु दीनानाथ पर रह गइल बा।
परमेसर ------- तोहरा अइसन साफ देयानत के आदमी के भला के नइखे जानत, आपन कहा के लोग बिस्वास में ले लिहल तोहरा के, आ मतलब साध के धोखा दे दिहल। तोहरा पता होखे के चाहत रहे सोमेसर भाई कि सार आ सरपुत के दुनिया बेकार के दुनिया ह, ई बात जान के तोहरा संबंध तक लगाव रखे के चाहत रहे बाकि तूं यकीन क के ओहू से आगे बढ़ गइलऽ।
सोमेसर ---- हम त घरे न बसवलीं कि धोखा देलीं ?
परमेसर ------ कठखोलवा जात भरोसा तूर देलन आ बिस्वासे पर ठोर मारेलन, मार देरन न ? आकि छोड़लन।
सोमेसर ------ ई घात के बरनन से मोनासिब बा चेत के रहल आ दूर रहल।
परमेसर ------ एही में फायदा बा। अच्छा सोमेसर भाई बेटिहा बदलल कि सार आकि सरपुत?
सोमेसर ------ तीनों परमेसर भाई।
परमेसर ------ हमरा घरे ओली तोहरा किंहा उठे - बइठे जात रहे आ सब बात सुन के कहत रहे सोमेसर भाई जी के एह बियाह शादी से दूर रहें के चाहत रहे, बाकि उहां के भरोसा के भावना से बह गइलीं। ई सेमर हवन सन। आगे दिन कामे ना अइह सन, भुआ अइसन फूट जइह सन।
सोमेसर ------ तोहार घरइतीन ठीक कहत रही, बाकि हम का करीं, बिआह के नइया बीच धार में लेआ देले रहीं, ओती घरी सभन के बोली में मिठाई घोरल रहे। जवन कि आगे चल के तीत करइली हो गइल।
परमेसर ------ आच्छा तोहरा सारो के त कुछ लगले होई, एह कारज में ?
सोमेसर ------ डंड़ो ना ,,,,,,। कुछ का कहाला ।
परमेसर ------ (हाथ उठा के) हाय रे सार, हाय रे सरपुत आ हाय रे बेटिहा, तीनों में केहू ना चुकलऽ हमरा सोमेसर भाई के धोखा देबे में। अटैची में साजल समान हम अपना आंखी देखले रहीं, आंखी देखले रहीं गहना से लेके ताग पाट तक। जवन कि आज अब देख रहल बानीं सोमेसर भाई के करेजा के कसक।
बिनोद ----- (प्रवेश) सोमेसर भइया के करेजा के कसक एह गांव के माटी के कसक ह, परमेसर भाई, हमार कसक ह आ तोहार कसक ह मतलब सबकर कसक ह।
परमेसर ------ हं बिनोद एगो इंसान के दुख सबकर दुख ह। सोमेसर भाई ई जान के सरपुत के पढ़इलन - लिखइलन आ बिआह कइलन कि हमरा केहू नइखे त हमरो दुनिया अंजोर होई, सहारा होई केहू बाकि,,,, बाकि इनिकर उम्मेद के पांखे नोचा गइल रे। ओह रे करेजा के घाव। बेवाए रहीत त ततारलो जाइत बाकि करेजा के दुख कइसे ततारल जाई।
सोमेसर ------ परमेसर भाई, उम्मीद के पांख त मालिक देलन, न ?
परमेसर ------ हं भइया, उहे देलन उम्मीद के पांख।
सोमेसर ----- त मालिक पर भरोसा रखऽ, हमार पांख नोचाइल कहां बा। धोखा देबे ओला के लागेला कि हम धोखा देके मरद बन गइलीं, बन गइलीं सांढ़, त ई ओकर भूल बा। हमनी के गांव के प्रायः आदमी बेसहारा के सहारा देला। केहू के तकलीफ के आंखी के लोर पोंछेला इहो बात त इयाद रखऽ।
परमेसर ------ तूं आपन तकलीफ के एहू स्थिति में कतना आछा बयां कर रहल बाड़ऽ भाई। देख रे दुनिया देख सोमेसर भाई के दुख में जीए के तरीका देख।
बिनोद ------- सांसत में एही हिम्मत से इंसान आदमी जीएला परमेसर भइया।
परमेसर ------- हं बिनोद हं तूं एकदम ठीक कहताड़ऽ।
(एकाएक जोर के हवा बहे आ आसमान में बिजली चमके लागत बा।)
बिनोद ------- (चिहा के) ई,,,, ई का भ इल परमेसर भइया?
परमेसर ------ तिसर आंख के इंसाफ के इसारा ह बिनोद, जहां आदमी के साथ आदमी छल आ धोखा करेला तहां भोलेनाथ के तिसरा नेत्र खुल जाला। भगवान भोलेनाथ डमरू बजावे आ तांडव के मुद्रा में आ जालन। आ धोखेबाजन के सब गुरूर तूर देलन।
बिनोद ------ सोमेसर भइया, परमेसर भइया के बात में तोहरा केतना दम बुझाता भइया।
सोमेसर ------- सोरह आना, इहे शक्ति आपन संसार चलावेले, बिनोद।
परमेसर ------ हम तिसर आंख के इंसाफ के उम्मीद कर के हाथ जोड़त बानीं आ परनाम करत बानीं।
धीरे धीरे परदा गिरत बा।

❑❑

❍ रामगढ़, झारखंड

होली... अब हो-ली!

मनीष चौरसिया
शोध छात्र, इलाहाबाद विश्वविद्यालय

होली बीति गइल बा। गाँव-देहात के अँगना अउरी सड़कन पर अभी ले लाल, पीयर, हरियर रँग के निसान लउकत बा। सड़क के कात में पेड़न अउरी बिजली के तारन पर कीचड़ अउरी रँग से सानल केहू के टी-शर्ट, केहू के पैंट तऽ केहू के बंडी अउरी जाँघियो अइसन सान से लटकल बा, मानों मैच के बाद खिलाड़ी के गला में मेडल (तमगा) होखे। लइकन के हाथ अभी ले गुलाबी बाड़ें। लइकन के पापा लोग, जे होली पर दिल्ली-बंगलौर-सूरत-मुंबई से ट्रेन के जेनरल डिब्बा में कोचा-कोचा के अइलें हं, ऊ फेर से वापस जाए के तैयारी में बाड़ें। घर से दूर रह के पढ़े वाला भा सरकारी नौकरी के तैयारी करे वाला लइका-लइकी लोग, एगो पिट्ठु बैग में दू-चार जोड़ी कपड़ा अउरी बोरा में चाउर-दाल लेके, माथा पर परिवार के उम्मीद अउरी अपना सपना के बोझ लाद के फिर से दिल्ली, पटना अउरी इलाहाबाद जाए के जुगत में बाड़ें।

फगुआ के रँग अभी भी हवा में कँहूँ बिखरल बा। होली... जब जाड़ा आपन चद्दर समेटे लागेला अउरी बसंत के बयार में एगो मीठ ऊष्मा घुले लागेला, तब प्रकृति मानो गहिर नींद से जाग के अँगड़ाई लेले। ई समय के ऊ मेल हऽ, जहाँ फागुन के विदाई अउरी चैत के ओसारी मिलत बा। ई खाली कैलेंडर के पन्ना पलटल ना हऽ; ई जीवन के ओही 'अकारण आनंद' के फूटना हऽ, जेकरा के हमनी 'होली' कहिला। जदि दिवाली जाड़ा के लम्बा राति के दुआरी हऽ, तऽ होली ओही जड़ता के विदा करे वाला एगो उल्लास भरल निकास द्वार हऽ। ग्रेगोरियन कैलेंडर जहाँ जनवरी के लहर में नया साल मनावेला, ओहिजा भारतीय बुद्धि चैत के पड़वा (प्रतिपदा) के असली नया साल मानेला। फागुन पूर्णिमा के ऊ आग 'जाड़ा के आखिरी आग' हऽ। एह में खाली लकड़ी ना जरे, बलुक देह के मैल, मन के कंगाली अउरी साल भर के सुस्ती के 'स्वाहा' कइल जाला। सरसों के उबटन से निकलल मैल जब होलिका के आग में पराया जाला, तब आदमी एगो साफ मन के साथे नया साल के देहरी पर गोड़ राखेला।

लम्बा, ऊँच, करिया तना वाला सेमल के पेड़ पर लाल-लाल फूल, अइसन लागेला जइसे जरत कोयला के अंगार होखे। जब खेत में नया अनाज लहलहाए लागेला, तऽ गाँव के मन अपने-आप गा उठे ला: होलक-होरक-होरहा-होरी-होली। वैदिक काल से चलल आ रहल 'होलक' (हरा चना) के भून के खाए के परंपरा खाली पेट भरे के साधन ना हऽ, बलुक ई नया जीवन के ऊर्जा हऽ जे हमनी के पीढ़ी के मजबूत बनावेले। आग के चारों ओर घूम के सुहागिन लोग के सात फेरा खाली सूत के धागा ना हऽ, ऊ हमनी के सांस्कृतिक मर्यादा अउरी आवे वाली पीढ़ी के रक्षा के संकल्प हऽ।

होली के ई अलाव खाली लकड़ी जरल ना हऽ। ई पौराणिक काल के अहंकार (हिरण्यकश्यप) अउरी वरदान के गलत इस्तेमाल (होलिका) के दहन हऽ, जेकरा भस्म भइला पर ही प्रह्लाद जइसन साफ भक्ति जनम लेले। अउरी कलयुग में? ई 'गौर पूर्णिमा' के ऊ पावन दिन हऽ, जब चैतन्य महाप्रभु हमनी के कीर्तन के अइसन रास्ता देखवलें जहाँ भगवान के पावे खातिर कठिन तपस्या ना, बलुक प्रेम से भरल एगो साफ दिल के जरूरत बा।

होली से जुड़ल कथा खाली पुरान याद ना हऽ, बलुक बिना हथियार के जीत के एगो मनोवैज्ञानिक मंत्र हऽ। प्रह्लाद के भक्ति, ढुंढा के बिनास अउरी कृष्ण-युधिष्ठिर के बात—ई सब आदमी के दुख से निकाल के आनंद के जमीन पर खड़ा करेला। कृष्ण जी युधिष्ठिर के समझावलें कि जीवन के पूजा करे के एकही तरीका बा 'उल्लास'। दुख में डूबल रहल ओही भगवान के अपमान हऽ जे हमनी के ई सुन्दर देह देले बाड़ें। खुश रहल ही भगवान के असली शुक्रिया हऽ।

जब ई उल्लास अपना एकदम ऊपर पहुँचेला, तऽ ऊ ब्रज के ओही रस वाला सागर बन जाला जहाँ भक्त अउरी भगवान के बीच के दूरी मिट जाला।

"आज बिरज में होरी रे रसिया... उड़त गुलाल लाल भए बदरा।"

गाँव के ऊ याद बहुत भावुक कर देवेले जब घर के बुजुर्ग मेहरारू (माई) सरसों के दाना के उबटन (बुकुआ) लेके आवत रहली। (अभी भी कँहूँ-कँहूँ, कम से कम हमरा गाँव में तऽ ई परंपरा बचल बा)। पूरा देह के मैल निकाल के ओकरा के एगो पुतला भा आग में डाल दिहल जात रहे। भाव ई रहे कि जीवन के सब 'दरिद्रता' आग में स्वाहा हो जाए अउरी हमनी नया साल में निर्मल होके घुसीं।

होली के रस हमनी के खाना-पीना में भी झलकेला। जाड़ा के तपस्या के बाद ई 'मौज' के घड़ी हऽ। राजपूताना के 'जंगली मांस' से लेके गोवा के 'सोरपोटेल' तक, बंगाल के 'कोशा मांग्शो' से लेके आसाम के बत्तख करी तक—सब रँग बा। उत्तर प्रदेश अउरी बिहार में होली के दिन मटन (खस्सी) पकावे के

तरीका करीब ४०० साल पुरान बा। मुगल बादशाह लोग भी होली के एगो सांस्कृतिक मिलन के रूप में मनावल, जेसे मांसाहारी खाना के एगो सामाजिक जुड़ाव बन गइल। अइसन ना बा कि खाली माँस ही बनेला; गुजिया, मालपुआ अउरी पकौड़ी एह त्योहार के जान हऽ।

होली अब पहिले नियर ना रह गइल, लागता कि रँग में भँग घुल गइल बा। हमरा आपन लइकापन याद आवत बा जब ढोल के थाप पर कमर लचकावे वाला लौंडा थिरकत रहे, तऽ पूरा गाँव झूम उठत रहे। बाकिर अब 'गमछिया डांस' कँहू ना लउकेला, बस लोग डीजे के शोर में अघन नंगा नाचत लउकेला।

२६ जनवरी के बाद जदि केहू राष्ट्रीय परब बा, तऽ ऊ होली ही बा। पहिले लोग दू-तीन महीना पहिले से ट्रेन के टिकट कटा लेत रहे। जेनरल डिब्बा में ठुँस-ठुँस के घर जाए के अलग ही मजा रहे। हालाँकि आजुओ स्थिति ओइसने बा। हवाई चप्पल वाला के हवाई जहाज के सपना तऽ दिखावल गइल, बाकिर सचाई ई बा कि होली-दिवाली पर बिना एजेंट के भा बेसी पइसा देले टिकट मिलना मुस्किल बा। स्टेशन पर भगदड़ के माहौल रहेला, जहवाँ कतनो लोग 'संख्या' बन के रह जालें। खैर!

जब हमनी छोट रहनी जा, तऽ डाबर आँवला के खाली डिब्बा के ढक्कन में छेद क के 'जुगाड़ पिचकारी' बनावत रहनी जा। अउरी गोरू-बछरू के सुई देवे वाला सिरिंज से भौजाई के साड़ी पर 'दिल' बनावल याद बा कि ना? काका के गारी... आजुओ याद बा कि कइसे खेत से ताजा आलू खन के ओकरा के दू टुकड़ा में काट के "चोर 420" के मोहर बनवले रहनी जा। अउरी काका के उज्जर कुर्ता पर पाँछा से धप्प दे मार दिहले रहनी जा। काका के कुर्ता से तऽ निसान छूट गइल, बाकिर '420' नाम हमरा साथे चिपक गइल। अब तऽ हमरो नीक लागेला, इंस्टाग्राम पर हमार यूजरनेम भी 'मनीष 420' बा।

हमनी के गली से जदि केहू अनजान आदमी नया उज्जर कुर्ता पहिन के निकल गइल, तऽ ओकरा के होली के एहसास करावल हमनी के 'प्राइमरी ड्यूटी' रहे। रँग में पानी मिलावत घरी हमनी जोड़-घटाव के सब गणित सीख लेत रहनी जा। दिमाग में बस ईहे चलत रहे कि लाल में हरा भा पीयर मिलाइला पर कउन रँग बनी।

जानते बानी? कखनो-कखनो खाली पानी ही फेंक देत रहनी जा। ई 'इकोनॉमिक्स' रहे—रँग अउरी पइसा दुनो के बचत! आज जब दुनिया के जंग में मासूम के मरत देखिला, तऽ मन में ईहे सवाल आवेला कि ई कउन होली हऽ जे खून के लाल रँग से खेलल जा रहल बा?

कतेक नीक लागत रहे न! जब फागुन के सुबह लोग एक अँगना से दोसर अँगना भौजाई लोग के रँगे खातिर दउड़त रहन। अउरी सबका निशाना गाँव के 'लेटेस्ट' भौजाई रहली। एक दिन हम भैया के सारी (साली) के रँगे गइनी, तऽ हमरा के देखत खानी किवाड़ अइसन बंद भइल कि सीधे साँझ के खुलल। खौफ रहे भाई! घर के दुआरी पर गाय के ताजा गोबर से कखनो 'हर्बल होली' खेलले बानी? हमनी खेलले बानी। ओकरा के हमनी 'आयुर्वेदिक होली' कहत रहनी जा। अउरी केहू-केहू के तऽ पण्डोहा (मोरी) में धकेल दिहल जात रहे।

उम्र में बड़ भइया भा चाचा लोग माई-बाबू से लुक के भाँग मार लेत रहन। अउरी दिन भर दाँत चियार के अंट-संट बकत रहन। बाकिर होली के नाते केहू बुरा ना मानत रहे।

चैता, चैती, कजरी, फगुआ अब केकरा याद बा? अब तऽ फागुन में खाली डीजे बाजेला, संगीत कम अउरी शोर बेसी। साँझ के अबीर खेले के मजा भी खतम हो गइल। जवन रँग लोग प्यार से लगावत रहन, आज ओही रँग से लोग के डेरावल जाला।

सच पूछीं तऽ अब लोग होली ना, 'हॉलीडे' मनावत बा। न केहू घर से निकले ला, न केहू के घर जाए ला। फागुन में बिना दाग के कुर्ता देख के लागेला कि लोग 'बेसी पढ़-लिख' गइल बा। लइकन के हाथ में पिचकारी के जगह मोबाइल देख के पुरान जमाना बहुत याद आवेला। कइसे हमनी टोली बना के चिल्लात रहनी जा—"होली है होली है सारररा होली है... जोगीरा सारा रा रा.. होली है!" होली के दिन मुँह बंदर नियर हो जात रहे। भले लाइफबॉय के टिकिया रगड़त-रगड़त गाल छिला जाए। पहिले पइसा कम रहे, आज पइसा बा बाकिर 'समय' नइखे। व्हाट्सएप होली, फेसबुक होली... ई कउन होली हऽ? होली तऽ ऊ हऽ जहाँ मन अउरी दिल मिल के 'मनदिल' (मंदिर) हो जाए।

आज के होली देखिला तऽ मन में एगो टीस उठेले। बस केमिकल वाला रँग अउरी कान फाड़े वाला डीजे!
होली अब बस 'हो..ली'।
बेसी लिख देले होखब तऽ बुरा मत मानब, होली है!

❑❑

❍ कुशीनगर, उत्तर प्रदेश

दू गो कविता

गणेश नाथ तिवारी"विनायक"

सोर बा

डगर अगोरत अँखियाँ भइल चकोर बा।
ना जाने जियरा में केतना ले सोर बा।।

सूखल पतई नियर डोलत बा मनवा
विरह के अगिया में झुलसत बा तनवा
अँजोर के रतिया में भुलाइल भोर बा।।
ना जाने जियरा में केतना ले सोर बा।।

साँस के डोरी अब भइल बाटे भारी,
छीन लेलस केहू हमरा सुखवा के सारी।
जिनिगी के नइया, हेराइल कवना छोर बा,
ना जाने जियरा में केतना ले सोर बा।।"

कवनों ना कामे आई धन दउलतवा
सभ इहँवे छूट जाई, माटी के घरवा
जब ले सनेहिया, तबे ले अँजोर बा।।
ना जाने जियरा में केतना ले सोर बा।।

❑❑

आपन देस आ युद्ध

धुँआ-धुँआ भइल दुनिया , जियरा सभकर काँपता,
ईरान-इजरायल के झगड़ा, काल के रस्ता नापता।

रूस अड़ल बा सीना तानि के, डरे ना केहू के बाप से,
अमरीका तऽ खेलत बाटे, आगि आउर साँप से।

चीन बइठल बा घात लगा के, अजगर नियर फुफकारता,
भारत खड़ा बा दम्मी सधले, सभका के पोलकारता।

बीत गइल ऊ दिन जब, चुपचाप सब सहत रहीं,
शांति के माला जपि के, कोना में हम रहत रहीं।

S-400 के सुरक्षा लागल,जइसे सुदर्शन चक्र बा,
दुश्मन के हर एक मिसाइल, ओकरा आगे बक्र बा।

ब्रह्मोस जब गरजी तऽ , पातालो में सुराख होई,
पड़ोसी के घर में घुसि के, ओकर विदाई तय होई।

ई नवका भारत हऽ भइया, घर में घुसि के मारेला,
जे आँखि देखाई ओकर आँखि, ई तऽ तुरंतै फारेला।

'अग्नि' आ 'आकाश' हमार,जब काल बनि के आवेला।
स्वदेशी हथियारन खातिर, सगरी दुनिया धावेला।

गद्दारन के जीभ कटी अब, फन उनकर कुचऽल जाई,
तिरंगा तऽ चाँद छोड़ि के, सूरजो पर लहराई।

❑❑

❍ श्रीकरपुर,सिवान

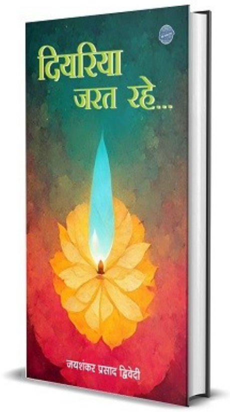

1857 के क्रांति के 80 साल के जवान योद्धा

मनोज भावुक

1857 के क्रांति के बारे में सभे पढ़ले बा, सुनले बा, जनले बा. अंग्रेज आ ओकनी से प्रभावित अधिकतर इतिहासकार एह महान क्रांति के सैनिक विद्रोह के नाम दे के भुलवावे के कोशिश कइलें बाकिर भारत के लोग एकरा के पहिला स्वतंत्रता संग्राम कहल. एह संग्राम में अइसे त एक से एक लड़ाका लोग रहे बाकिर एगो योद्धा जे अपना बुढ़ापा में भी जवान लेखां लड़ल आ अंतिम सांस तक अंग्रेजन के ग़ुलामी ना मनलस, ओकरा जीवन के आखिरी लड़ाई के जीत के उपलक्ष्य में आज के दिन (23 अप्रैल) विजय दिवस के रूप में मनावल जाला. ओह योद्धा के नाम रहे वीर बांकुड़ा बाबू कुँवर सिंह. कुँवर बाबू 23 तारीख के अपना कटल हाथ पर पट्टी बान्ह के युद् मैदान में कूद गइलें, 80 बरिस के बूढ़ शरीर रहे बाकिर जोश अइसन कि अंग्रेज के एगो जाँबाज कर्नल ली ग्रांड के सेना समेत भुजरी-भुजरी काट देहलें आ जगदीशपुर के अपना कब्जा में कर के आजाद करा देहलें. कुँवर बाबू के वीरता के इतिहासकार अनदेखी कइलें, लोग उनके भुला देहलस. बाकिर, उनके शौर्य गाथा के सुनला के बाद रोआँ रोआँ फड़फड़ा जाला आ यकीन हो जाला कि उनके समकालीन आ उनका से कई बार आमना सामना के युद्ध करे वाला एगो अंग्रेज अफसर डगलस उनका बारे में साँचे लिखले बा कि "कुँवर अगर जवान होता तो उसने कब का अंग्रेजों को भारत से बाहर खदेड़ दिया होता".

कंपनी सरकार भारत व्यापार करे के बहाने आइल आ इहाँ अधिकार जमा लेहलस. देश के अधिकतर रियासत अंग्रेजी हुकूमत के अधीन रहे बाकिर कुछ रियासत अइसन भी रहे जवन अंग्रेजन के लगान देव बाकिर अपना मर्जी से राज पाट चलावे आ बाहरी हस्तक्षेप कम होखे देव. अइसने एगो रियासत रहे जगदीशपुर. जगदीशपुर के एगो जमींदार रहलें साहिबज़ादा सिंह आ उनके चार गो बेटा रहलें, कुँवर सिंह, दयाल सिंह, राजपति सिंह, अमर सिंह. साहिबज़ादा सिंह के चाचा आ चचेरा भाई लोग उनसे जगदीशपुर धोखाधड़ी से हड़प लेले रहे जवन उ बाद में अदालती लड़ाई लड़ के हासिल कइलें. ई सब घटना ह 18वीं शताब्दी के सातवाँ दशक से लेके 19वीं शताब्दी के पहिला दशक के बीच के. साहिबज़ादा सिंह के जब जगदीशपुर मिलल त उ कर्जा में नाक तक डूबल रहे. उ कर्जा भरे खातिर खूब कोशिश कइलें बाकिर ना भर पवलें. उनका मृत्यु के बाद सन 1826 ईसवी में जगदीशपुर के हुकूमत उनके सबसे बड़ बेटा कुँवर सिंह के मिलल आ फेर जगदीशपुर के भाग्य चमकल.

कुँवर सिंह व्यवहार कुशल रहलें, मृदुभाषी रहलें अउरी बहादुर रहलें जेकरा चलते अंग्रेज अफसर उनके मुरीद रहलें आ ओकर फायदा उनके ई मिलल कि कुँवर सिंह के राज के शुरुआती समय में अंग्रेज जगदीशपुर के आंतरिक मामला में कम दखल देहलऽसन. पटना के कमिश्नर विलियम टेलर के साथे त उनके मित्रता भी चलल. कुँवर बाबू बड़ा परोपकारी रहलें. उ अपना जीवन में एतना दान पुण्य कइलें, सदाव्रत चलवलें कि उनके रियासत के लोग हमेशा कुँवर सिंह के आपन प्यार आ समर्थन देहलस. उनके शासन बेवस्था एह बेरा के लोकतांत्रिक शासन के जइसन रहे. सभके समान अधिकार रहे, सभके बोले के आजादी रहे, सभे खुश आ संतुष्ट रहे. कुँवर के राज से पहिले जगदीशपुर के दिन-दशा बड़ा खराब रहे, रियासत पर लगभग 18 लाख के कर्ज लदाइल रहे, सालाना मालगुजारी से कमाई होखे 6 लाख रुपया के आस पास. कुँवर अइलें, नहर तालाब, बांध के निर्माण करवलें, कृषि के सुधार भइल, लोग में जगदीशपुर के विकास खातिर उम्मीद जागल, जंगल बसावल गइल, सड़क बनल, पाठशाला बनल, पढ़ाई-लिखाई में लोग होशियार होखे लागल आ मेन बात कि अंग्रेजन के हस्तक्षेप कम रहे, एह के परिणति ई भइल कि उहे जगदीशपुर जवन बेहाली में रहे, तरक्की के राहे चले लागल. सालाना मालगुजारी से कमाई सीधे 8-9 लाख के लगे पहुँच गइल आ आज से दू-सवा दू सौ बरिस पहिले एकर मोल अरबों में रहे.

कुँवर सिंह के लोकप्रियता अइसन कि आस पास के जमींदार जरे लगलें, अंग्रेज उल्टा उनके सलामी दागे लगलें. ओह बेरा कंपनी सरकार के अत्याचार चरम सीमा पर रहे, देश भर में विद्रोह के आगि सुनुगत रहे. कुँवर बाबू भी विद्रोहियन के संपर्क में रहलें, 1845 में सोनपुर मेला में एगो बड़हन गुप्त बैठक भी कइले रहलें. जब विद्रोह के आग धीरे-धीरे उपरियाइल त ओकर गर्मी अंग्रेजन तक पहुंचल, ओकनी का चिहुंक गइलन सन. ओहू ओर से तैयारी होखे लागल. जब दक्षिण के दक्कन से लेके उत्तर के दिल्ली, पच्छिम के मराठा से लेके पुरुब के सभ क्रांतिकारी राजा, महाराज, जमींदार, देशी सैनिक में गँठजोड़ भइल कि सुराज पा लेबे के बा त एगो दिन तय भइल. 1 जून 1858 के पूरा देश में अंग्रेजन के खिलाफ जंग होई आ ओकनी

के कहीं बाहर से मदद ना लेबे दिहल जाई, सभके एही भारत भूमि में गाड़ दिआई. बाकिर एगो घटना 1857 में बैरकपुर छावनी में घटल. सूअर आ गाय के चर्बी से बनल कारतूस के विरोध में मंगल पांडे नाम के सैनिक के अगुआई में ब्रिटिश आर्मी के देसी पटलन गोरन पर गोली चला देहलस. विद्रोह के ई चिंगारी रहे जवन आग बनल जब मंगल पांडे के फांसी दिआ गइल आ फेर एकाएक चारों ओर क्रान्तिकारियन के मारल जाए लागल.

एने कुँवर बाबू भी तैयारी में रहलन. उ एगो दूरदर्शी सोच के जमींदार रहन. भले उनका लगे छोट रियासत रहे बाकिर उ आपन सेना के गठन कइलें, सेना के ट्रेनिंग खातिर बाहर से ट्रेनर मंगवलें, हथियार के गुपचुप निर्माण खातिर कारखाना बनवलें. दानापुर छावनी में भी विद्रोह भइल आ 25 जुलाई 1857 के तीन गो बटालियन 7वीं, 8वीं अउरी 40वीं बटालियन कुँवर सिंह से मिल गइल. कुँवर सिंह के आपन लड़ाका दल रहबे कइल, बाकी जगदीशपुर रियासत के किसान, मजदूर, सवर्ण जाति के लोग सभ उनसे मिल गइल आ उनके लगभग 5000-8000 के संख्या में सेना बल हो गइल. कुँवर बाबू के नेतृत्व में आरा पर चढ़ाई भइल आ जेलखाना, खजाना, कलक्टर ऑफिस आ थाना सभ पर कब्जा हो गइल. उहाँ के सगरो अंग्रेज अफसर जाके बॉयल हाउस (आरा हाउस) में लुका गइलें आ 6-7 दिन से बंद रहलें. ई कुँवर सिंह के जंग में पहिला लड़ाई रहे. ओकरा बाद कुँवर सिंह डनबर के हरवलें. बाकिर हथियारन के कमी अउरी अत्याधुनिक तोप आ बंदूक के सामने उनकर सेना तितर-बितर हो गइल अउरी एगो अंग्रेज कमांडर विन्सेंट आयर से हार गइलें आ आपन युद्ध रणनीति बदल देहलें. उ बाकी क्रान्तिकारियन से मिले आ अंग्रेजन के खिलाफ लड़ाई करे खातिर दोसरा रास्ता चल देहलें.

2 अगस्त के बाद कुँवर सिंह के अपना सेना के साथे जवन मार्च निकलल त सासाराम, रॉबर्ट्सगंज, रीवा, कलिंजर, बांदा, काल्पी होत कानपुर, लखनऊ, गाजीपुर, आजमगढ़, बलिया, अतरवलिया होत फेर 21 अप्रैल के जगदीशपुर लवटल. एह बीच कुँवर सिंह लगभग 20 गो से अधिका अंग्रेज कमांडर, योद्धा आ अफसरन के नाक से चना चबववलें, कईगो के मउगत के घाट उतरलें, कईगो के जीवन दान देहलें. भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में अइसन कवनो बीर बलवान ना भइल जे 80 बरिस के उमिर में 9 महीना के लमहर संग्राम-यात्रा पर निकलल होखे आ एतना क्रांति के आग सभमें भड़कवले होखे. उ अइसन समय रहे कि बड़ बड़ लड़ाका लोग खाली अपने किला आ रियासत खातिर लड़ल. बाकिर एगो भोजपुरिया योद्धा जहां गइल ओकरा खातिर लड़ल. एह क्रम में उनका आँखी के सामने आपन पोता, बेटा, मित्र के जान गइल बाकिर उ लड़त रहलें एह भारत के माटी खातिर, अंग्रेजन के जुल्म मिटावे खातिर. एह लड़ाई में आरा के मशहूर नर्तकी धर्मन बाई भी उनका साथे रहली. कुँवर आ धर्मन के केमेस्ट्री अलग से फेर कबो.

21 अप्रैल के गंगा नदी पार करत बेरा डगलस नाम के एगो अंग्रेज सेना अफसर उनके दाहिना बांह में गोली मार देहलस. कुँवर बाबू बिना हिचक के उ बाँहिए काट के गंगा मइया में दहवा देहलें. अगिला दिने उनके घाव पर मरहम पट्टी भइल. तले एगो स्थानीय अंग्रेज अफसर ली ग्रांड के जगदीशपुर पर चढ़ाई करे के खबर आइल. ई घायल बूढ़ शेर फेर दहड़लस आ 23 अप्रैल के अपना प्रिय भाई अमर सिंह, सेनापति हरीकिशन सिंह आ कुछ और योद्धा के लेके ली ग्रांड के मटिया मेट क देहलें. ई उनकर आखिरी लड़ाई रहे, ओह दिन ब्रिटिश झण्डा यूनियन जैक उतरल, परमार वंश के झण्डा लहराइल आ अमर सिंह नया जमींदार बनलें अउरी उनके लइका उत्तराधिकारी. कुँवर बाबू के कटल हाथ के घाव में संक्रमण बढ़ल, बूढ़ शरीर रहे, उनके तबीयत बिगड़े लागल आ ऊ 26 अप्रैल के स्वर्ग के अनंत यात्रा पर चल गइलें. बाकिर, आपन प्रण निभा गइलें कि ना अंग्रेजन के गुलामी स्वीकार करब ना ओकनी के हाथे मरब. बारम्बार नमन बा माँ भारती के सच्चा सपूत वीर बाँकुड़ा कुँवर सिंह के.

❑❑

(लेखक मनोज भावुक भोजपुरी साहित्य आ सिनेमा के जानकार हईं .)

❍ नोएडा (उ०प्र०)

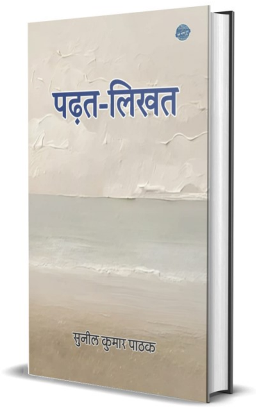

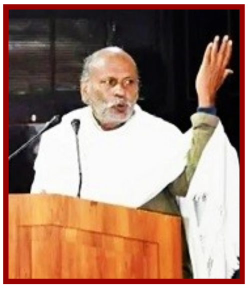

दू गो गीत

डा० राम नारायण तिवारी उर्फ "भइया भदवरिया"

1

गीत लिखल चाही, अब लिखाते ना बा।
गीत गावल चाही अब गवाते ना बा।।

सब्द अरथन के अरथी ले डिकिचत चले,
'कहँ गिरी' कहँ उठी हाथ हिकिचत मले,
एकरा मयजल में मउवत के परछा परल—
बीया अमरित में डिम्भी जहर के पले

का बोईं का काटी अब बुझाते ना बा।
जवन बोईं आ काटी, चिन्हाते ना बा।।

भाव भंगी बनल, मन में तंगी झेले,
तानि फाटल मियानी के गुलत मेल्हे,
जस सीए तस फटे, जस फटे तस सीए—
डोरा पुरत आ डालत ई आफत झेले,

कतनो हो तुरपाई गुलाते ना बा।
लाख टाँकी लगाईं टाँकाते ना बा।।

चित्त चिंता में चिंतन से अलगा भइल,
पुरुजे-पुरुजे बँटा चीराबाती कइल,
ना सटे ना डटे बस, पताए लागल
चिन्ह टूटन के अंग-अंग परा हो गइल,

जोड़ कतनो जोड़ी अब जोड़ाते ना बा।
कब छटकी 'कहाँ' के' बुझाते ना बा।।

छन्द छटकत-छटकत चिताने गिरे,
तुक तुक्का के तुरत उताने फिरे,
सभके सभमें बा अझुरा ना बोले-चाले
फेस-बुकवे में संघीन्ह के चेहरा हिरे,

जे मरल कहे हमपो भेंटाते ना बा।
ओकरा लसियों के खोजी देखाते ना बा।।

जीव जीवन में जिनगी से गेंगा करे,
रासि नेहिया में ईरिखा के लेंगा धरे,
आस जे पो करीं उ लूटे घर सातो
माथ मड़ई मोलरिया ले गोहिया करे,

कतनो सुइया जुटाई जुटाते ना बा।
भदवरिया से भदवर चिन्हाते ना बा।।

❑❑

2

गीत गाई कि रोईं बुझाते ना बा,
परल खटिया पो मौसम अपाहिज भइल।

मास फागुन में अम्बर के आँसू चुवे,
बदरी बान्हि पालट बनउरी बोवे
नाक गारि-गारि के पछेया सिसुकि के पोछे
'दिल में कैंसर बा' पूरुबा कहरि के कहे ;

तब तूँ का लाज आपन बचइबू लाली
जब सुरुजे क्षितिज में अबाटी भइल।

मुँह बा-बा पीटत छाती चइती घिया,
रोज पेटवे गिरी त का बाची बिया,
घोटि नीमक के दे जम्हुआ सउरी भीतर
बेचिरागी सिवनिया के बारी दिया ?

कइसन टाँकी मराइल माई माथ में
कोखि जामल कोखिए लुटेरा भइल।

जेठ थर-थर काँपे ल मलेरिया भइल,
खरउरिया में नाचत भदउवा गइल,
आस आसिन में बरते गइल जिनगी,
करऽ केतनो मेरई ओछिनाहे भइल,

चेहरा उड़वत मरि जइब, सुग्गा!
तोहार सेवल सेमरवा भुआ हो गइल।

सेर सुतल बा सियरा सिवनिए बाँटे,
हंस बोली ले कउआ ल चानी काटे,

बानर मुट्ठी में सउसे कानून देस के
काढ़ि लुच्ची, दे केड़ी ल रोटी बाँटे;

जे के फाँसी चाही उ बनल देवता,
तूरि के फान्दा सड़क ताड़ी ठोकत गइल।

माघे उखम, सुगर सिरहाने सुते,
दिल रेंगे किकुर पेस-मेकर बुते,
घइला छुतिहर जहाँ माई-मेहर होली
बंश आशा बा लऽ खोजवा के बुते;

पुस तुसर परे गोड़ फोरा उठे,
बेरा मउवत गंगाजल दुलम्ह हो गइल।

पले-पले परा देखऽ पड़ी पाई,
डेग उठले ना आ गिरल खड़ी पाई;
खाड़ भइला पर सिगुड़ा खिचत गोड़ बा
भागल चाही त लंगी लगा दे काई,

एके दिनवे में सउसे बरिस भागऽता
धरे चाही त धरती कहाँ दो गइल।

अब का चेंती बडेरा पताए लागल
बिना माथे के पगरी बन्हाए लागल
पोछि जेकर उठाई बहेंगवा झाँके
बिना मेहिया के दवरी नधाए लागल

अब तु का डोली लोके धावऽ लोकनि!
देखऽ दुलहिन के कहरे लुटेरा भइल।

❑❑

❍ पीजी कॉलेज गाजीपुर

अजय साहनी

गजल

जिंदगी में बहार हो जाला,
दोस्त कुकुरो- सियार हो जाला ||

जब बहारन ला लड़ पड़े आँगन,
झाड़ - झाँखड़ दुआर हो जाला ||

डेग में जब सदा रही साहस,
छोट, लमहर पहाड़ हो जाला ||

ठीक नइखे गुमान ताकत के,
शेर भी खुद शिकार हो जाला ||

' ए अजय ' चाह राख खुशबू के,
फूल के साथ खार हो जाला ||

❑❑

❍ ग्राम. महुली, पोस्ट. अगौथर नंदा, सारण, बिहार

दीपक तिवारी

रहे बनल भोजपुरी

मिले देश आ विदेश मे सम्मान भाई हो,
आव कइल जा मिल के,उत्थान भाई हो।
रहे बनल भोजपुरी, महान भाई हो,
आव कइल जा मिल के,उत्थान भाई हो ॥

भोजपुरिया जले ना चहिए,मिली एके शिखर,
दिन पर दिन अरु बंधु,ना त जाई बिखर।
बीतल नइखे दिन अबो से,कइल जा सुधार,
पाँच लोग बइठ मिली के, कइल जा विचार।
जेसे बढे भोजपुरी के, शान भाई हो...
मिले देश आ विदेश मे सम्मान भाई हो।
रहे बनल भोजपुरी, महान भाई हो ॥

जागे परी जन-जन के,अश्लीलता के खिलाफ,
तब जाके मइल सगरो, एकर होई साफ।
एक जुट भोजपुरिया जब, एक तरफा हो जाई,
दावा बा दीपक के तब, सलिलता रह जाई।
कुछो कइल जा होखे, गुनगान भाई हो...
मिले देश आ विदेश मे सम्मान भाई हो।
रहे बनल भोजपुरी, महान भाई हो ॥

❑❑

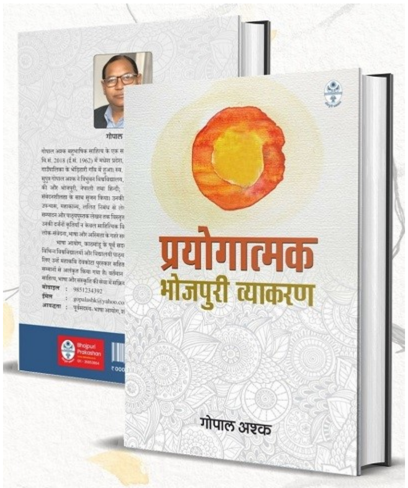

उमेश कुमार राय

टके सेर भाजी,टके सेर खाझा

चुनावी दंगल के,बाज गइल बा बाजा।
ना केहुओ जनता रहल,नाहिं रहल राजा॥
हई देखऽ भाई ! / टके सेर भाजी , टके सेर खाझा॥

जानता के मति - गति,जानस ना राजा।
जानता के भोट बदे,आपे पावस साजा॥
जन-जन के हक सोजहगे सदेहे खा जा।
हई देखऽ भाई ! / टके सेर भाजी,टके सेर खाझा॥

पांच साल त चानी कटलन।
अपने तावे सभके हंकलन॥
आगि धधके के पहिले गइल पज्झा ॥
हई देखऽ भाई !/ टके सेर भाजी,टके सेर खाझा॥

चिलारि खोरि के , लिट्टी लगावस।
ठठपाल बन,अब फेरि लगावस॥
ठुकठुकावस जन-जन के दरवाजा।
हई देखऽ भाई ! /टके सेर भाजी, टके सेर खाझा॥

आपन कान निरेखे नाहि,
चल कउआ के पिछे दउड़ जा।
अन्हेरपुर नगरी,चउपट बाड़न परजा॥
हई देखऽ भाई ! /टके सेर भाजी,टके सेर खाझा॥

आन्करा गीते , ठुमुक चलस राजा।
बतासे भोंके कुकूर,अनेरे भोंके परजा॥
चमचागिरी में माथे चढ़ल करजा।
हई देखऽ भाई ! /टके सेर भाजी , टके सेर खाझा॥

चमचन के बाढ़,बिलईया बाघ भइल।
अनका माढ़वा गीत,आपन विरान भइल॥
आपन के गलती प आन पावे साजा।
हई देखऽ भाई !/टके सेर भाजी , टके सेर खाझा॥

❑❑

❍ जमुआँव, भोजपुर, बिहार

गंगतीर के पीर

उमेश कुमार राय

झुनिया आपन जनमतुआ के गोदी में ले के बारखा के बुनिं के कोसत रहे। रेवटी के मथेला प तड़तड़ात बुनीं के आवाज रात के शांति के भयानक बनावत रहे। रह-रह के बिजुरी के चमक आंखन के सोझा बुनीं के बुंद मोती जस चमके आ आँख आन्हर हो जात रहे।अइसन चकचौन्हीं लागे कि आजरा-पाजरा के कुछउ ना लउके । बदरी के गरजन के आवाज दिल में धक् से लागे , बुझाए की अब हाड फेल भइल की तब। हवा के तेज झोंका के साथे बुनीं के फुहेरा लाख कोशिश के बादो भिंजावत रहे। जनमतुआ के गोदी में लुगरी लपेट के सटकवले रही। एगो पांच साल के बुचिया रहे जवन दूध पीए खातिर संझिए से नधियाइल रहे ऊ रोवत-रोवत गुदरी में लपेटा के रेवटी के कोना में घुड़कल रहे। गंगिया माई के रुप हरेक दिन अउर भयानक होत जात रहे।

झुनिया हालहीं में विधवा भइल रहली। भगवान के लिखतं के आगे सभ विवश हो जाला। होनी केहू ना टाल सकेला। होनी बलवान होला। गंगा के बाढ़ में डूबत एगो मेहरारू के बचावे खातिर उफनात दरियाव में कूद गइलन। मेहररुआ त केहूतरे बांच गइल बाकिर झुनिया के सवांग (मरद) पानी के चकोह में धरा गइलन। उनकर लाश खूब खोजला के बाद तीन दिन प मिलल। झुनिया के गोदी में जनमतुआ आ पांच बरीस के लक्ष्मी रही। झुनिया प त आफत के पहाड़ गिर गइल ऊ भरल जवानी में विधवा हो गइली।

हवा, पानी आ आग परलय के ऊ रुप ह जवना के प्रकृतिक प्रकोप कहल जाला। गंगा मइया के कोप से झुनिया के पनरह बिगहा जमींन गंगा के कटाव से गंगा माईया के पेट में समा गइल। दु ताला घर जवन भर जिंनगी के पाई-पाई जोगावला के बाद कसहूं थुके सातु सान के बनावल रहे उहो गंगिया माई भकोस गइली। जोड़ा पिअरी चड़ावे के पूरा गांव गोहरावत रह गइल बाकिर केहुओ के मकान संझवतो देखावे भर ना बांचल। हार-दांव दे के लोग चिख-पुकार करत गांव के गोड़ लाग के बाढ़ के बिपते बान्ह प आड़ान ले लेलन। दू-चार दिना त बाल-बच्चन के साथे सरगे ताकत रात कटल बाकिर बाद में समाजसेवी लोगन के दया से रेवटी लागल। खाना-खोराकी भी समाजसेवी लोगन के मेहरबानी से चलल। समाजसेवियन के ढेरे हो-हल्ला कइला प सरकारी सहायता समाग्री पहुंचल।

झुनिया के नबोज लईकी लक्ष्मी रही । उ सांझे से दूध खातिर नधियाइल रही। झुनिया ई सपनों में ना सोचले रहे कि गंगा माई अइसन दिन देखइहे। जेकरा दुआरे लगहर के तोर ना टूटत रहे ओकर बाल-बच्चन के एक गिलास दूध खातिर छछने के नउबत आई बाकिर दईब के लिखतंग के आगे सभ व्यर्थ हो गइल। जिंनगी भर के सभ जोगावल आकारथ हो गइल। झुनिया खूबे समुझावे कि ई घर ना ह,जवन मंगबू तवन मिली! इहवां त जीव जियावे खातिर मुंह तक्कू बनल रहे के मजबूरी बा। कवनों दाता दान-पून करे आइहन त दूध किन देब ना त ठन्-ठन् गोपाले रही। लक्ष्मी सूसूकत-सूसूकत बिना खइले सुति गइली।

झुनिया के बिपति के कवनों ओर ना रहे। बान्ह प रेवटी में त समाजसेवी लोग कसहूं खरची चला देत रहे बाकिर बाढ़ निझटला प खरची के तंगी दैत्य जस मुंह बा के खड़ा रहे। झुनिया के पढ़ाई-लिखाई ओकरा मुंह बिरावत रहे। सरकारी बाबू तीन डीसमील जमीन के कागज आ तीस हजार रोपेया देके पाला झार लेलन। सभ गांव वाला लोग ओकरा में घर बनावे लगलन। पड़ोस के झुलन काका झुनिया राह बतवले कि आपन सभ गहना -गुरिया बेच के सरकार के दिहल जमींन में रहे भर घर बनाई ल। सभे असहीं करत बा। झुनिया के परिवार में मरद-मानुष ना होखे से ई असहाय रही। झुलन काका के साहस देला से उ तनिक आपन दिल मजबूत कइली। झुलन काका के साथे शहर जा के आपन सभ गहना बेंच देली। चार लाख रोपेया मिलल।

समय ना रुके। समय के साथे परिस्थित भी बदलेले। सभ बाढ़ पीड़ित लोग मिल के गंगा कलोनी बनवलन। गंगा कलोनी बाढ़ पीड़ितन के दर्दनाक पीड़ा से कराहत परिस्थित के मौन चीख रहे जवन सरकार के उपेक्षित रवइया प फेकरत रहे। नली-गल्ली आ पानी के व्यवस्था नेतवन के घोषणा तक सिमटल रहे। जिंनगी जिए आ बाल-बच्चन के भविष्य खातिर कलोनी के लोग मशीन बन गइल रहन। सुबह कमाई के चक्कर में शहर निकल जास त देर रात लवटस।

जेकरा घरे नोकरी रहे ऊ सुखी रहे बाकिर जेकरा घरे नोकरी ना रहे ओकर जिंनगी भगवान फरोसे रहे। कसहूं थूके सातु सानत रहे। लइकन के पढ़ाई-लिखाई के कसहूं खाना पूर्ति होत रहे। झुनिया पहिले खेतिहर किसान रहे बाकिर अब घर-घर चुल्हा-चउका करत रहे जवना से घर खरचा चलत रहे। मकान के नाम प छेदवाली मार के एगो कोठरी बनवले रही आ सरकारी पैखाना अउर चप्पाकल रहे। गहना वाला में से दू लाख बैंक मे रखले रही जवना के एक हजार महीना सूद आवत रहे। लक्ष्मी सरकारी अस्कूल में पढ़ाई करत रही आ बबुआ अभी अस्कूले जाए जोग ना रहन।

समय के गति निर्वाध रुप से चलत रहे। लक्ष्मी सरकारी बैंक में नोकरी करे लगली बाकिर बबुआ अभी नोकरी के फारम भरत रहन। लक्ष्मी के मामा उनकर बिआह आपना फूफा के लईका से करावत रहन बाकिर लक्ष्मी के कहनाम रहे कि बबुआ के नोकरी लागे तक बिआह ना करब।लक्ष्मी आपन माई आ भाई के बहुत स्नेह करत रही काहेकि ऊ माई के संघर्ष आ सकेती में पेट काट-काट के ऊ लोगन के पलले रही।

सरकारी नोकरी त गुलरी के फूल होला ऊ बबुआ के ना मिलल। बबुआ एगो कंपनी में कमाई करे दिल्ली चल गइले। बढ़िया नोकरी मिलल। बढ़िया कमाई करे लगले। अब झुनिया खुश रही की उनकर तपस्या के फल मिलल। झुलन काका आ झुनिया लक्ष्मी के बिआह खातिर खूब समझावल बाकिर ऊ कहस की माई आकेला पड़ जाई।बबुआ के पहिले बिआह होई। लक्ष्मी झुनिया के अपने साथे रखत रही।

गंवई लोग के जब बड़की शहर के हवा लागेला त आपन पांख फैला के खुला आसमान के ओर रुख करेला। बबुआ के शहर के हवा निके तरे आपन बवंडर में फांस लेलस ।शहरी परी से नयन लड़ल। आरे लड़ल का ईनकर कोपड़े निकाल देलस। बबुआ आपन बिआह सबका से चुपे कर लेलन। झुनिया बोलावे त ढेरे बाझ बा,काम के चलते छुट्टी ना मिले के बहाना करस। फोन के आवाजाही कम भइल त झुनिया के शक होखे लागल बाकिर लक्ष्मी प्राइवेट नोकरी के काम ढेरे होला कह के टार देस।

जब पानी कपार से ऊपर गइल त लक्ष्मी आ झुनिया बबुआ के आफीस में दिल्ली गइल लोग। बबुआ से पहिले आफीस के लोग बतवल कि बबुआ के बिआह आफीस में काम करे वाली से कइले बाड़न। झुनिया के मन गांछी प के चढ़ल भुंईया लोटे लागल। जवन सपनो में ना सोचले रही ऊ सोझा आ गइल। बबुआ आपन फलेट प ले गइलन।

लक्ष्मी झुनिया के खुबे समझवली बाकिर झुनिया सभ उघटा-पुरान कर देली आ बिना खइले-पिअले उनका फलेट से निकल गइली। राह में झुनिया लक्ष्मी प खूब खिसियइली कि एही बबुआ खातिर तूं बिआह ना कइलू आ बबुआ तनिक ना सोचले कि दीदी के बिआह होई कि ना होई। पहिले आपने बिआह कर लेलन। बिआह में हमनीं पुछे के त दूर,बिआह के बात बतावलस तक ना। हम समाज में कइसे मुंह देखाइब। लक्ष्मी माई के खूब समझवली कि हम तोहार बेटा आ बेटी दूनों होई। हम तोहार,तूं हमार सभ कुछ हउ। बबुआ के आंख खुली त जरुर बदली। अभी लईकपन बा। कहीं रहो खुश रहो अउर का चाहीं! झुनिया गांव जा के झुलन काका से लक्ष्मी के जल्दी बिआह ठीक करे के कहली। झुलन काका आनन-फानन में बिआह ठीक बाकिर लक्ष्मी माई के अकेले छोड़ के बिआह करे प राजी ना भइली। गांव के लोग लक्ष्मी के आ झुनिया ई दूनों माई-बेटी के पेयार के दाद देत रहन।

झुनिया अब दुनिया में ना रहली। लक्ष्मी नोकरी से रिटायर हो के गंगा कलोनी में रहेली। टोला-महल्ला के छोटकन बुतुरुअन के पढ़ावे ली। गांव के लोग बहुते आदर करेलन। बबुआ लक्ष्मी के आपन लगे दिल्ली ले जाए के खूब परेयास कइलन बाकिर ई ना गइली। आपन पूरा नोकरी के पईसा गंगा कलोनी के विकास में खपा देली। पेनशन के रोपेया गांव के बुतुरुअन के पढ़ाई-लिखाई में झोंक देली बाकिर आपन माई के कुटिया उझंख ना होखे देली।

❑❑

❍ **जमुआँव, भोजपुर, बिहार**

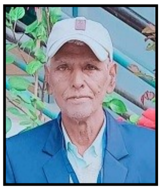

रामप्रसाद साह

जीवन साथी

आवास क्षेत्र में बहुतो क्वार्टर मजदूर कर्मचारी लोग खातिर बनल रहे ।ओही क्वार्टर में हमरो रहे के मौका बहुतो बरिस मिलल रहे। हमरा बगल के क्वार्टर में एगो दिलदार दम्पति भी रहत रहे।पारिवारिक लगाव भेला से हम ऊ लोग के भइया भउजी कहत रही ।लक्ष्मी भउजी हमरा के दुलार से बबुआ जी कहत रहली । हमरा मेहरारू के बबी (बहिन) कहत रहली । एक जगह बइठला पर हँसी मजाक हो जात रहे ।

एक दिन के बात हऽ, हम एगो साथी का सङे बतुआत आवास क्षेत्र में अपना अपना क्वार्टर में आवत रही सन् ।रास्ता में हमर क्वार्टर परत रहे।देखनी सन् जे प्रौढ दम्पति सट के घाम में बतुआत रहेलोग । हम भउजी के चिन्ह गइनी । हमरा मौका मिल गइल मजाक करेके ।हम कहनी भउजी ! आज कवनो गुल खिलेवाला बा का ? परेवा का जोड़ी अइसन गुटरू गुँ हो रहल बा ।भइया उठ के चल गइलन क्वार्टर में , तबले हम भउजी सामने पहुँचि गइनी ।भउजी हमरा के मजाक के लहजा में कहली -- " देखी बबुआ जी! बुढ़ापा में जीवन साथी चाहेला।" जवान भेला पर हमरो के कवनो पतिया जाई, बुढ़उओ के कवनो पतिया जाई । माने बुढ भइला पर हमनी दूनू जनेके केहू ना पतिआई । जब पतिआई त बुढ़िया के बुढ़वा आ बुढ़वा के बुढिया।भउजी से हम हार गइनी आ लोहा मान लेनी ।

तब से भउजी के बात हमनी का जँच गइल " बुढ़ापा के जीवन साथी" अब हमनीयो बुढा गइनी सन् भउजी के बात सोंचत सोंचत । भगवान ना करस बुढ़ापा में जीवन साथी बिछुड़ि जाय आ केहू पतिययबे ना करे ।

❑❑

❍ **कलैया, नेपाल**

"भोजपुरी: संवेदना, संघर्ष अउर समता के भासा"

डॉ.संतोष पटेल

भोजपुरी के नाम आवते आजु ढेर लोगन के मन में पहिल छवि "लोकप्रिय गीतन" के उभरेला ऊ मंच, मेला, सिनेमा अउर डिजिटल प्लेटफॉर्म पर बाजत चटर पटर गीत के, बाकिर ई हमरा समझ से अधूरा सच्चाई ह। भोजपुरी के असली माने, ओकर आत्मा, ओकर सांस्कृतिक गहिराई अउर मानवीय संवेदना के विस्तार एह सतही छवि से कहीं जादे व्यापक बा। भोजपुरी ना त खाली "मौसमी" गीतन के भासा ह, न खाली मनोरंजन के साधन; ई संघर्ष, करुणा, त्याग, समर्पण, श्रम, वियोग अउर मुक्ति के जियत-जागत सांस्कृतिक दस्तावेज ह।

त्याग अउर समर्पण के परंपरा के देखीं त भोजपुरी क्षेत्र के लोकजीवन में ई तत्व रग-रगे म बसल बा। किसान सुखाड़, बाढ़, अकाल से जूझेला, तबो धरती से नाता ना तोड़ेला—ई त्याग ह। मजदूर परदेस जाला, परिवार छोड़ देला—ई समर्पण ह। लोकगीतन में "पिया परदेस गइले" के पीर खाली वियोग ना, बलुक कर्तव्य के स्वीकारोक्ति ह। एह भाव में भोजपुरी समाज के नैतिक रीढ़ लउकेला।

भोजपुरी चेतना के निर्माण में बुद्ध के करुणा के धारा गहिराई से समाइल बा। करुणा, मैत्री, समता अउरी अहिंसा—ई मूल्य भोजपुरी लोकसंस्कार में घुलल-मिलल बाड़े। गाँव के साझा श्रम, दुख-सुख में भागीदारी, जाति-वर्ग से ऊपर उठ के संकट में साथ देवे के परंपरा—ई सब बौद्ध करुणा के लोकानुभव ह। भोजपुरी समाज में "सबके दुख अपना दुख" मानल—ई दार्शनिक भाव लोकजीवन में व्यवहार बन के जीवित बा।

मेहरारू (स्त्री) मुक्ति के सवाल पर नजर डालीं त भिखारी ठाकुर के नाटक भोजपुरी समाज के आत्मालोचन के तगड़ा दस्तावेज हवें। बेटी बेचवा, बिदेसिया, गबरघिंचोर, गंगा स्नान, भा विधवा विलाप भा पिया निसइल नियर कृतियन में मेहरारू के पीर, वियोग, शोषण अउर प्रतिरोध के स्वर उभरेला। ई नाटक खाली मनोरंजन ना रहलें, समाज सुधार के आंदोलन रहलें। भिखारी ठाकुर मेहरारू के वस्तु ना, चेतन अस्तित्व मानलें—ई भोजपुरी आधुनिकता के क्रांतिकारी डहर ह। राहुल सांकृत्यायन जी के नाटक, मेहरारू के दुर्दशा भा जोंक जइसन तत्कालीन समाज में औरतन के हालत आ सामंती समाज द्वारा गरीब मजूरन में शोषण के दास्तान ह।

भोजपुरी के आध्यात्मिक चेतना में कबीर के बानी आजुओ जीवित बा। कबीर के निडर बानी हमेशा से पाखंड-विरोध, जाति-विरोध, भीतरी साधना—भोजपुरी लोकमानस में गूंजेले। "साँच कहे त मारन धावे"—ई अनुभव भोजपुरी जनजीवन में आजुओ प्रासंगिक बा। कबीर के प्रभाव से भोजपुरी में भक्ति अउरी सामाजिक आलोचना साथे-साथे आगू बढ़ल। उनकर यूटोपिया अमरदेसवा आजो एगो समता मूलक समाज के सूत्र दे रहल बा। एह परंपरा के विस्तार रैदास के "बेगमपुरा" के सपना में लउकेला—एगो अइसन समाज जहाँ दुख, टैक्स (कर), भेदभाव ना होखे। ई भोजपुरी समाज के बराबरी पर टिकल दार्शनिक सपना के रूप ह।

श्रमगीत भोजपुरी संस्कृति के सबसे मानवी धरोहर हवें। खेत में रोपनी, कटनी, मड़ाई; ईंट-भट्ठा, नाव खेवल, घर बनावल—हर जगह गीत श्रम के पीर के कम करेले। एह गीतन में श्रम के मान-सम्मान बा, सामूहिकता बा, जीवन के दार्शनिक स्वीकार बा। श्रमगीत बतावेले कि भोजपुरी समाज में कामे पूजा ह, श्रमे अस्मिता ह।

बेटी के वियोग भोजपुरी लोकसंस्कृति के सबसे मर्मस्पर्शी अध्याय ह। "बिदाई गीत" में माई-बाप के करेजा फाटे लागेला। बेटी के बिदाई खाली पारिवारिक घटना ना, सांस्कृतिक करुणा के अद्भुत अभिव्यक्ति ह। एह गीतन में मेहरारू के दशा, परिवार के भावनात्मक बुनावट अउर समाज के संवेदनशीलता, तीनू के दरसन होखेला।

नेपाल के मधेस क्षेत्र के दरद भोजपुरी अनुभव-संसार के हिस्सा ह। सीमा, नागरिकता, पहचान, उपेक्षा—ई सभ सवाल मधेसी समाज झेलेला। भोजपुरी भाषा एह पीर के आवाज देवेले। राजनीतिक हाशियाकरण अउर सांस्कृतिक संघर्ष के अभिव्यक्ति साहित्य अउरी गीत दुनो में देखल जा सकेला।

दुनिया भर के गिरमिटिया इतिहास में भोजपुरी के वैश्विक पीर दरज बा। जब मजदूर अनुबंध (गिरमिट) पर फिजी, मॉरिशस, गुयाना, सूरीनाम, त्रिनिदाद भेजल गइले, त उहे भाषा, गीत, अउर याद साथे ले गइले। ऊ पीर, गुलामी, विस्थापन सभ भोजपुरी अभिव्यक्ति में सुरक्षित बा। आजुओ गिरमिटिया गीतन में "घर वापसी के आस" गूंजेले।

भिखारी ठाकुर के देशज आधुनिकता खास महत्व राखेले। उ परंपरा के भीतर रह के आधुनिक सवाल उठावेले—प्रवासन, मेहरारू के अधिकार, जाति, दारू, गरीबी। ई लोकभाषा में आधुनिक विमर्श के शुरुआत ह। इहे से भोजपुरी आधुनिकता बहरी से आइल ना, बलुक देशज कहावेले।

आधुनिक विचारधारा में भोजपुरी तेजी से पैठ बनावत बिया। शिक्षा, पत्रकारिता, सिनेमा, रंगमंच, डिजिटल लेखन—हर क्षेत्र

में नई पीढ़ी भोजपुरी में समकालीन मुद्दा उठावत बिया— पहचान, भाषा के अधिकार, प्रवासन, स्त्री प्रश्न, पर्यावरण, लोकतंत्र। समकालीन चेतना के स्तर पर भोजपुरी अब प्रतिरोध के भाषा बनत बिया। भाषा के संवैधानिक मान्यता, शिक्षा में अस्थान, प्रशासनिक उपयोग—ई माँग अब जनआंदोलन के रूप लेवत बा।

दक्षिण एशिया में भोजपुरी के ग्राफ तेजी से बढ़ रहल बा। भारत, नेपाल, मॉरिशस, फिजी, सूरीनाम, खाड़ी देश, यूरोप, अमेरिका—हर जगह भोजपुरी भाषी समुदाय मौजूद बा। प्रवासन भोजपुरी के सीमित ना, बलुक वैश्विक बना देले बा। एह विस्तार के मतलब खाली बाजार ना, बलुक सांस्कृतिक पुनर्स्थापन ह। भाषा अब पहचान, राजनीति, अर्थव्यवस्था अउर शिक्षा सभ में भूमिका निभावत बिया।

अंत में, भोजपुरी के खाली 'लोकप्रिय गीतन' ले सीमित मानल ओकर सभ्यता के अपमान होई। एह भाषा में बुद्ध के करुणा बा, कबीर के निडरता बा, रैदास के समता के सपना बा, भिखारी ठाकुर के सामाजिक आधुनिकता बा, श्रम के मान बा, प्रवासी के पीर बा, बेटी के वियोग बा, मधेस के संघर्ष बा। भोजपुरी दरअसल लोकजीवन के जियत-जागत अभिलेख ह—जहाँ बीतल समय, आजु अउरी आवे वाला कल तीनों बात करेले। ई भाषा मनोरंजन से आगू बढ़ के मनुष्यता के व्यापक कहानी रचेले। इहे से भोजपुरी के असली पहचान ओकरा के संवेदना, संघर्ष अउरी समता के भाषा के रूप में स्थापित कइला में बा।

❑❑

❍ द्वारका, नई दिल्ली

भोजपुरी के मान बढ़ाईं, भोजपुरी साहित्य सरिता के सदस्य बनीं
सदस्य बने खातिर रउआ कॉल करीं भा लिखीं :
9999614657
bhojpurissarita@gmail.com
भोजपुरी साहित्य सरिता
मासिक भोजपुरी पत्रिका
गाज़ियाबाद, उ.प्र.

दिनेश पाण्डेय

खुमारी

कहीं भला / के चाहे ?
गइल गंगधार / होके कान्ह प सवार
फिन कहवाँ अलम ले ?
ओढ़ पँचरंग चोला
चल नेक नाम टोला
सब जना आगपाछ कसमस करिहें।
दुरजन दूर-दूर घूरिहें हहरिहें ।

तोर-मोर / घनाघोर ?
तनकी बिलम ले।
मने ना कचोट / कर तुतुही चिलम ले ।
बोल महादेव भोला
खींच ले दु-तीन तोला
कथनी से मध फिन चुई मोरे मितवा।
सरगो से नीक लागी भूँई मोरे मितवा ।

❑❑

❍ पटना, बिहार

तेल के खेल

जयशंकर प्रसाद द्विवेदी

संपादक
भोजपुरी साहित्य सरिता

समय के बदलाव पृथ्वी के गोल होखला के प्रमाणित करे में कवनो कोर कसर ना छोड़ि। एक बेर फेर से लइकइयाँ के बोलल, सुनल नारा ईयाद आ रहल बा। बात सत्तर के दसक के बा। जब गाँव-गाँव में छोट-छोट लइका ईस्कूल से छुटला का बाद भर रसता एगो नारा लगावत देखात रहलें। उ नारा रहे 'खा गइल रासन पी गइल तेल' जवना के सुनला का बाद ओह लइकन के उनुके बाप-मतरी भर हीक पाथतो रहलें। उ समयइयो अइसन रहल कि रोवला पर फेर पहिला से बेसी पथाई मिलत रहल। अकसरहाँ पाथे के लोग अलग-अलग मतलब निकालत भेंटा जाला।कुछ लोग एकरा गोबर पाथे से जोड़ देला,उहें कुछ लोग ईंटा पाथे से। दूनो के आपन बरियार उपयोगिता त बड़ले बा,संगही लमहर महातिमो बा। बाक़िर मतारी-बाप के पथाई के एक सूत्रीय उदेश्य रहत रहल, एगो नीमन आकार देहल। अपना संतान के लेके जवन हर मतारी–बाप के चाहत रहेला, ओह घरी ई एगो अजुमावल अस्त्र रहल। जवना के हर मतारी-बाप अपना जिनगी भर बेफिकिर होके परयोग करत रहलें। पथाई चाहे गोबर के होखे भा ईंटा के एगो सुघर आकार उहों देखाला। सबसे पहिले एकर परयोग कवने काम खातिर भइल रहे, ई एगो शोध के बिषय हो सकत बा। बाक़िर सुघर आकार के लेके कहीं कवनो सक-सुबहा नइखे।सुघरई के परिभाषा अलग-अलग लोगन के अलग-अलग हो सकत बाटे भा होखबो करेला। ओकरा लेके अलग भाव भा सोच होखला के नकारल मोसकिल बा।

ओह घरी लागे वाला नारा में जवने 'तेल' के बात रहल, आजु फेर से ओही तेल के फेर से जनम होत देखात बाटे। एगो अंतर जरूर देखा रहल बा, कि अब नवा कोटेदारन में पेट्रोल पम्पो सामिल हो गइल बा। पहिले कोटेदार के माने 'रासन आ तेल बाँटे वाला' गाँव-गिरांव के एगो खास मनई से रहे। उ त अबो बा। अब बोतल नई जरूर बा बाक़िर ओहमें राखल जाये वाला चिजुइया पुरनकिये बा। तब वाले तेल के खेल में एगो सरकार के बलि चढ़ गइल रहे आ सरकार के मुखिया के सरकारी घर देखे के पड़ल रहे। सरकारी घर मने तिहाड़ वाला, अपने ई मति बुझब कि सांसद के बँगला भा सरकारी अफसर के बँगला। दूनों सरकारिये होला बाक़िर उहाँ रहे वाला लोगन के अलग-अलग तरह के माला भेंटाला। अब ई बाति अउर बा कि तिहाड़ो से अइला का बाद कुछ लोग कर्तब्य पथ वाले बँगला में जाये के पहिल सीढ़ी मानेला। कर्तब्य पथ वाले बँगलो से कुछ लोग तिहाड़ चहुंपत रहेला। एह दूनों जगहा के भईयापा ढेर लोगन के जानल-पहिचानल बा।

अपने इहाँ एह घरी तेल का संगे-संगे गैसो के खेल चल रहल बा। बाक़िर तेल-गैस के खेला वैश्विक बा। मने अपने इहाँ से बेसी बाहरो ई खेला खूब चल रहल बा। बहरा त· 'मारे बरियरा रोव· ना दे' का तरज पर दे दनादन –दे दनादन चल रहल। सगरे खेलवइयन के आपन-आपन सोवारथ बा। बाक़िर बोलत कुछ अउरिये बाड़न सन। अब ई त सभे के पते बा कि सुरुज के बदरी ढेर देर तलक तोप के ना रख पावेले। मने मन के बाति ओठ से टपकिए गइल। केहू कुछों माने भा मति माने बड़का चौधरी के अपने धुन बा आ उहाँ के डूब के ओह धुन में गा रहल बाड़ें। ओह धुन के सुन के ढेर लोग दम्मी साध लेले बा भा रसता बदलि के मुँह पर ढकनी लगा के निकल गइल बा भा निकले के फिराक में बा। कुछ लोग आपन पल्लो झाड़ लेले बा। बाक़िर चौधिरिया हुरपेटे से बाँव नइखे जात। रहि-रहि के डेरवावतो बा,धमकावतो बा। बाक़िर जे निकलल से निकल गइल। अब लोहार के बरद लेके कोंहार के सत्ती होखला के समय बीत चुकल बा। सत्ती होखे वाला काम त अब लोहरे के करे के पड़ी।

बड़का चौधरी के एगो उनही लेखा उनुका दयादो बाड़ें , उहो दू बरिस से लागल बाड़ें, बाक़िर अब तलक उहों के बाबाजी के ठुल्लू तक नइखे भेंटाइल। इहे हाल बड़के चौधरी के बा ,महीना भर से लागल बाड़ें। जेकरा-जेकरा के दूनों चौधरी लोग पोंछियावे में लागल बाड़ें,ओहनियों के कम टिर्राह नइखे सन। ओहनियों के जिद्द पकड़ के बइठल बाड़ें सन आ करत आ क़हत कि 'बांड़ त बांड़े जइहें आ नौ हाँथ के पगहो लेले जइहें'। ओह पगहवा से से उधिरात धुरि में कतना लोग सउना रहल बाड़ें भा गवें-गवें सउनइहें, एहु के समय पर गिनल जाई। दूनों के दूनों चौधरी लोग छनमतरा बाड़ें, भोरे कुछ, दुपहरिया कुछ अउर आ तिजहरिया के ठेकाने नइखे। एही से ढेर लोग एहनी के सुनिके मुस्कियाइयो रहल बा। अब जे मुस्किया रहल बा ओकरा के मुस्कियाये देहीं भा राउर मन होखे त रउवो मुस्किया लेहीं। बहत गंगा में हाथ धोवे के चलन पुरान बा, हाथो धो लेहीं।

हिचकोला दूनों चौधरी लोग कम नइखे खात। गाहे-बगाहे थुरइयो रहल बा लोग बाक़िर दरद मस्त होके पी रहल बा। एक के टोपी दोसरा के पहिरावे के फेरो में पड़ल बाड़ें चौधरी लोग। हाय रे जमाना केहू टोपी पहिरे ला तइयारे नइखे होत। उहो लोग ठेंगा देखा रहल बा जेकरा संगे पहिले खूब गलबहियाँ करत रहलें लोग। मने ले उलटबासी आ दे उलटबासी चल रहल बा। कोसा–कोसियो कम नइखे। अब जवन बा तवन त हइये बा, एही में सभे बा। रहलो मजबूरी बा, चाहियो के भागब त केने। घरे में चुल्हा त जलावहीं के बा। हँस के भा रो के चौधरी लोगन के चकरी के संगे घुमही के पड़ी। हम त घुमिये रहल बानी आ रउवा अब देखीं कि का करे के बा।

❑❑

KBS AIR & GAS

KBS Air & Gas Engineering

SALE & SERVICE

* PSA Nitrogen Gas Plant
* PSA Oxygen Gas Plant
* Air Dryer
* Gas Dryer
* Ammonia Cracker with Purifier Etc.

Head Office : Plot No.-20, UGF-3, Avantika - II, Ghaziabad- 201002 (U.P.) India

E-mail : kbsairgas@gmail.com | Website : www.kbsairgas.com

MOB. : +91-7042608107, 8010108288

सर्वभाषा ट्रस्ट, नई दिल्ली
से प्रकाशित भोजपुरी के कुछ किताब

किताब मंगवावे चाहे छपवावे के खातिर

-: लिखी आ फोन करीं :-

sbtpublication@gmail.com • +91 8178695606

लाइक आ सब्सक्राइब करी आ

भोजपुरी साहित्य : रचना-आलोचना

से जुड़ी

@RachanaAalochana